श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब विशेषांक

 ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ 

गुर गिआन अंजन सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

मासिक

गुरमति ज्ञान

आषाढ़-सावन, संवत् नानकशाही ५४३
जुलाई 2011 वर्ष ४ अंक ११

संपादक — सिमरजीत सिंह, *एम. ए., एम. एस. सी.*

सहायक संपादक — सुरिंदर सिंह निमाणा, *एम. ए. (हिंदी, पंजाबी, अंग्रेजी), बी. एड.*

चंदा

सालाना (देश)	१० रुपये
आजीवन (देश)	१०० रुपये
सालाना (विदेश)	२५० रुपये
प्रति कापी	३ रुपये

चंदा भेजने का पता

सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर-१४३००६

फोन: 0183-2553956-60, फैक्स: 0183-2553919



एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग **303** संपादकीय विभाग **304**
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

विषय-सूची

गुरबाणी विचार

जनम जनम के दूख निवारै सूका मनु साधारै ॥
दरसनु भेटत होत निहाला हरि का नामु बीचारै ॥१॥
मेरा बैदु गुरू गोविंदा ॥
हरि हरि नामु अउखधु मुखि देवै काटै जम की फंधा ॥१॥रहाउ॥
समरथ पुरख पूरन बिधाते आपे करणैहारा ॥
अपुना दासु हरि आपि उबारिआ नानक नाम अधारा ॥२॥६॥३४॥ *(पन्ना ६१८)*

पंचम पातशाह सोरठि राग में अंकित इस पावन शबद में सच्चे गुरु के दर्शन के मनुष्य-मात्र पर निर्मल प्रभाव तथा उसके सत्यवादी रुहानी ज्ञान के प्रकाश द्वारा जिज्ञासु का पूर्ण आत्मिक कल्याण करने की असीम क्षमता को दर्शाते हुए गुरमति शाहमार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करते हैं।

सतिगुरु जी फरमान करते हैं कि हे भाई! सच्चा गुरु जीव अथवा मनुष्य-मात्र के अनेक जन्मों के कष्ट दूर कर देता है। सच्चा गुरु आत्मिक जीवन रूपी हरियाली से विहीन मनुष्य-मात्र के शुष्क मन को हरा-भरा कर देता है, चूंकि वह उसको प्रभु-नाम की औषधि बख्श देता है। सच्चे गुरु के दर्शन ही से दर्शनार्थी निहाल अथवा पूर्णत: प्रसन्नचित्त हो जाता है तथा वह फिर परमात्मा के नाम का चिंतन-मनन करता है।

गुरु साहिब कथन करते हैं कि मेरा वैद्य गुरु है जो परमात्मा का अपना ही रूप है। सच्चा गुरु परमात्मा के नाम की औषधि मनुष्य-मात्र अथवा जिज्ञासु के मुख में स्वयं तरस करके डाल देता है तथा इस प्रकार यम की फांसी अथवा नाशवान संसार में जीव के मृत्यु के भय को दूर कर देता है। जो पूर्ण क्षमता वाला पूरा परमात्मा है उसने वैद्य रूप गुरु को स्वयं ही पैदा अथवा प्रकट किया है। उसी मालिक वैद्य गुरु ने अपने दास को अथवा नाम-अभिलाषी को नाम-औषधि प्रदान कराकर उभार लिया है। अब यही नाम-औषधि मेरा आधार है अर्थात् मैं इसके बिना रह नहीं सकता।





आओ! गुरु-ज्योति की दिव्यता को उजागर करते आठवें पातशाह के नूरानी व्यक्तित्व के समक्ष नत्मस्तक होते हुए सच्ची शांति प्राप्त करें!

दसों ही सिक्ख गुरु साहिबान दिव्यता की साकार प्रतिमायें हैं। दसों ही गुरु साहिबान में अकाल पुरख परमात्मा की ज्योति विद्यमान हुई। संसार में तथा विशेषत: भारत भूखंड में जनसाधारण की स्थिति अति दयनीय थी इसलिए अकाल पुरख परमात्मा की परम पावन ज्योति यहां दो सदियों से अधिक समय तक प्रज्वलित हुई। इस दिव्य ज्योति ने अज्ञानता के अंधकार में भटक रहे जनसाधारण को रूहानी और सत्यवादी ज्ञान बख्शिश किया, जिससे बेचैन तथा अशांत मानवता सच्ची शांति को प्राप्त कर सकी।

सिक्ख गुरु साहिबान के साथ संबंधित गुरु-ज्योति की दिव्यता अपनी पूर्ण निर्मलता के कारण संसार के धार्मिक क्षेत्र में अपना उदाहरण स्वयं ही है। यही कारण है कि इस निर्मलता का लाभ मानवता सदियों से उठाती चली आ रही है। गुरु-ज्योति की दिव्यता का व्यवहारिक संचार मानवता तक सिक्ख गुरु साहिबान के पावन निर्मल वचनों द्वारा होता रहा जो वे अपने-अपने गुरतागद्दी-काल में दर्शन-भेंटवार्ता करने आई संगत के साथ करते रहे। सिक्ख गुरु साहिबान ने जो धुर की बाणी का उच्चारण किया वह नि:संदेह अगंमी बाणी है जो हरेक पाठक अथवा श्रोता के हृदय में विस्मादी आनंद और उनके मन-मस्तिष्क में सत्यवादी ज्ञान प्रकट कर देती है, जो उनके मन के, आत्मा के बंद कपाट खोल देती है। धुर की बाणी का एक-एक पावन वाक्य दुखी तथा रोगी मानवता को सदीवी, अगंमी सुख, आनंद तथा निरोगता बख्शिश करता है। यह पावन दिव्य शबद की शक्ति है जो प्रत्यक्ष बरतती आ रही है। यह बात अलग है कि हमारे जन्मों-जन्मों के संस्कारों के कारण हम पर सांसारिकता भारी पड़ी रहती है। इस स्थिति में हम सिक्ख गुरु साहिबान की दिव्यता के संपर्क में आने से बेखबर तथा कई बार इंकारी तक रहते हैं। दिव्य गुरबाणी का असीम खजाना पंचम पातसाह ने समस्त संसार तथा मानवता को बख्शिश किया। इस खजाने के सदीवी गुरु होने का अगंमी वचन दशमेश पिता ने ज्योति-जोत समाने से पूर्व किया। यदि फिर भी हम इससे बेखबर तथा इससे आध्यात्मिक लाभ लेने से इंकारी रहते हैं तो यह हमारा दुर्भाग्य ही तो है।

दसों गुरु साहिबान नानक ज्योति की ही प्रतिमायें हुए हैं। इसका प्रत्यक्ष प्रगटावा हमें दस गुरु साहिबान का इतिहास पढ़ने तथा इसका मंथन करने से भली-भांति होता है। इनमें आठवें पातशाह श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब का व्यक्तित्व तथा उनका जीवन-वृत्तांत हम सबको और भी अधिक बल से नानक-ज्योति की दिव्यता की अनुभूति कराता है। जो विरोधी ताकतें आठवें पातशाह जी के जीवन-काल तथा विशेषत: गुरगद्दी काल में उनमें नानक-ज्योति का अवलोकन करने से

इंकारी रहीं उन सभी को अंत में मुंह की खानी पड़ी तथा वे सभी अपने आप को सुमार्ग पर भी लाती रहीं, जिनमें मात्र रामराय ही एक अपवाद के रूप में दृश्टव्य होते हैं। आठवें पातशाह के जीवन तथा व्यक्तित्व और उनके कृत्यों से संबंधित इस विशेषांक में विभिन्न लेखकों/लेखिकाओं द्वारा लिखित आलेख विभिन्न ऐतिहासिक स्रोतों के प्रसंग से इसका वृत्तांत व विवरण हमारे समक्ष प्रस्तुत कर रहे हैं। रामराय भले ही जीवन के प्रथम चरण में कोई दूषित अथवा भटका हुआ व्यक्ति न था इसी लिए तो सातवें सतिगुरु जी ने उसको अपनी ओर से गुरु-घर का प्रतिनिधि बनाकर समय के बादशाह औरंगजेब की तसल्ली कराने के लिए भेजा था। लेकिन रामराय की आध्यात्मिक क्षेत्र में अल्प मति जग जाहिर हो ही गई। उसने बादशाह के सांसारिक वैभव को अधिक महत्व देकर गुरु नानक पातशाह के पावन शबद को बदल देने की हिमालय पहाड़ जितनी बड़ी भूल कर दी। इससे समस्त संसार को यह ज्ञात हो गया कि रामराय नानक-ज्योति की प्रतिमा नहीं हो सकता। गुरु को तो पहले ही इसका पूर्व ज्ञान था लेकिन संसार के समक्ष प्रकट करने हेतु यह घटना घटित हुई। रामराय की अज्ञानता की भी यह चरम सीमा ही कही जा सकती है जिसने बाद में भी गुरु-ज्योति की दिव्यता को नमन न किया और स्वयं गुरगद्दी पर बैठने के लिए प्रयासरत ही रहा। यह बात अलग है कि उसने सदैव मुंह की खाई। सिक्ख संगत श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब में गुरु-ज्योति की दिव्यता का अवलोकन करने की क्षमता रखती थी। कारण? वो गुरु-शबद के साथ, पावन बाणी के साथ जुड़ी हुई थी। आठवें पातशाह श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब की बाल-आयु का सिक्ख संगत में रंचक मात्र भी सांसारिक-भाव वाला अहसास न था। जब पंडित लालचंद ने गुरु पातशाह जी की बाल-आयु को समक्ष रखते हुए शंका की और इस शंका में वह सतिगुरु की महिमा को खत्म करने पर उतारू हो गया तो जो बरता वह कोई जादू मात्र न था, वह प्रत्यक्ष नानक-ज्योति बरती थी जिसके समक्ष लालचंद को भी नत्मस्तक होना पड़ा।

आज के बेहद सांसारिकता वाले युग में मनुष्य-मात्र अत्यधिक बेचैन, अशांत तथा परेशान है। उसे यह चेताने की आवश्यकता है कि उसको गुरु-ज्योति की दिव्यता का स्पर्श मात्र चैन, शांति तथा तसल्ली बख्श सकता है। इस विशेषांक के सभी पाठकों से हमारा यही अनुग्रह है कि वे गुरु नानक-ज्योति की दिव्यता की अनुभूति करने की सीमा तक पहुंचने का प्रयास करें जिसमें उनकी सभी बहुप्रकारी उलझनों का समाधान विद्यमान है। हमें सच्ची शांति, सच्चा आनंद केवल गुरु के गुरमति ज्ञान की आगोश में बैठ कर ही हासिल हो सकता है न कि माया एकत्र करने की वर्तमान दौड़-होड़ में से। आओ! गुरु-ज्ञान की निर्मल बहती धारा में अपने तपते मन को शीतलता के रूबरू करते हुए आठवें पातशाह के दैवी व्यक्तित्व को नत्मस्तक होकर सच्चा दैवी लाभ लें। हमें कदापि रामराय वाले कुमार्ग पर नहीं चलना है। 

सलतनते हशतम् पातशाही आठवीं श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब

*-जनाब हुसन-उल-चराग**

हमू नानक असतो हमू अंगद असत
हमू अमरदास अफजलो अमजद असत।२३।
हमू रामदासो हमू अरजुन असत
हमू हरगोबिंद अकरमो अहिसन असत।२४।
हमू हसत हरिराइ करता गुरू
बद आशकारा हमा पुशतो रू।२५।
हमू हरिकिशन आमदा सर-बुलंद
अज़ो हासिल उमीदि हर मुसतमंद।२६।
(जोति बिगास)

श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब वही हैं जो श्री गुरु हरिराय साहिब थे, श्री गुरु हरिराय साहिब वही थे जो श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब थे, श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब की ज्योति वही थी जो श्री गुरु अरजन देव जी की थी और श्री गुरु अरजन देव जी वही थे जो श्री गुरु रामदास जी थे; श्री गुरु रामदास जी की ज्योति वही थी जो श्री गुरु अमरदास जी की थी और श्री गुरु अमरदास जी वही थे जो श्री गुरु अंगद देव जी थे; श्री गुरु अंगद देव जी वही थे जो श्री गुरु नानक देव जी थे और गुरु नानक देव जी :

हक्कश आफरीदा ज़ि नूरि करम
अज़ो आलमे रा फ़्यूज़ि आतम।२। (जोति बिगास)

रब्ब (अकाल पुरख) ने अपनी बख्शिश के नूर से ज्योति को उत्पन्न किया और श्री गुरु नानक देव जी में स्थापित किया, जिससे यह (अजो आलमे) पूरा संसार श्री गुरु नानक देव जी द्वारा उस अकाल पुरख की मिहर को प्राप्त कर रहा है। वही अकाल पुरख की ज्योति सात पातशाहिओं में से होती हुई श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब में पहुंची है:

सलतनते हशमश ताजे मअसूमाने मकबूल
व मतअए मुकबिलाने मौसूल।

आठवीं पातशाही प्रवान किये जा चुके तमाम मासूमों के ताज यानि कि उनके परवरदिगार हैं और गुरमुख हो चुके यानि कि उनके द्वारा कबूले जा चुके लोगों के वे सरदार हैं।

इअजाजे कुदसीअश शुहरा अफाक
व अनवारे वजूदे पाकश हक्क इशराक।

गुरु जी की पावन करामात जमाने भर में मशहूर है और उनके पावन व्यक्तित्व का प्रकाश (नूर) अलाही है।

खासां कुरबानश पाकां सर बरआस तानश।

खासम-खास लोग उन पर कुर्बान होने को हैं और पाक-पवित्र (मनमुख से गुरमुख) हो चुके लोग गुरु जी के द्वार पर सर झुकाए खड़े हैं। मैं यहां एक बात का खुलासा करते हुए आगे बढ़ूंगा कि बार-बार हमारी व्याख्या में आ रहा है, पाक-पवित्र तथा कबूल कर लिये गये आदि। इनसे अभिप्राय क्या है? मैं इसे ऐसा समझता हूं--मन (बुद्धि) कोई ऐसी वस्तु नहीं जिसे आप ड्राईक्लीन कर अथवा धोकर साफ कर सकें। यह मानव संसार दो तरह के लोगों में बंटा पड़ा है। एक वे हैं जो मनमुख हैं और दूसरे कुछ लोग हैं 'गुरमुख लोग'। ये वे लोग हैं जो सदाचारी और अपने धर्म-ग्रंथों के अनुकूल जीवन धारण करने में सफल हो जाते

**१४-सी, रेस कोर्स रोड़, अमृतसर। मो : ९८१५१८८८१०*

हैं। जो गुरबाणी के अनुकूल, गुरबाणी जैसा जीवन धारण कर जाते हैं, वही गुरमुख बन पाते हैं। (Man is a rope streched between the world of animals, ignoramus, arrogant-Manmukh and enlightened Gurmukh people. To reach the other world one has to walk on that rope that hangs over an abyss.) इस तरह जो लोग गुरमुख पदवी को हासिल कर लेते हैं, ये वही लोग हैं जिन्हें हम पाक-पवित्र, सदाचारी, गुरु वाले कह सकते हैं। ये धन-दौलत के न होकर सदाचारी, बलवान तथा बुद्धि-प्रकाश से मालामाल होते हैं।

वासफे औसाफे जजायलश हजारां हजार सुलस व सुदस बर गुर्जी।

'सुलस' का मतलब होता है 'तीन लोक' (तीन पैदाइशें)। 'सुदस' कहते हैं भारतीय मूल के छ: शास्त्रों को, जिनके छ: ही लेखक हैं और ये छ: दिशाओं यानि कि इन छ: शास्त्रों के भिन्न-भिन्न छ: ही फलसफे हैं। इसका भाव यह हुआ कि गुरु जी की परिमाणित सिफत-सलाह (गुणों) की तारीफ करने वाले तीनों लोक व छ: शास्त्रों के हजारों-लाखों लोग हैं।

व रेजा चीने माईदहए अलताफे जलाईलश बेश अज शुमार तिस्सअ व अशरे हक नगीं।

गुरु जी के गुण-प्रताप के भंडारे में से टुकड़े हासिल करने वाले किसी गिनती में नहीं गिने जा सकते।

गुरु के नाम में आया पहला लफ्ज 'हि' हिंदी में 'ह' है :

हाए नामे फरुख फ़रज़ामश हज़ीमत अफ़गाने देवे आलमगीर।

गुरु जी के नाम में आई पावन 'हि' (अफगने देवे आलमगीर) संसार के महा देवों के देव को पस्त कर देने वाली है।

व राय रासती नुमाइश सदर नशीने जाविदानी सरीर।

उनके पावन नाम में आई 'रे' सचाई के रास्ते चलने वाली है और वह 'सदर' मतलब सबसे ऊंचे पद के अटल तख्त पर विराजमान होने वाली है।

काफे ताजीए आं कुशाइंदहए अबवाबे करम

गुरु जी के नाम में आया फारसी-उर्दू का लफ्ज 'काफे' मिहर-ओ-कर्म, बख्शिशों के दरवाजे खोलने वाला है।

व शीने शौकत तज़मीनश सर अफगने देवाने दयम।

उनके नाम में आने वाला लफ्ज 'शीन' सरफिरे दानवों के सिर फोड़ने वाला है।

नूने आखरश नुजहुत अफ़ज़ाए हर दिलो जान

और जो लफ्ज 'नून' गुरु जी के नाम में आया है, प्रत्येक आदमी के दिलो-जान की ताज़गी-हिम्मत बढ़ाने वाला है।

व नदीमे खास निअमु-ल-सुबहां।

और जो अकाल पुरख की नायाब बहुकीमती नेहमतों का नजदीकी नुमाइंदा है।

वाहिगुरू जीओ सत = अकाल पुरख सत्य है।

गुरू हरि किशन आं हमा फज़लो जूद
हक्कश अज हमा खासगां ब-सतूद।९३।

(गंज नामा)

'फ़ज़लो जूद' का मतलब है embodiment of blessings and grace यानि कि श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब मिहर और बख्शिशों के स्वरूप हैं और 'हक्कश अज़ हमा' यानि कि अकाल पुरख (खुदा) का खास और नज़दीकी लोगों यानि कि अपने (खुदा) के फरिश्तों से कहीं ऊपर सिफत-सलाह से निवाजा हुआ है, क्योंकि गुरु-ज्योति अकाल पुरख की है।

मिआनि हक्को ऊ फ़सालु-ल वरक
वजूदश हमा फ़ज़लो अफ़ज़ालि हक्क।९४।

गुरु जी और अकाल पुरख दोनों के बीच अंतर केवल एक बारीक वरक यानि कि कागज या पेड़ के पत्ते के बराबर है और गुरु जी का वजूद (काया) 'फ़ज़लो' (फ़ज़ल) मिहर और अफ़ज़ालि कृपा से सजा हुआ है।

हमा साइले लुतफि हक्क परवरश
जमीनो जमां जुमला फ़रमां-बरश।९५।

गुरु जी की कृपा से ही दोनों जहां (लोक-परलोक) में सफलता मिलती है और उनकी मिहर से ही संसार का कण-कण सुरजीत हो उठता है।

तुफ़ैलश दो आलम खुद कामयाब
अज़ो गशता हर जर्रा खुरशीद ताब।९६।

'तुफ़ैलश' = गुरु जी की मिहर-कृपा से ही दोनों जहां (लोक-परलोक) कायम और कामयाब हैं . . . और उसकी कृपा से ही जमीं का हर जर्रा प्रकाशमान हो सूर्य-सी रोशनी लिये हुए है।

हमा ख़ासगां रा कफ़ि इसमतश
सरा ता समा जुमला फ़रमां-बरश।९७।

जो गुरु जी को मानते हैं वे उनकी 'कफ़ि इसमतश' = हिफाज़त यानि कि गुरु राखनहार है, उनकी रखवाली की नियामत हासिल करते हैं . . . और 'सरा ता समा' यानि कि पाताल से आकाश तक जो भी है वे 'जुमला फ़रमां-बरश' यानि कि उनके हुक्म की तामील करते हैं, उनके आज्ञाकारी अनुयाई हैं।



कविता

पानी से मनमानी

ऊंचाई से कूदते हुये झरने
कल-कल, छम-छम की
ध्वनि बिखेरती निर्मल जलधार
लगता है अच्छा ऐसे ही
हरियाली की गोद में
ठहरा हुआ स्वच्छ पानी,
देखने में देता है आनंद।
क्या ऐसा अनुभव नहीं करते वे
जो छोड़ते रहते बहते या ठहरे पानी में गंदगी?
क्या उन्होंने सिर पर धरकर गागर
दूर-दूर जाकर
ढोया है कभी पीने के लिये पानी?
कुछ लोग करते जा रहे नित्य-निरंतर
साथ पानी के मनमानी
लेकिन लोग कुछ हैं ऐसे भी
जो लगे उतरने नदी, नाले, तालों में
निकालने के लिए गंदगी
जिसे डाल रहे कुछ लोग अपना समझकर अधिकार।



-'भुजंग' राधेश्याम सेन, शिव मंदिर के पीछे मंगली पेट, सिवनी-४८०६६१

"श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ" कृत भाई संतोख सिंघ के अनुसार श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब का जीवन और व्यक्तित्व

*-स. कुलदीप सिंघ**

"श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ" में श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब का जीवन-चरित्र रास १० के उत्तरार्द्ध में अध्याय २८ से ५७ तक दिया गया है। श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब का जन्म श्री गुरु हरिराय साहिब के घर ७ जुलाई, १६५६ को कीरतपुर साहिब में हुआ। श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब का जन्म-स्थान आजकल 'गुरुद्वारा शीश महिल' नाम से प्रसिद्ध है। श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब के बड़े भाई रामराय से पिता श्री गुरु हरिराय साहिब प्रसन्न नहीं थे, क्योंकि उसने दिल्ली में गुरु जी की आज्ञा के विरुद्ध आचरण किया। एक बार बचपन में श्री गुरु हरिराय साहिब ने दोनों सपुत्रों की बाणी में एकाग्रता की परीक्षा ली। 'श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ' की रास ९ के अध्याय ५९ में यह प्रसंग दिया गया है। श्री गुरु हरिराय साहिब द्वारा श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब को गुरुता के योग्य माना गया।

श्री गुरु हरिराय साहिब ने रामराय को संदेश भिजवा दिया कि वो तुर्कों की माया-प्राप्ति में ही प्रसन्न रहे, न हमारा दर्शन करे और न हमें अपना मुख दिखावे। फलत: श्री गुरु हरिराय साहिब ने ज्योति-जोत समाने से दो सप्ताह पूर्व (सन् १६६१ में) श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब को गुरगद्दी प्रदान की। उस समय श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब की आयु ५ वर्ष के लगभग थी।

श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब का श्री गुरु हरिराय साहिब को यह निर्देश था कि वे युद्ध नहीं करेंगे। श्री गुरु हरिराय साहिब ने श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब को यह निर्देश दिया कि वे तुर्क शासक को दर्शन भी नहीं देंगे। श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब के सम्बंध में औरंगजेब ने सावधानी से काम लिया और गुरु जी को जयपुर के राजा जय सिंह के माध्यम से दिल्ली बुलवाया। राजा जय सिंह के दूत के पहुंचने पर गुरु जी ने दिल्ली आने की तैयारी की। उनके मन में भविष्य की यह आशंका थी कि यह कीरतपुर से उनका अंतिम प्रस्थान है, इसलिए साथ में संगत के समूह के चलने में आपत्ति नहीं की :

न्रिप जै सिंघ की प्रीति घनेरी।
बिनती कीनि बखानि बडेरी।
तिसको भाउ न फेरयो जाइ।
अनिक उपाइन प्रेम बढाइ ॥६॥ . . .
छूछा करि कीरति पुरि चाले।
लीनसि संग समाज बिसाले ॥३७॥
नहीं आवनो पुन इस थाने।
इक सतिगुरि ही उर महिं जाने।
अपर कौन गति जानहि गुर की।
जिस लखि चले तुरक दिशि पुरि की ॥३८॥३६॥

गुरु जी के साथ अपार जनसमूह उमड़ पड़ा। काबुल से आई संगत भी गुरु जी की यात्रा में सम्मिलित हुई। कीरतपुर साहिब से चल कर दयालपुर दीवान लगाया गया। दयालपुर में उनकी भेंट बहन रूप कौर से हुई। गुरु जी का प्रथम बड़ा पड़ाव अंबाला के निकट पंजोखरा

**सी-१२७, गुरु तेग बहादर नगर, इलाहाबाद-२११०१६, फोन : ०५३२-२६५७९६९*

में हुआ। वहां से अधिकांश संगत को वापिस भेज दिया गया।

पंजोखरा में विशेष प्रसंग लाल चंद नामक संस्कृत विद्वान का है। गुरु जी की अल्प आयु को देख लाल चंद के मन में स्वाभाविक आशंका हुई कि वह किस प्रकार एक नये धर्म के आध्यात्मिक गुरु हो सकते हैं! यदि उनके नाम की अजमत में सार्थकता है तो उन्हें गीता के श्लोकों से अवगत होना चाहिए। गुरु जी ने एक सामान्य-से सिक्ख छज्जू के द्वारा गीता की व्याख्या कराकर विस्मय में डाल दिया। ज्ञान के अहंकार से मुक्त होकर लाल चंद दिव्य ज्योति के सामने नत्मस्तक हो गया :

जागे पूरब भाग बिसाला।
भयो नंम्रि मन ते तिस काला ॥४३॥
हाथ जोरि करि परयो अगारी।
करी डंडौत प्रेम करि भारी।
बोल्यो महिमा लखी अनूप।
श्री हरिक्रिशन सु क्रिशन सरूप ॥४४॥३८॥

सतिगुरु हरिक्रिशन साहिब ने उसे समझाया कि "तुम बुद्धिमान ब्राह्मण हो, 'सतिनाम' का सिमरन करके प्रभु में ध्यान लगायो।" लाल चंद ने कहा, "मेरा जाति का मद उतर गया है और आपके द्वारा सिक्ख बनना चाहता हूं।" उसने द्विज होने का प्रतीक गले से उतार दिया :

नहीं जाति को मद मुझ रहयो।
एक आसरो तुमरो गहयो ॥४७॥३८॥

बार-बार मांगने पर उसने गुरु जी के चरणों की पाहुल ली। गुरु जी ने लालचंद तथा छज्जू झीवर को सिक्ख धर्म का प्रचारक नियुक्त किया। ३४ वर्ष बाद छज्जू झीवर के पुत्र को श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के द्वारा 'धरम सिंघ' नाम से (वैसाखी, १६९९ में) अमृत-पान का अवसर मिला।

पंजोखरा से श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब कुरुक्षेत्र, करनाल आदि प्रमुख नगरों से होते हुए दिल्ली पहुंचे। गुरु जी ने यमुना किनारे कालका में विश्राम किया। राजा जय सिंह गुरु जी को अपनी रायसैन वाली हवेली में भी ले गया जिसे अब 'गुरुद्वारा बंगला साहिब' के नाम से जाना जाता है। गुरु जी के पहुंचने से पहले पटरानी ने भी गुरु जी की परीक्षा की योजना बनाई। रानी की यह योजना नारी के शंकालु स्वभाव की परंपरा की एक कड़ी प्रतीत होती है:

नहिं दीरघ दरसी मतिमंद।
नहिं चाहति परलोक अनंद।
सतिनाम सिमरनि बिसराए।
प्रभु माया अति प्रबल भुलाए ॥३२॥ . . .
अंम्रित तजि बिख गहिबे दौरहिं।
रोपि बंबूर कलपतरु तोरहिं।
अति अमोल कर डारहिं हीरा।
फटक बिहाझहिं शुभ मत कीरा ॥३४॥४४॥

रानी का यह आचरण ऐसा था जैसे कोई बबूल का कांटेदार वृक्ष बो कर कलपतरु के फलों की कामना करता है। संतों की शुभ सेवा करना उत्तम कार्य है। अभिमान छोड़कर हरि-भजन से दुखों का निवारण होता है। प्रभु की रजा में प्रसन्न रहना जीवन का मनोरथ है:

सेवा संतनि की शुभ करि कै।
प्रभु भाणो मीठो चित धरि कै।
हउमै तजि सिमरनि हरि नामु।
इम करि मिलहि नहीं दुख धाम ॥३३॥४४॥

गुरु जी ने पटरानी को पहचान लिया और रानी की गोद में बैठकर उसे निहाल कर दिया। भाई संतोख सिंघ के शब्दों में गुरु जी का संबोधन निम्न प्रकार है :

श्री मुख कहिं तूं उत्तम तीय।
इहां बैठिबे उचित न थीय।

शुभ आसन शुभ बसत्र बिभूखन।
धरिबे जोग सदीव अदूखण ॥३०॥
महांराज की तूं पटरानी।
कहां कपट करिबे बिधि ठानी।
उठि करि शुभ आसन थित हूजे।
गुर संतनिसों नहिं छल पूजे ॥३१॥४६॥

राजा जय सिंह गुरु जी का सिक्ख बन गया। भाई संतोख सिंघ ने राजा जय सिंह के द्वारा चरणामृत लेने की प्रक्रिया में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा अमृत-पान करने के अंदाज को ग्रहण कर दृश्य को सजीव बना दिया है। राजा ने कुछ छींटे नेत्रों पर मारे और कुछ शीश पर। रानी ने भी पाहुल हर्षपूर्वक ग्रहण की :

पावन पंकज पाद पखारे।
रकत म्रिदुल मंजुल दुतिवारे।
अधिक भाव ते पीवनि कीनसि।
जुगल बिलोचन को करि भीनसि ॥१९॥
बहुरो करयो चढावनि सीस।
भयो सिक्खय जै पुरी अधीस।
पुन पाछे दीनसि पटरानी।
करयो पान बहु उर हरखानी ॥४७॥

पाहुल ग्रहण करने के बाद सिक्ख के गौरव की प्रतीक दसतार को सजाकर राजा जय सिंह को पूर्ण सिक्ख का स्वरूप प्राप्त हुआ :

पुन सतिगुर ने न्रिप दसतार।
इक दिशि ते निज कर मैं धारि।
कीनि बंधावनि करुना ठानि।
कहि बच मधुर करयो सवधान ॥२९॥४७॥

गुरु जी का स्थायी डेरा शहर से बाहर कालका में था। निवास के दिनों में दिल्ली में चेचक का प्रकोप हुआ। करुणामय गुरु जी ने रोगियों की सेवा की तथा स्वयं भी इस रोग से ग्रसित हो गये। विह्वल संगत को गुरु जी ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब में पूर्ण आस्था का उपदेश दिया:

गुरू ग्रंथ साहिब सभि केरा।
जो हमरो चहि दरशन हेरा।
सो शरधा धरि हेरनि करै।
पापनि गन कौ ततछिन हरै ॥२७॥
हम सों बात करनि को चाहहि।
पठहि सुनहि गुर ग्रंथ उमाहहि।
तिस महिं कहयो जु करहि कमावनि।
चार पदारथ लै मन पावन ॥२८॥

परलोक-गमन से पूर्व गुरु साहिब ने तीन बार हाथ से संकेत कर अपने वारिस गुरु का बकाला नगर में होने का संकेत किया :

कीनि मंडलाक्रित त्रै बारी।
धरयो सु ध्यान प्रक्रमा धारी ॥३४॥
लेपन करी भूम जहिं पावन।
निज कर ते तहिं करे टिकावनि।
हाथ जोरि पुन बंदन ठानी।
नेत्र उघारि कही मुख बानी ॥३५॥
बाबा बसहि जि ग्राम बकाले।
बनि गुर संगति सकल समाले। . . . ३६॥५२॥

इस प्रकार अस्वस्थ होने पर भी गुरु जी के द्वारा उत्तराधिकारी के सम्बंध में स्पष्ट निर्देश देने का प्रयास किया। बाबा बुड्ढा जी के वंशज भाई गुरदित्ता जी, दीवान दरगाह मल और भाई दिआल दास की उपस्थिति में प्रभु का ध्यान धारण कर मंद स्वर से तीन बार 'बाबा बकाला' का उच्चारण किया तथा पंथ की बागडोर को सिक्ख धर्म के महान नायक श्री (गुरु) तेग बहादर साहिब के हाथ सौंप कर कौम के उत्थान का मार्ग प्रशस्त किया।

अगले दिन ३० मार्च, १६६४ को गुरु जी का परलोक-गमन हुआ। इसकी सूचना राजा जय सिंह और औरंगजेब को हुई। भाई संतोख सिंघ के अनुसार मुगल शासक को गुरु जी के

पार्थिव शरीर के दर्शन नहीं हुए। दर्शन के प्रयास में सेवक को भी जड़ीभूत होना पड़ा। गुरु जी के निधन से माता क्रिशन कौर (पत्नी श्री गुरु हरिराय साहिब) शोकाकुल हो गईं।

माता नानकी जी को श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब की बात स्मरण हुई। कवि भाई संतोख सिंघ श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब की जीवन-गाथा रास १० में पूर्ण कर विदा होते हैं। श्री गुरु तेग बहादर साहिब माता की प्रार्थना सुनकर मौन हैं :

सुनि श्री तेग बहादर श्रौन।
इक रस थिरे धरे मुख मौन।
आगे कथा कहौं इन केरी।
जिम बिदतहिं पिखि प्रीति घनेरी ॥४०॥
दसम रासि अबि पूरन कीनि।
सतिगुर चरन कमल चित दीनि।
कवि संतोख सिंघ द्वै कर जोरि।
बारंबार निहोरि निहोरि ॥४१॥५६॥



कविता

सादा जीवन - उच्च विचार

*-श्री प्रशांत अग्रवाल**

चाहता हूं मैं, इंसान बन के रहना।
थोड़े में सब्र मुझको, चाहूं सुकूं से जीना।
छोटा-सा घर बहुत है, महलों की न है चाहत।
सूती से काम चलता, मखमल की न है आदत।
काली कमाई करके, मेवे न चाहता हूं।
ईमान की दो रोटी, इज्जत से चहता हूं।
सो जाऊं तख्ते पर मैं, गद्‌दों की न जरूरत।
गर्मी औ ठंड को भी, सहने की मेरी फितरत।
न है फिजूलखर्ची, न ही कोई बुरी लत।
इस मतलबी जहां से, चाहूं नहीं मैं शोहरत।
धरती है मेरी माता, पालक प्रभु पिता है।
इनसे लिया सब कुछ, कुछ भी नहीं दिया है।
कर्त्तव्य मानूं अपना, दीनों को मैं उठाना।
जो सोए हैं जगाकर, गौरव उन्हें दिलाना।
वृद्धि हो सद्‌गुणों में, प्रभु-कृपा का बल हो।
पुरुषार्थ होवे पूरा, सौभाग्य सबल हो।
उठके उठाना सबको, इंसान का धर्म है।
प्रभु की यह सच्ची सेवा, इसमें सफल जन्म है।



**४०, बजरिया मोतीलाल, बरेली (उ. प्र.)-२४३००३, मो : ९४११६०७६७२*

"तवारीख गुरू खालसा" कृत ज्ञानी गिआन सिंघ में श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब का जीवन व शख्सियत

*-डॉ. परमवीर सिंघ**

श्री गुरु हरिराय साहिब के दो सपुत्र थे- रामराय तथा श्री (गुरु) हरिक्रिशन साहिब। रामराय ने दिल्ली दरबार में जाकर गुरबाणी के गलत अर्थ बादशाह औरंगजेब को खुश करने के लिए कर दिए थे जिस कारण श्री गुरु हरिराय साहिब ने उसे मुंह न लगाने का फैसला कर लिया था। श्री गुरु हरिराय साहिब ने ज्योति-जोत समाने से पहले श्री (गुरु) हरिक्रिशन साहिब को गुरिआई सौंप दी थी। गुरिआई की बख्शिश होते समय उनकी आयु लगभग पांच वर्ष थी। छोटी आयु में उनके प्रताप का वर्णन करते हुए ज्ञानी गिआन सिंघ बताते हैं कि गुरु जी चाहे आयु में छोटे ही थे मगर तेज, प्रताप, धैर्य, वचन-सिद्धि एवं आत्मिक शक्ति में पूर्व गुरु साहिबान जैसे ही थे। मनमोहन तथा सत्य वचन सियाने सत्य पुरुषों जैसे बोला करते थे और चेष्टा भी सत्य-पुरुषों जैसी करते रहते थे। देश-देशांतरों के मसंद संगत को लेकर गुरु जी के पास आने तथा नजर-भेंटा दिलाने लगे। संगत की कामना भी यथायोग्य गुरु जी द्वारा पूरी होने लगी क्योंकि कलप वृक्ष तथा चिंतामणि चाहे कद में छोटे ही हों तो भी वांछित फल सेवक को देने के योग्य होते हैं।

श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब को गुरिआई प्राप्त हो जाने के कारण रामराय के मन में ईर्ष्या की दीर्घ अग्नि उत्पन्न हो गई थी। ईर्ष्यावश उसने गुरिआई हथियाने का यत्न करना आरंभ कर दिया था और इस कार्य के लिए धीरमल तथा गुरु-घर के अन्य विरोधियों को अपने साथ मिला लिया था, जिसका वर्णन करते हुए लेखक बताता है कि "औरंगजेब के साथ उस (रामराय) की निकटता बनी देखकर धीरमल आदि सोढी तथा कई मसंद भी उसके सज्जन तथा गुरु जी के विरोधी बन रहे थे। यद्यपि रामराय एवं धीरमल ने देश-देशांतरों में अपने आदमी भेजकर अन्य अनेक मसंद भी अपनी तरफ कर लिए लेकिन गुरु जी के सिक्खों ने उनका कहना जरा भी न माना।" जब सिक्ख संगत तथा उनके द्वारा किए जा रहे यत्नों को सफल न होने दिया तो उसने बादशाह की मदद से गुरिआई हासिल करने का यत्न किया। उसने बादशाह के पास शिकायत की कि बड़ा पुत्र होने के कारण गुरिआई पर उसका हक है। चाहे कि बादशाह इस मसले में नहीं पड़ना चाहता था मगर उसने अहलकारों की उकसाहट में आकर श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब को दिल्ली बुलाने का हुक्म जारी कर दिया और सोच-विचार के उपरांत उसने जयपुर के राजा जय सिंह को यह कार्य सौंप दिया। राजा जय सिंह गुरु-घर का श्रद्धालु था और उसने पूर्ण सत्कार व सम्मान सहित गुरु जी को दिल्ली लाने का यत्न किया। उसने अपने दीवान परसराम को पचास सवार, एक रथ, एक पालकी गुरु जी की सवारी के लिए देकर भेजा। परसराम गुरु जी के दर्शन करके बहुत आनंदित हुआ और उसने राजा जय सिंह द्वारा गुरु जी

सिक्ख विश्वकोश विभाग, पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला-१४७००२, मो: ९८७२०-७४३२२

के लिए भेजी भेटाएं नजर कीं तथा साथ ही दिल्ली जाने की विनती कर दी। गुरु जी दिल्ली जाना मान गए। गुरु जी दिल्ली जाने लगे तो बहुत-से सिक्ख उनके साथ जाना चाहते थे मगर गुरु जी ने उन्हें धैर्य बंधाकर वहीं निवास करने का आदेश कर दिया। गुरु जी का दिल्ली जाना सुनकर राह में पड़ते गांवों के लोग उनके दर्शन करने आते। इसी तरह गुरमति प्रचार करते हुए गुरु जी जब अंबाला के निकट पड़ते गांव पंजोखरा में पहुंचे तो बहुत-से लोग उनके दर्शन करने आए। पंजोखरे की संगत में लाल जी नामक एक पंडित भी शामिल था। वो गुरु जी के आगे कुछ न बोला लेकिन सिक्खों में यह चर्चा छेड़ दी कि यदि श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब सर्वशक्तिमान हैं तो गीता के अर्थ करके बताएं। संगत में चली यह चर्चा गुरु जी तक पहुंच गई। उन्होंने पंडित को बुलाकर कहा कि "तेरी यह इच्छा तो कोई भी पूरी कर सकता है। अर्थ भी वही व्यक्ति कर देगा जिसे तू अपनी मर्जी से यहां ले आएगा।" पंडित गांव में दिखाई देते एक सबसे साधारण तथा अनपढ़ व्यक्ति छज्जू को अपने साथ ले आया। गुरु जी की उस पर बख्शिश हुई तो उसने गीता के अर्थ करके पंडित की आशंका का निवारण कर दिया। गुरु जी की शख्सियत से प्रभावित होकर पंडित उनका सिक्ख बन गया।

राजा जय सिंह ने दिल्ली पहुंचने पर गुरु जी का भरपूर स्वागत किया और अपने बंगले में उनका निवास कराया। परंपरा के अनुसार लेखक बताता है कि राजा जय सिंह की रानी ने गुरु जी की परख करने के लिए उन्हें अपने निवास-स्थान पर बुलाया। रानी की दासियों को बढ़िया कपड़े पहनाए गए और रानी खुद साधारण कपड़ों में उनके पास बैठ गई। गुरु जी वहां गए और जाकर रानी की गोदी में बैठ गए। रानी गुरु जी से बहुत प्रभावित हुई और तन-मन से उनकी सेवा करने लगी। रानी के घर कोई औलाद नहीं थी। समय पाकर उसके घर एक पुत्र पैदा हुआ, जिसे वो हमेशा गुरु जी की सेवा का फल मानती रही। दिल्ली आना सुनकर आसपास के क्षेत्रों की संगत गुरु जी के दर्शन को आने लगी। यहीं बादशाह औरंगजेब का पुत्र शहजादा मुअज्जम शाह भी गुरु-दर्शन के लिए आया था। लेखक बताता है कि औरंगजेब ने अपने शहजादे मुअज्जम शाह, जो बाद में बहादुर शाह कहलाया, को दो-चार मुसाहिब तथा खिलत देकर गुरु साहिब के पास भेजा जो दर्शन करके बहुत खुश हुआ। गुरु जी ने उस खिलत में से एक सेली गुरु नानक पातशाह की चीज जानकर, उठाकर गले में डाल ली, बाकी कुछ न छेड़ा। मुसाहिब यह अंतरयामता देखकर आश्चर्यचकित रह गए क्योंकि यही बात तय कर औरंगजेब ने खिलत देकर भेजा था।"

गुरु जी दिल्ली में थे कि वहां चेचक की बीमारी फैल गई। लोग इसे 'सीतला' कहते थे। गुरु-घर में दवाखाना हमेशा साथ रहा है। श्री गुरु अमरदास जी ने भाई लालू नामक एक वैद्य को गोइंदवाल साहिब में संगत की शारीरिक बीमारियों के इलाज के लिए रखा हुआ था और जब गुरु जी ने उसे गुरमति में परिपक्व देखा तो उसे 'मंजी' सौंपकर सिक्खी प्रचार का कार्य सौंपा था। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के समय जंगों-युद्धों में भी दवाखाने की विशेष भूमिका रही है। श्री गुरु हरिराय साहिब ने दवाखाने को प्रफुल्लित करने में योगदान डाला था। यही दवाखाना दिल्ली में चेचक की बीमारी फैल जाने पर उसकी रोकथाम के काम आया। लोग

दवाखाने से इलाज करवाकर तंदरुस्त होते और गुरु जी का चरणामृत लेकर सिक्खी धारण करके जाते। गुरु जी की महिमा दिनोदिन बढ़ने लगी, जिसकी खबर बादशाह तक जा पहुंची। गुरु-घर के विरोधी इस प्रशंसा से दुखी थे मगर गुरु जी प्रत्येक घटना को अकाल पुरख की रजा मानते थे। गुरमति का मूल सिद्धांत सरबत्त का भला करना है और समूह गुरु साहिबान ने इसी सिद्धांत को दृढ़ कराने के साथ-साथ इसे अमली जामा भी पहनाया है। गुरु साहिब ने दिल्ली के लोगों की घोर संकट के समय में सहायता की थी। लोगों की सेवा करते-करते एक दिन गुरु जी को बुखार चढ़ आया। गुरु जी ने राजा जय सिंह के बंगले से बाहर जाकर यमुना के किनारे निवास कर लिया। राजा जय सिंह गुरु जी को वापिस लाने के लिए उनके दर्शन करने गया मगर गुरु जी ने उसे कह दिया, "यह जगह हमने सदा के लिए पसंद की है।" बहुत-से बादशाही हकीमों ने गुरु जी का दवा-दारू करने का यत्न किया। गुरु जी ने अकाल पुरख की रजा के अनुसार अपना अंतिम समय निकट आया जाकर वचन किया "बाबा बकाले।" लेखक बताता है कि "बाबा बुड्ढा जी के पड़पोते भाई गुरदित्ता जी को गुरिआई का चिन्ह सौंपकर माता को व्याकुल हुई देखकर गुरु जी ने अपनी बाणी तथा आत्मिक शक्ति के बल से ब्रह्म-ज्ञान का उपदेश दृढ़ कराकर उसका शोक-मोह दूर कर दिया।" कुछ समय बाद गुरु जी पांच-भूतक चोला छोड़कर ज्योति-जोत समा गए। संगत में उदासी की भावना छा गई। गुरु-प्रेमियों ने गुरु-शिक्षा के अनुसार सबको अकाल पुरख की रजा में रहने का दिलासा दिया। राजा जय सिंह तथा अन्य गुरु-प्रेमियों ने मिलकर गुरु जी के पार्थिव शरीर का अंतिम संस्कार किया। इस पावन स्थान पर 'गुरुद्वारा बाला साहिब' सुशोभित है। अंतिम संस्कार की रस्मों के पश्चात सिक्ख संगत श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब के उत्तराधिकारी की खोज में 'बकाला' गांव को चली गई।



'गुरमति ज्ञान' पढ़कर परम हर्ष हुआ

विदित हो कि मासिक पत्रिका 'गुरमति ज्ञान' पढ़ कर परम हर्ष हुआ। इस पत्रिका का लेख-विचार मानव-मुक्ति का प्रेरणास्रोत है। महापुरुषों का विचारक्रम मानव-कल्याण के साथ समता, ममता, एकता, भाईचारे का ज्ञान अवगत कराता है। हर माह इंतजार रहता है पत्रिका का, जिसको पढ़कर मन को शांति प्रदान होती है। पत्रिका की आकर्षक छपाई व कलात्मक कवर मन को मोह लेता है।

-मनिहार सिंह निराला, बिलासपुर।

विशेषांक जिल्दबंदी करके रख रहा हूं

'गुरमति ज्ञान' के विशेषांक छाप कर आप संगत की खुशियां ले रहे हो। हरेक गुरु साहिब द्वारा किये परोपकार का विवरण एक जगह पर मिल जाता है। मैं तो दो-दो महीनों के 'गुरमति ज्ञान' जिल्दबंदी करके रख रहा हूं तथा जरूरतमंदों को पढ़ने के लिए दे देता हूं।

-राम सिंघ मिशनरी, जयपुर।

"पंथ प्रकाश" कृत ज्ञानी गिआन सिंघ में श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब का आलौकिक जीवन-वृत्तांत

*-डॉ मनजीत कौर**

"पंथ प्रकाश" में पन्ना १५२ से १५६ तक बहुत ही श्रद्धा एवं प्रेम-भाव से ज्ञानी गिआन सिंघ ने बाला प्रीतम श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब के आलौकिक जीवन की मनोरम झांकी प्रस्तुत की है। गुरु-घर में उम्र का तकाजा नहीं है। इतनी छोटी अवस्था में इतने ऊंचे पद का अधिकारी होना, इतिहास में ऐसे विरले ही उदाहरण मिलते हैं। चिंतकों के चिंतनानुसार गुरु-पद शेरनी के दूध की तरह है जो केवल स्वर्ण पात्र में ही ठहर सकता है। श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब की परोपकारी वृत्ति, दूरदर्शिता, आलौकिकता एवं दिव्यावस्था को देखते हुए ही श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अपनी बाणी में यह पावन पंक्ति अंकित की हैं : *"स्री हरिक्रिशन धिआईऐ जिस डिठै सभि दुख जाइ ॥"* अर्थात् जिनको स्मरण करने से सब तरह के दुख मिट जाते हैं।

जन्म एवं माता-पिता : ज्ञानी जी के काव्यानुसार कीरतपुर साहिब में सप्तम गुरु श्री गुरु हरिराय साहिब के गृह में माता क्रिशन कौर जी की पावन कोख से १७१३ वि. में उदारचित्त श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब प्रकट हुए, यथा :

कीरत पुर गुर सपतम के घर।
क्रिशन कौर माता सैं दिनवत।
सत्रां सै तेरां के माही।
सावण दसमी बदी सराही।
प्रगटे गुरु हरिक्रिशन उदारे।

(पृष्ठ १५२)

बाला प्रीतम का आकर्षक व्यक्तित्व एवं महान कृतित्व : "पंथ प्रकाश" में ज्ञानी जी ने श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब के बाल्यावस्था में ही महान कारनामों का वर्णन करते हुए अपने हृदयोद्गारों को इस प्रकार अभिव्यक्त किया है कि (बाल्यावस्था में ही) गुरगद्दी पर विराजमान होकर अनेक सिक्खों का उद्धार किया, गुरु-घर की जो मर्यादा थी उसे पूर्णतया निभाया। यद्यपि उनकी अवस्था बहुत छोटी थी लेकिन उनकी बुद्धि बुजुर्गों सदृश्य थी। उन्होंने व्यवहारिक एवं परमार्थ के कार्यों को सम्पूर्ण किया, यथा:

जिन थिर गादी सिख बहु तारे।
जेतक बी गुरु घर की रीती। . . .
जदयपि हुते बाल बध सोई।
तदयपि बुधि ब्रिधन सम होई। . . .
अजमत और अरूज अपारा।
अशटम गुर बहु बिध बिसतारा।

(पृष्ठ १५२-१५३)

रामराय का विरोध : आगे ज्ञानी जी ने श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब के बड़े भाई रामराय का जिक्र किया है जिसने गुरगद्दी न मिलने के कारण अपनी फरियाद औरंगजेब से की। फलस्वरूप औरंगजेब ने गुरु साहिब को दिल्ली बुलवा भेजा। ज्ञानी जी लिखते हैं कि रामराय को गुरगद्दी न मिलने पर उसने विवाद खड़ा कर दिया और दिल्ली जाकर अत्यंत दीनता से औरंगजेब से अनुनय-विनय की, यथा :

रामराइ बढ बाद उठाकै।

***२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, मो: ९९२९७-६२५२३*

नौरंगे ढिग दिल्ली जा कै।
गुरिआई लैणे हित अरजी।
दीनी दीन होइ अति गरजी।

श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब का दिल्ली प्रस्थान : गुरु जी दिल्ली जाने के लिए कीरतपुर साहिब से चलकर पंजोखरा पहुंचे। वहीं से सारी संगत को वापिस कीरतपुर साहिब भेज दिया। वहां लाल चंद नाम के पंडित ने पूछा कि यह किसका डेरा है? एक सिक्ख ने जवाब दिया कि श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब का। उसने व्यंग्यात्मक शैली में प्रश्न किया कि "एक 'श्री कृष्ण' हुए हैं जिन्होंने गीता का उच्चारण किया था, ये तो स्वयं को 'हरिक्रिशन' कहलवाते हैं, तो फिर गीता के अर्थ करके दिखायें। अगर उन्होंने गीता के अर्थ न किये तो इनका यह नाम सत्य नहीं माना जा सकता।"

इस हित अशटम गुर हुइ तिआरे।
कीरतपुर ते चल मुदधारे। . . .
फेर थिरे कुरखेत्र पास।
पंडत पेख लाल जी पास। . . .
सुन पंडत मतसर धरबोला।
हरी क्रिशन इहु कहिनो पोला। . . .
हरी क्रिशन इहु नाम सदावै।
गीता के कर अरथ दिखावै।
जेनहि अरथ कर सके वाही।
नाम इतो बड कूरो आही। (पृष्ठ १५३)

छज्जू झीवर से गीता के अर्थ करवाना : ज्ञानी जी लिखते हैं कि जब सिक्खों ने पंडित से उक्त वृत्तांत सुना तो उसे गुरु साहिब के सम्मुख जाकर बयान किया। तब गुरु साहिब ने वचन किया कि "अगर हम गीता के अर्थ करते हैं तो तुम कहोगे हमने इसे सीखा हुआ है, अत: तुम्हारी नजर में जो महामूर्ख है उसे हमारे समक्ष ले आओ, गीता के अर्थ उसी से करवा देंगे।" तब वह पंडित झीवर छज्जू को ले आया, जो मूढ़ था अर्थात् जिसके लिए "काला अक्षर भैंस बराबर" था। गुरु साहिब ने अपनी छड़ी उसके सिर पर रखी, तुरंत उसके ज्ञान के कपाट खुल गए। (गुरु-कृपा) से उसने गीता का पाठ और उसके अर्थ कर दिए। उसके मुंह से अनंत ज्ञान की बातें सुनकर पंडित चकित रह गया। उसने गुरु-चरणों में अपना शीश झुका दिया तथा पूर्ण ब्रह्म-स्वरूप के दीदार श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब में कर धन्य हो गया और पूर्णतया गुरु का सिक्ख हो गया, यथा :

सुन सिखन द्विज ते इह बाणी।
जा सतगुरु के पास बखानी। . . .
ताते महामूढ जन जोहै।
ले आवो हमरे ढिग वैहै। . . .
झीवर छजु नाम महा खर।
दई छटी गुरु तिसके सिर धर।
खुले कपाट तांहिके तबै।
गीता पाठ अरथ कर सबै। . . .
गुरु को पूरन ब्रहम निहारा।
सिक्ख भयो तरयो कहारे। (पृष्ठ १५३-५४)

श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब का दिल्ली में राजा जय सिंह के बंगले में निवास : आगे ज्ञानी जी लिखते हैं कि गुरु जी ने दिल्ली की ओर प्रस्थान किया। दिल्ली पहुंच औरंगजेब के आदेशानुसार गुरु जी को राजा जय सिंह के बंगले में ठहराया गया। गुरु जी का आगमन सुनकर दिल्ली की संगत गुरु जी के दर्शनार्थ आई और अनेक भेंटें लाकर गुरु जी के चरणों में समर्पित कीं, यथा :

सतिगुरु दिली ओर पधारे।
पहुंचे जब दिली ढिग जाए। . . .
डेरा निज बंगुले मैं दयो।
सुन दिल वाली संगत आई।

कर दरशन बहु भेट चढाई। *(पृष्ठ १५४)*

दिल्ली में हैजे का प्रकोप : श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब के दिल्ली पहुंचने पर वहां फैली भयानक बीमारी के प्रकोप में गुरु साहिब ने चरणामृत देकर निरोग किया, उसका वर्णन करते हुए ज्ञानी जी लिखते हैं कि लोग भारी संख्या में मृत्यु का ग्रास बन रहे थे। दिल्ली में भयानक हैजे की बीमारी फैली हुई थी। संगत ने गुरु जी के चरणों में विनती कर सारी व्यथा बयान की। बहुत ज्यादा गिनती में संगत आने लगी। यह देख राजा जय सिंह ने एक सरोवर में गुरु जी के चरण धुलवाए और जिस मरीज ने भी वहां से जल पिया वह हैजे की भयानक बीमारी से बच गया और जीवन-दान पाकर उसने गुरु साहिब की बहुत उपमा की। "पंथ प्रकाश" में इसे इस प्रकार काव्यबद्ध किया गया है :

दिली मैं तब हैजा भारी।
हुतो परिओ जन मरत अपारी।
गुर पै संगत अरज अलाई।
सिस लीला मै गुरू सुनाई। . . .
बचिओ जिन चरनांम्रित पायो।
रौर परा सभ शहिर मझारी।
परयो बहीर खलक का भारी।
जै सिंह चाहबचे भरवाए। . . .
सोऊ बचिओ गुरु जस बड थीओ।

(पृष्ठ १५४-५५)

राजा जय सिंह की रानी को आशीर्वाद देना: ज्ञानी गिआन सिंघ ने राजा जय सिंह की रानी की मनोकामना और बाला प्रीतम का उनकी गोद में जा बैठने का सुंदर शैली में वर्णन किया है। ज्ञानी जी लिखते हैं कि एक दिन राजा जय सिंह की रानी ने पुत्र की कामना की। गुरु जी की सर्वज्ञता को परखने हेतु वो साधारण नारियों में छिप कर बैठ गई। गुरु साहिब सबको छोड़ रानी की गोद में खुशी-खुशी जाकर बैठ गए। रानी ने उनके चरणों को धोकर जल पिया। गुरु साहिब की आशीष से उनके गृह में पुत्र पैदा हुआ :

इक दिन जै सिंह न्रिप की रानी।
पुत्र कामना धार महानी।
गुर को सरबग परखन हेतै।
नारिन मैं छप बही निकेतैं।
सभ को तज गुर तिसकी गोदि।
जाइ थिरे बहु करत बिनोद।
उन चरनाम्रित गुर का पीओ।
गुर बर तै सुत तिसके थीओ।

(पृष्ठ १५५-५६)

औरंगजेब का गुरु-दर्शनार्थ आने पर गुरु जी का दृढ़तापूर्वक दर्शन न देने का वर्णन भी ज्ञानी जी ने भावपूर्ण शैली में दिया है :

सुन महिमा पुन नौरंग शाहै।
चाहिओ दरशन करन सुभा है।
बचन करयो तब सतगुर ऐहै।
सहि को दरशन दैहन लैहैं। *(पृष्ठ १५६)*

अर्थात् जब गुरु जी की महिमा सुनकर औरंगजेब गुरु जी के दर्शन हेतु आया था तो गुरु साहिब ने स्पष्ट शब्दों में इंकार कर दिया कि हमें न तो औरंगजेब के दर्शन करने हैं और न उसे दर्शन देने हैं।

नवम गुरु का ऐलान और बाबा प्रीतम का ज्योति-जोत समाना : दिल्ली में फैली भयानक बीमारी को अपने ऊपर लेकर गुरु जी ने सब रोगियों को रोग-मुक्त कर निरोग कर दिया। अपना अंतिम समय निकट आया जानकर तथा भावी 'गुरु' ग्राम 'बकाला' में निवास करते हैं, अपनी दूरदृष्टि से इस तथ्य को स्पष्ट कर श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब संवत् १७२१ में ज्योति-जोत समा गए। अष्टम पातशाह श्री गुरु

हरिक्रिशन साहिब ने तृणवत यह शरीर त्याग दिया। दिल्ली से बाहर जहां गुरु जी ज्योति-जोत समाए वहां विश्व-विख्यात गुरुद्वारा बाला साहिब सुशोभित है:

इम करि तिस निस गुर निज तन पै।
तप प्रगटाइओ ठंढी कन पै। . . .
बाबा अहे बकाले गाकै। . . .
असटम गुरु गुर पुरैं पधारे।
तन तज तिण सम जगत मझारे।
है समाधि दिली तै बाहर।
बाला साहिब कहीअत जाहर।१०।
दोहरा
स्राप भ्रात का सीस धर भाणा गए बरताइ। . . .
वरननं नाम अशटदसमो निवास।१८।

(पृष्ठ १५६)

इस प्रकार "पंथ प्रकाश" में ज्ञानी गिआन सिंघ ने बाला प्रीतम अष्टम पातशाह श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब का नूरानी जीवन-वृत्तांत भावपूर्ण एवं श्रद्धा-भाव से काव्यबद्ध किया है।

आठ वर्ष की अल्पायु में गुरु साहिब में कितनी दूरदर्शिता, ज्ञान, विवेकशीलता, विनम्रता एवं परोपकारी भावना के दर्शन होते हैं। गुरु साहिब में बाल्यावस्था में ही महान बुजुर्गों जैसे गुण विराजमान थे। गुरबाणी आशयानुसार:

ऐसे गुर कउ बलि बलि जाईऐ
आपि मुकतु मोहि तारै ॥ (पन्ना १३०१)

कविता

आशाएं

हम किसी से कम नहीं,
रोक सके जो राह हमारी,
किसी में इतना दम नहीं।
हम चलें तो दुनिया चले,
देख के हमको फूले-फले।
पूछकर सूर्य भी हम से ढले,
किसी को देख हम न जले।
हम किसी से कम नहीं . . .।
आने वाले कल के हम हैं युवराज,
सिर पर होंगे हमारे सफलता के ताज।
हम चाहते हैं सारी दुनिया पर हो सत्यवादी राज।
रखेंगे हम अपने देश-कौम की लाज।
हम किसी से कम नहीं . . .।
आज दुनिया वाले हंसते हैं हम पर।
जीत कर दिखा देंगे उनको अपने दम पर।
चाहे मेहनत कितनी भी करनी पड़े जम कर।
सांस लेंगे हम अपने लक्ष्य पर पहुंचकर।
हम किसी से कम नहीं . . .।



**रवनीत कौर पुत्री स. दिलबाग सिंघ, कक्षा ग्यारहवीं, खालसा कालेज गर्ल्स सी. से. स्कूल, श्री अमृतसर।*

"दस गुर कथा" कृत कवि कंकण में श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब

*-बीबी रविंदर कौर**

श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब आठवें गुरु हुए हैं जो सबसे छोटी आयु में गुरगद्दी पर विराजमान हुए, इसी लिए आप जी को 'बाला गुरु' और 'बाला प्रीतम' भी कहा जाता है। श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब के जीवन-इतिहास के बारे में कई प्राचीन ग्रंथों ने प्रकाश डाला, जिनमें कवि कंकण कृत "दस गुर कथा" भी शामिल है। यह एक ऐसा ग्रंथ है जिसमें दस गुरु साहिबान के जीवन-इतिहास का चित्रण हुआ है।

"दस गुर कथा" में आठवें गुरु श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब के बारे में कवि ने कुल ग्यारह बंद लिखे हैं। गुरु साहिब के जीवन-इतिहास का चित्रण करते हुए आप जी के बालपन, आप जी के व्यक्तित्व, गुरिआई काल, (गुरु) तेग बहादर साहिब को गुरगद्दी की बख्शिश करने और आपके ज्योति-जोत समाने के समय जन-साधारण ने कितना शोक मनाया, इसके बारे में बताया है।

"दस गुर कथा" के लेखक ने श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब के अवतरण के बारे में बात करते हुए लिखा है कि श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब संसार के आत्मिक कल्याण के लिए जगत में आये :

दोहा: तारन बिसु ब्रहमंड को लीआ गुर अवतार।
नाम सिरी हरि क्रिसन कहु जांते होतु उधार।१३७।

श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब के बचपन के बारे में कवि ने बहुत चाह एवं उमाह के साथ लिखा है। लिखा है कि बचपन में आप जी का रूप कैसा था, आवाज कैसी थी और चाल-ढाल कैसी थी। कवि बयान करता है कि पातशाह अपनी जुबान के साथ अति कोमल तथा मीठे बोल बोलते थे। बचपन में आपको चरणों और हाथों में कड़े पहने होते थे। जब आप जी घुटनों के बल चलते तो इतने सुंदर लगते कि हरेक स्त्री आपकी ओर प्यार भरी निगाहों से देखती। सतिगुरु जी के माता जी खुशी में झूमते हुए लाड़-प्यार करते। आप जी नित्य-प्रतिदिन बच्चों के साथ खेलते और अपने माता जी से हर रोज कहानी/बातें सुनकर ही सोते थे :

सवैया : आनंद रूप अनूप कला तुतली रसना म्रिदु बोलत बानी।
नूपर कंकन कुंकम भाल ते तीन हूं लोक की नारि लुभानी।
घुटरन चाल चलैं स्री क्रिशन जयुं मात जसोमति जयुं मात हितानी।
केलि करैं संग बालन के निस सोवैं जो मात सुनावै कहानी।१३८।

सतिगुरु जी की सुंदरता की बात करते हुए और आगे उपमामयी अलंकारों के द्वारा बयान करते हुए कवि लिखता है कि बचपन में पातशाह का सुंदर चेहरा देखने से दूज का चंद्रमा लगता था, परंतु उनकी ज्योति की झलक पूर्ण चंद्रमा भाव कि पूर्णिमा जैसी प्रकाशमान थी। संसार के लोगों का भवजल से पार उतारा करने के लिए निरंकार ने खुद श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब का रूप धारण किया। पातशाह के दांत अनार के दानों जैसे थे। जब आप हंसते तो फूल झरते थे। अंत में इस बंद के अंतिम चरण में कवि

२३, क्राऊन एन्कलेव, जी. टी. रोड, श्री अमृतसर-१४३००५, मो : ९७८११-६२१११

लिखता है कि जो श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब का ध्यान करता है उसका जन्म-मरण कट जाता है :
देखन मै ससि दूज दिखावत जोति में जानहु पूरन मासी।
संगत भउजल तारन को हरि क्रिशन का रूप लीआ अबिनासी।
दारिम दंतन ते सुनीओ तब फूल झरैं जो उचारत हासी।
ऐसे सरूप का धयान धरैं जोऊ टूटत है तिन की जम फासी।१३९।

कवि के अनुसार खेलने-कूदने के पांच ही वर्ष व्यतीत हुए जब सतिगुरु जी को गुरिआई का टिक्का लगा। मुझ अनाथ से चंद्रमा तथा सूर्य समान प्रकाशमान ज्योति का भेद नहीं पाया जा सकता। धन्य श्री गुरु नानक देव जी ने श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब का रूप धारण करके अपनी ज्योति संसार में जगमगा दी, इसलिए समस्त ब्रह्मांड (चौदह लोक) में खुशी छा गई। सभी ओर से बधाइयां मिलीं :
पांच ही बरख लौ केल करी गुर पाछे ते टीका भया गुरिआई।
मोहि अनाथ ते पार न पायत छोर दीए गुर सास।४५।
चंद और सूर ते जोत सवाई।
धारि के रूप गुरू हरि क्रिसन का नानक अपनी जोत जगाई।
सता अकास औ सात पताल है चौदहूं लोक मैं होई बधाई।१४०।

श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब की प्रतिभा का वर्णन करते हुए कवि कंकण आगे लिखता है कि जैसे मांझी तट पर आये सभी लोगों को, चाहे कोई अच्छा हो या बुरा, पार उतार देता है, इसी प्रकार श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब की शरण में जो भी भला या बुरा व्यक्ति आता है पातशाह सभी का इस भवजल से पार उतारा करते हैं:
खेवट का बपु होइ पुरातन नोतन और बहावत है।
चोर औ यार अनेक खड़े तिन कहु वहु पार लंघावत है।
तैसे ही नौतन धार के, रूप गुरू हरिक्रिशन कहावत है।
जो नर पत्तण आंवत है तिसु भोजल मांहि तरावत है।१४१।

जो व्यक्ति श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब की शरण छोड़कर अन्य स्थानों पर जायेगा वह फिर भवजल को पार करने की जगह भंवर में फंस कर ही डूब जाएगा। इसलिए हे अंजान मन! इस सच्चाई को अच्छी प्रकार से समझ ले कि श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब जैसा अन्य मांझी भाव पार उतारा कराने के सक्षम कोई नहीं है, इसलिए उनके नाम को समझ जो कवि ने अपने हृदय में पिरोया हुआ है :
पत्तण छोड गुरू हरि क्रिशन का जाइ पड़ैगा अवत्तण जौई।
काहे को भैजल पार परे वहु बीच ही मै बुड जाइआ सोई।
जान रे जान अजान मना हरि क्रिसन समान मलाहु न कोई।
तांहि के नाम की जान लहौ सभ 'कंक' सदा उर माल परोई।१४२।

श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब जब प्रभु की गोद में जाने लगे तो मुखी सिक्खों ने सतिगुरु जी के आगे अरदास की कि "जैसे सूर्य के छिपने से अंधेरा हो जाता है उसी प्रकार आपके बिना हमारे जीवन में भी अंधेरा आ जाता है। आपके बाद कौन हमारा 'गुरु' होगा? हमारे लिए यह बड़े दुख वाली घड़ी है।" यह सुनकर पातशाह जी ने संकेत करते हुए कहा कि "बाबा बकाले।" सतिगुरु जी के अंतिम समय का इतिहास वर्णन करते हुए कवि आगे लिखता है कि गुरु साहिब ने तीन वर्ष गुरिआई की और

अंत में निरंकार की ओर से बुलावा आया तो स्वर्ग-लोक में बसे हुए तेतीस करोड़ देवी-देवता सतिगुरु जी के दर्शन के लिए उतावले हो गए। गुरु पातशाह जी ने बाल अवस्था में उनको दर्शन देने के लिए तैयारी कर ली :

तीन ही बरस करी गुरिआई तौ सुर पुरि ते भई आइ खारी।
इंदु पुरी मे अंधेर परा अब है गुर बेग करो असवारी।
'तेतीस करोड़ बसै तिह देव सु बार तिहारी को नैन निहारी।'
दरस दिखावन को तिन के गुरु बाल अवसथ मै कीनी तयारी।१४३।

'बाबा बकाले बसता है' भाव आगे सतिगुरु तेग बहादर साहिब हैं जो उस समय गांव बकाले में प्रभु-भक्ति में लीन हैं। इसके बाद सतिगुरु जी ने देह त्याग दी :

सिक्ख कहैं कर जोर सभै : 'मनु लाइ सुनो अरदास हमारी।
हे गुर! तोहि बिना जग मै जैसे सूर दुराए ते होत अंधारी।
कौन गुरू हमरा जग मै, तुहि बाझ गुरू दुख बोइगो भारी।'
एती सुनी गुर कांनन सों तब सै नन सो इक बात उचारी।
दोहा : बाबा बक्काले बसै देहु गुराई तास।१४४।

इतनी बात उच्चारण कर आठवें गुरु श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब के परलोक गमन करने पर हुए शोक का कवि ने भावावेश में बहुत करुणामयी वर्णन किया है। इस वर्णन के अनुसार कवि बताता है कि सतिगुरु जी के श्वास त्यागने पर सभी सिक्खों को भारी दुख हुआ। चार वर्णों के लोग--क्या, आदमी क्या स्त्रियां रो रही थीं। कौन समझाये तथा किसको समझाये कि न रोवो, क्योंकि जग पर कोई नर-नारी सदैव नहीं रहा। दुकान पर बनिया रो रहा था। कुएं पर पानी भरने वाली रो रही थी। सभी पुरियों के निवासी रो रहे थे। रास्ते पर जाता हरेक पैदल चलने वाला शोक में था। व्यक्ति ही नहीं बल्कि आकाश में उड़ने वाले पक्षी, धरती पर चलने वाले जानवर, घास चरते हुए घोड़े रो रहे थे, दूध पी रहे बछुरे रो रहे थे। कहने का अभिप्राय यह कि ऐसा कोई भी नहीं था जिसने पातशाह जी के परलोक गमन के बारे में सुना हो तथा वह रोया न हो :

सवैया : सासु तिआगत ही गुर के भया सिक्खन को अति ही दुख भारी।
चार ही बरन इकत्त भए मिल रोवत हैं सगले नर नारी।
कौन समोध करै किस को रही नारी न रोवतो कोऊ न या री।
हार में रोवत है बनीया सभ, कूप पै रोवत है पनहारी।१४६।
रोवत है पुरि बासि सभै अर रोवत बार के जावन हारे।
रोवत बाज सीचान सभै अर रोवत हैं खग म्रिग औ सारे।
रोइ तुरंगन घास चरैं अरु दूध पीए बछुरे न बिचारे।
रोवत ते नाहीं कोऊ रहा सुनिआ जिन वाहिगुर है सिधारे।१४७।

उपर्युक्त विस्तार का सार यह कहा जा सकता है कि आठवें सतिगुरु सभी लोगों में सर्वप्रिय थे। मनमोहक मुखड़ा, सुंदर चाल, दुखियों के दुख दूर करने वाले, पापियों को पार उतारने वाले थे। आप जी पांच वर्ष की आयु में गुरगद्दी पर विराजमान हुए और आप जी ने तीन वर्ष गुरिआई की। आप जी के ज्योति-जोत समाने के समय सभी जनसाधारण में शोक की लहर दौड़ गई।



श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब का जीवन-वृत्तांत और तत्संबंधी तथ्यों का शाब्दिक विश्लेषण

*-डॉ. नवरत्न कपूर**

डॉ. हरीराम गुप्ता का मत : इतिहासकार डॉ. हरीराम गुप्ता ने "सिक्ख इतिहास" नामक अपनी पुस्तक में आठवें सिक्ख गुरु श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब का जीवन-वृत्तांत इस प्रकार प्रस्तुत किया है :

श्री गुरु हरिराय साहिब ने अपने छोटे बेटे श्री (गुरु) हरिक्रिशन साहिब को अपना उत्तराधिकारी मनोनीत किया। उनका जन्म ७ जुलाई, सन् १६५६ को हुआ था। इस प्रकार वे पांच वर्ष की अवस्था में गुरु-पदवी पर आसीन हुए। इसी कारण उन्हें 'बाल-संत' पुकारा जाता था। रामराय, जो कि दिल्ली में रहता था, ने गुरु-पदवी के लिए अपना अधिकार जताया। औरंगजेब अपने साम्राज्य की समस्याएं सुलझाने में व्यस्त था और उसके पास (रामराय की शिकायत के प्रति) तुरंत ध्यान देने के लिए समय न था। सन् १६६२ में रामराय बुरी तरह बीमार पड़ गया और अगले वर्ष अपना स्वास्थ्य सुधारने हेतु कशमीर चला गया। तद्नंतर वह १८ जनवरी, सन् १६६४ को दिल्ली वापिस लौट गया।

औरंगजेब राजनीति-कला में सिद्धहस्त था। वह लाभ उठाना चाहता था। वह सिक्ख लहर को कमजोर बनाने के लिए रामराय का दुरुपयोग करने को आतुर था। उसने श्री (गुरु) हरिक्रिशन साहिब को अपनी गुरु-पदवी के अधिकार को स्पष्ट करने के लिए दिल्ली बुलाया और मिर्जा राजा जय सिंह को कहा कि वह अपना व्यक्तिगत आश्वासन देकर गुरु जी को दिल्ली बुला ले।

गुरु साहिब के माता जी रामराय के षड्यंत्र और अपने पुरुष संबंधियों का बुरी तरह नाश करने वाले बादशाह की कठोरता से परिचित तथा चिंतित थे। अत: गुरु साहिब दिल्ली पहुंचे और जयपुर के मिर्जा राजा जय सिंह के निवास-स्थान में ठहरे। यह स्थल नई दिल्ली के लाल किले से छ: किलोमीटर की दूरी पर 'रायसिना' गांव में स्थित था। कुछ ही समय बाद गुरु साहिब को तेज बुखार हो गया और उनका शरीर चेचक के दानों से भर गया, जिसके कारण वे लगभग बेहोश हो गए। छूत की बीमारी के कारण उन्हें आधुनिक 'निजामुद्दीन' रेलवे स्टेशन के समीपस्थ 'भोगल' गांव के एक मकान में भेज दिया गया। गुरु साहिब के सेवाभावी शिष्य उनके उत्तराधिकारी का नाम जानने के लिए आतुर थे, जो कि पुरानी पद्धति के अनुकूल हो। उन्होंने गुरु साहिब से विनती की कि वे अपने उत्तराधिकारी के नाम की घोषणा करें। गुरु साहिब केवल 'बाबा बकाला' ही कह पाए; जिसका अर्थ था कि अगले 'सिक्ख गुरु' 'बकाला' में विराजमान हैं जो रिश्ते में उनके बाबा (दादा) लगते हैं। नियत: (शिष्टता की दृष्टि से) कोई भी बालक अपने माता-पिता अथवा दादा-दादी को सम्मान देने के कारण उन्हें व्यक्तिगत नाम से नहीं पुकारता था। अत: यह स्पष्ट था कि 'बाबा बकाला' शब्द का संकेत श्री (गुरु) तेग बहादर साहिब की ओर था, जो

**९०१, टावर डी-३, सागर दर्शन टावर्स सोसाइटी, पाम बीच रोड, सेक्टर-१८, नेरूल (नवी मुंबई)-४००७०६*

कि उनके पिता के चाचा थे। वे आधुनिक ब्यास नामक रेलवे स्टेशन की पूर्व दिशा में चार किलोमीटर की दूरी पर 'बकाला' नामक गांव में टिके हुए थे।

इतना कहते ही उनकी आंखें मुंद गईं और वे ३० मार्च, सन् १६६४ को, कुल आठ वर्ष की अवस्था में काल-कवलित हो गए। उनका दाह-संस्कार यमुना नदी के किनारे किया गया, जहां पर उनकी स्मृति में 'गुरुद्वारा बाला साहिब' स्थित है। कालांतर में 'रायसिना' में एक बड़ा गुरुद्वारा भी बनवाया गया, जिसे 'गुरुद्वारा बंगला साहिब' पुकारा जाता है।

भाई केसर सिंघ (छिब्बर) द्वारा काव्यगत शाब्दिक विश्लेषण : भाई साहिब के द्वारा रचित "बंसावलीनामा दसां पातशाहीआं का" के अनुसार श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब का जन्म श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि को संवत् १७११ में हुआ था जो कि सन् १६५४ बनता है। (अधिकतर स्रोतों में सन् १६५६/ संवत् १७१३ है।) छः वर्ष की अवस्था में उन्हें गुरु-पदवी प्राप्त हुई। इसके कारण उनके बड़े भाई रामराय ने विवाद खड़ा कर दिया, यथा:

संमत सतारां सै यारां थे गए।
स्री गुरू हरिक्रिशन जी जनम तब थे लए।
सावण दिन नउं जब थे बीते।
चानणे पक्ख सभ नछत्र निस अढाई जाम बीते।१।
खट बरस बालक खेडदे रहे।
संमत सतारां सै सतारां जगु कहे।
टिका गुरिआई दा पिता दिता।
वड्डा सी रामराइ, पर उहु वक्ख रहिआ पसत्तिा।२।
पाछे आपस मो भई बिखाध।
करि सरीकी नित होवै बादो बाद।३।

रामराय अपने गुरु-पद के अधिकार से वंचित होने के कारण फरियाद लेकर औरंगजेब के पास पहुंचा। वहां जाकर औरंगजेब के कथन पर उसने करामातें दिखाईं, जिसके बदले में- बादशाह ने उसे 'कैलासर की दून' (देहरादून, उत्तराखंड) की जागीर इनाम के रूप में दे दी और उसने वहीं पर अपना डेरा जमा लिया। कुछ समय के पश्चात श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब चुपचाप दिल्ली पहुंच गए। औरंगजेब की सभा में पहुंचकर रामराय ने यह घोषणा कर दी कि 'बलि का बकरा' (गुरु साहिब के लिए प्रयुक्त अपमानजनक शब्द) दिल्ली पहुंच गया है। गुरु साहिब की महिमा सुनकर राजा जसवंत सिंह उनके दर्शनार्थ आया और उसने वापिस लौटकर अपनी रानी को कहा कि मैंने सचमुच भगवान के अवतार के दर्शन किए हैं। रानी के अनुरोध पर गुरु साहिब को राजा जसवंत सिंह ने अपने डेरे पर बुला लिया। रानी ने उनके लिए सौ तरह के वस्त्र बनवाए और एक कुर्ता तथा एक पगड़ी उनके चरणों पर अर्पित करने के बाद एक दासी का रूप धारण करते समय मन में यह संकल्प कर लिया कि यदि गुरु साहिब मेरी गोदी में बैठ जाएं तब मुझे पूर्ण विश्वास हो जाएगा कि यह 'बालक' सचमुच भगवान का अवतार है। यद्यपि रानी के साथ की स्त्रियों ने पीतांबर (पीले रंग के वस्त्र) धारण किए हुए थे और जसवंत सिंह की पत्नी ने अपनी एक नौकरानी को 'रानी' पुकारने का अनुरोध उन सजी-धजी महिलाओं से किया हुआ था। मलिन वस्त्रों में विद्यमान रानी को पहचानकर सात वर्षीय श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब उसकी गोद में जा बैठे। ऐसा होने पर रानी के उन्हें भगवान का साक्षात बाल्यावस्था वाला अवतार समझा। तब रानी ने अशरफियों भरी थाली घुमाकर

उनके प्रति मातावत् स्नेह दर्शाया। भाई साहिब के शब्दों में :

पहिरि पुशाका साहिब हेरनि लागे।
किआ हेरन : "राणी बैठी सभ के पाछे मैले बागे।"
तब राणी उठि ठांढी भई।
साहिब सभ बैठाइ तब दई।१९।
वां की गोदी साहिब बैठे जाई।
तब तिन राणी अशरफी की थाली सीसों घुमाई।

यह तथ्य औरंगजेब को भी ज्ञात हुआ और गुरु साहिब को भी दिल्ली में पता चला कि उनके बड़े भाई ने उनके दिल्ली पहुंचने की सूचना उसे अपमानजनक शब्दों में कहकर दी है।

आधी घड़ी तक बादशाह औरंगजेब राजा जसवंत सिंह (जिसे डॉ. हरीराम गुप्ता मिर्जा राजा जय सिंह लिखता है) के दरवाजे पर खड़ा रहा। गुरु साहिब के दीवान दुरघामल, जो कि भाई केसर सिंघ के पूर्वज थे, ने उन्हें बातचीत में व्यस्त रखा और गुरु साहिब ने औरंगजेब के पहुंचने पर घर का दरवाजा बंद करवा दिया। दीवान दुरघामल ने उसे समझाया कि हमारे गुरु साहिब भले ही बालक हैं किन्तु वे दुनियादारी के प्रति उदासीन हैं। आप चलिए, हम स्वयं उनके साथ आपके दरबार में पहुंचेंगे। इसके बावजूद औरंगजेब ने गुरु साहिब के दर्शन की इच्छा प्रकट की। तब दीवान ने उत्तर दिया कि गुरु जी के शरीर पर चेचक के छाले उभर आए हैं, इसलिए वे उठने में असमर्थ हैं। औरंगजेब तब भी न माना। कुछ ही समय पश्चात् गुरु साहिब के परलोक गमन कर जाने का समाचार सुनकर वो दिल्ली की ओर लौट गया। भाई केसर सिंघ ने इस प्रसंग में औरंगजेब का भी विनम्र-भाव दर्शाया है, यथा:

फेर दरगहि मल्ल जाइ कीती अरज :
"जी उन के बदन पर फलूहें बहुतु हैन निकले पीले ज़रद।"
तुरक न मंने, कहे : "मेरे मन चाह है दीदार।
मैं आप चलि आइआ हां फकीर दे दरबार।"३४।

भाई केसर सिंघ के अनुसार गुरु साहिब चेत्र मास के शुक्ल पक्ष की चौदस को संवत् १७२१ में केवल आठ वर्ष की अवस्था में परलोक सिधार गए थे। यह तारीख डॉ. हरीराम गुप्ता के कथन की पुष्टि करती है।



कविता

तलाश

-श्री अभिजीत कुमार,

जिंदगी में चलते-चलते,
आता है कभी ऐसा क्षण।
रोते-बिलखते दरिद्र को देखकर,
हो जाता क्षुब्ध मन।
चाहता हूं कि गोबिंद मेरा,
दे मुझे इतनी शक्ति।
दरिद्र और गरीब को दिला सकूं,
निर्धनता से मुक्ति।
हे गोबिंद! दे दो तुम,
सभी जन को समान हक।
जिससे गोबिंद ही गोबिंद,
हो जाये सारा जग।



**नानकमता साहिब, जिला ऊधम सिंघ नगर (उत्तराखंड)-२६२३११*

"सिक्ख रिलीजन" कृत मैकालिफ में अष्टम पातशाह श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब का जीवन-वृत्तांत

*-डॉ. राजेंद्र सिंघ 'साहिल'**

सिक्ख इतिहास एवं गुरबाणी के गहन अध्येता मैक्स आर्थर मैकालिफ ने अपने ग्रंथ "सिक्ख रिलीजन" के चौथे भाग में बाल-गुरु अष्टम बलबीरा श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब के जीवन-वृत्तांत को प्रस्तुत किया है। मैकालिफ ने बाल गुरु जी के संक्षिप्त जीवन का विवरण तीन अध्यायों में दिया है।

अवतार धारण करना : मैकालिफ के अनुसार अष्टम पातशाह ने सावन के महीने अंधेरे पक्ष की नौवीं तिथि संवत् १७१३ (सन् १६५६ ई) को पिता श्री गुरु हरिराय साहिब एवं माता क्रिशन कौर के घर दूसरे सपुत्र के रूप में अवतार धारण किया।

श्री (गुरु) हरिक्रिशन साहिब बहुत ही छोटी अवस्था से गहन आध्यात्मिक रुचियों वाले थे। पिता श्री गुरु हरिराय साहिब पुत्र की रूहानी सामर्थ्य को बाखूबी पहचानते थे। सातवें पातशाह अक्सर बड़े पुत्र रामराय और छोटे पुत्र श्री (गुरु) हरिक्रिशन साहिब की परीक्षा लेते रहते। इन परीक्षाओं में श्री (गुरु) हरिक्रिशन साहिब सदैव सफल रहते।

गुरगद्दी की प्राप्ति : इन्हीं दिनों औरंगजेब के बुलावे पर सातवें पातशाह के बड़े पुत्र रामराय को गुरमति सिद्धांतों की व्याख्या करने के लिए मुगल दरबार में भेजा। मैकालिफ ने इस घटना का वर्णन सातवें पातशाह के जीवन-वृत्तांत में किया है।

दिल्ली में औरंगजेब को प्रसन्न करने के लिए रामराय ने गुरबाणी की गलत व्याख्या की और कई करामातें दिखाईं। इस पर नाराज होकर सप्तम पातशाह ने रामराय का परित्याग कर दिया। अक्तूबर सन् १६६१ ई में जब सातवें पातशाह श्री गुरु हरिराय साहिब ज्योति-जोत समाने लगे तो छोटे सपुत्र श्री (गुरु) हरिक्रिशन साहिब को सभी प्रकार से योग्य मानते हुए गुरगद्दी सौंप दी।

श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब की आयु तब मात्र पांच वर्ष थी। बाल-अवस्था में 'गुरु' बन जाने के कारण आप 'बाल-गुरु' कहलाये।

दिल्ली में रामराय का षड़यंत्र : दिल्ली में जब रामराय को श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब के 'गुरु' बनने की खबर मिली तो वह ईर्ष्या से जल-भुन गया। मैकालिफ लिखता है कि रामराय औरंगजेब के सामने जा फरियादी हुआ कि देखिए, मेरे पिता ने मेरे छोटे भाई को गुरगद्दी दे दी जबकि आप स्वयं जानते हैं कि मैं कितना योग्य हूं। रामराय ने औरंगजेब को भड़काया कि वह गुरु साहिब के विरुद्ध कार्यवाही करे। यही नहीं, रामराय ने खुद ही अपने 'गुरु' होने की घोषणा भी कर दी, किंतु सिक्ख संगत ने उसके दावों की ओर कोई ध्यान नहीं दिया।

औरंगजेब का बुलावा : मैकालिफ के अनुसार गुरु-घर की ऐसी स्थिति देखकर औरंगजेब के मन में भी एक साजिश पैदा हुई। उसे लगा कि इस हालत का फायदा उठा कर गुरु साहिब को अपने दीन में लाया जा सकता है। उसे पता था कि गुरु जी उसके बुलावे पर दिल्ली नहीं आयेंगे। सो, उसने अंबर (जयपुर) के राजा

**१/३३८, 'स्वप्नलोक', दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा (लुधियाना), पंजाब-१४११०१, मो: ९४१७२-७६२७१*

जय सिंह को जिम्मेदारी सौंपी कि वह गुरु जी को किसी तरह दिल्ली बुलाये।

गुरु जी को जब औरंगजेब का न्यौता मिला तो आपने दिल्ली आने से इंकार कर दिया। राजा जय सिंह गुरु-घर का श्रद्धालु था। गुरु जी राजा जय सिंह की अरदास मानकर इस शर्त पर दिल्ली आने को तैयार हो गये कि वे औरंगजेब से नहीं मिलेंगे और राजा जय सिंह के निवास पर ही ठहरेंगे।

पंजोखरा में अभिमानी पंडित का गर्व-खंडन: मैकालिफ ने इस घटना का बड़े विस्तार से वर्णन किया है। राजा जय सिंह की प्रार्थना स्वीकार कर गुरु जी कीरतपुर साहिब से दिल्ली की ओर चले। मार्ग में गुरु जी ने कुरुक्षेत्र के निकट पंजोखरा नामक स्थान पर विश्राम किया। वहां एक अहंकारी पंडित रहता था, जिसने बाल-गुरु का उपहास करते हुए कहा कि आपका नाम 'हरिक्रिशन' है . . . यदि आप इतने ही योग्य हैं तो गीता के अर्थ करके दिखायें।

गुरु जी ने ब्राह्मण से कहा कि वह जिसे महा-अज्ञानी मानता हो उसे ले आये। वह तुमसे शास्त्रार्थ करेगा। ब्राह्मण एक गंवार व्यक्ति को पकड़ लाया। गुरु जी ने उस गंवार को आशीर्वाद दिया और कहा कि पंडित की शंकायें दूर करो। वाद-विवाद में पंडित की बुरी तरह हार हुई और वह गुरु जी से क्षमा मांग कर चला गया।

गुरु जी का दिल्ली प्रवास : जब गुरु जी दिल्ली पहुंचे तो राजा जय सिंह नंगे पांव परिवार सहित अगवानी करने के लिए पहुंचा। गुरु जी ने राजा जय सिंह के महल में विश्राम किया। जब सिक्ख-संगत को गुरु जी के आगमन की सूचना मिली तो वो बड़ी संख्या में गुरु-दर्शनों को पहुंचने लगी।

औरंगजेब को जब गुरु जी की महिमा का पता चला तो वह बड़ा हैरान हुआ। उसने राजा जय सिंह से कहा कि वह गुरु जी की आत्मिक शक्ति की परीक्षा ले। मैकालिफ ने इस प्रसंग का वर्णन भी अत्यंत श्रद्धा-भाव से किया है। वह लिखता है कि राजा जय सिंह ने पटरानी, रानियों और दासियों सभी को एक जैसे वस्त्र पहना दिये और गुरु जी को उनमें से पटरानी को पहचानने के लिए कहा। गुरु जी ने उस भीड़ में पटरानी को आसानी से पहचान लिया।

गुरु साहिब दिल्ली में रहकर गुरमति-प्रचार करते रहे, परंतु औरंगजेब के लाख मिन्नतें करने पर भी वे उसे दर्शन देने के लिए तैयार नहीं हुए।

ज्योति-जोत समाना : इन्हीं दिनों दिल्ली में चेचक फैल गई। गुरु साहिब चेचक की गिरफ्त में आ गये। इलाज के बावजूद हालत बिगड़ती चली गई। मैकालिफ लिखता है कि चिंताग्रस्त सिक्खों ने गुरु जी से अरदास की, "सच्चे पातशाह! रामराय दिल्ली में रहकर औरंगजेब के साथ साजिशें रच रहा है। वहां धीरमल और अन्य गुरगद्दी पर आंख गड़ाये बैठे हैं। समर्थ गुरु के बिना सिक्खी का पौधा मुरझा जायेगा। हमारी मुक्ति के लिए अपने जैसा योग्य गुरु नियुक्त करने की कृपा करें।"

अष्टम पातशाह ने तीन बार हाथ घुमाकर प्रतीकात्मक रूप से नये गुरु की परिक्रमा की और दो शब्द कहे "बाबा बकाले" यानी उनका उत्तराधिकारी बकाला गांव में है।

इसके पश्चात् गुरु साहिब चेत शुक्ल पक्ष की चौदहवीं, दिन शनिवार को संवत् १७२१ (सन् १६६४ ई) को मात्र आठ वर्ष की आयु में ज्योति-जोत समा गये। 

"History of the Sikhs" कृत कनिंघम में वर्णित श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब का जीवन

*-प्रो सुरिंदर कौर**

कभी-कभी इतिहास ऐसी करवट लेता है जो आम लोगों की समझ से बाहर होती है और आम लोगों की भी यही प्रवृत्ति है कि जो घटना समझ में न आए उसे चमत्कार मान लेते हैं। आध्यात्मिक मंडल का खेल तो अच्छे से अच्छे मनीषियों की समझ में भी आना कठिन है, फिर आम लोगों की क्या बिसात! अत: अक्सर आध्यात्मिक जगत में मानवीय आयु का कोई महत्व नहीं है, यहां तो आत्मा की शुद्ध जिज्ञासा से यात्रा आरंभ होती है। प्रेम और विरह की अग्नि में तपकर, समदृष्टि के सांचे में ढलकर और गुरु की कृपा की मोहर लगने के पश्चात ही यात्रा अपने चरम बिंदु अर्थात् परमात्मा से मिलन की अवस्था तक पहुंचती है। इसके लिए कोई दूसरा मार्ग नहीं है। यही सबसे सहज और सुलभ मार्ग है। यहां भी तपिश का कोई मापदंड नहीं है। कभी-कभी तो एक क्षण की आराधना भी वहां तक पहुंचा देती है तो कभी जन्म-जन्मांतरों की साधना भी अपर्याप्त होती है। प्रेम के रंग में रंगी हुई आत्मा थककर हार नहीं मानती, वह अपने भीतर प्रेम और साधना के संस्कार को संजोकर जन्म लेती रहती है, जब तक कि साधना की परिणति तक न पहुंच जाए। आध्यात्मिक जगत में आयु नहीं साधना महत्वपूर्ण है। सिक्ख गुरु साहिबान ने इस अध्यात्म की दिव्यता को प्रकट किया, यहां आयु कभी महत्वपूर्ण नहीं रही।

सिक्ख गुरु परंपरा में श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब को गुरतागद्दी प्राप्त होना और भारत में इतने अस्थिर हालात में भी तीन वर्षों तक पंथ की बागडोर को सफलता से संभालने को प्राय: लेखक चमत्कार की दृष्टि से ही देखते हैं और वर्णित करते हैं। जिन्हें यह बात गले नहीं उतरती वे मनगढ़त कारण खोजकर श्री गुरु हरिराय साहिब द्वारा विवशता की स्थिति में उन्हें 'गुरु' बनाने की बात करते हैं। पता नहीं क्यों, ऐसे लेखकगण जब गुरु नानक साहिब की रुहानियत और आध्यात्मिकता का मुक्त कंठ से प्रशस्ति-गान करते हैं तब श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब के प्रसंग में आध्यात्मिकता की अवहेलना कर केवल सांसारिक आयु पर ही अटक जाते हैं। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि यहां *"जोति ओहा जुगति साइ सहि काइआ फेरि पलटीऐ"* के महावाक के अनुसार वही ज्योति विद्यमान है। जहां तक आयु का प्रश्न है तो श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब इतिहास में पहले ऐसे व्यक्ति नहीं हैं जिन्होंने छोटी आयु में महान दायित्व का निर्वाह किया हो। गुरबाणी में भक्त ध्रुव का उल्लेख बड़े आदर से किया गया है। भक्त ध्रुव की आयु मात्र पांच वर्ष की थी जब उन्होंने प्रभु-प्राप्ति के लिए कठिन तप आरंभ किया था। सिक्ख धर्म के सृजक श्री गुरु नानक देव जी का उदाहरण भी तो उल्लेखनीय है जो कि बहुत छोटी आयु में ही आध्यात्मिक रहस्यों के भेद खोलते रहे थे। पांधे और मौलवी को अक्षरों का गूढ़ ज्ञान सिखाया, तब भी उनकी आयु बहुत छोटी ही थी और पंडित हरदियाल से जनेऊ संबंधी चर्चा के समय भी तो उनकी आयु केवल

R No. 2, Banta Singh Chawl, Opp. Manish Park, Jija Mata Marg, Pump House, Andheri (E), Mumbai-400093, Mob. 8097310773

सात वर्ष की ही थी। इस प्रसंग पर तो उन्होंने इतिहास प्रसिद्ध बाणी का भी उच्चारण किया था जो "आसा की वार" में श्लोकों के रूप में दर्ज है। अत: श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब की कम आयु से अचंभित होने के स्थान पर उनके द्वारा निभाए दायित्व व सेवाओं के बारे में अधिक चिंतन करना लाभकारी हो सकता है। अत: इसी दायित्व तथा इन्हीं सेवाओं को समझने का प्रयास यहां कनिंघम द्वारा लिखित "History of the Sikhs" के आधार पर किया जा रहा है।

सभी गुरु साहिबान में से कनिंघम ने सबसे कम श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब पर ही लिखा है। वैसे भी उन्होंने गुरु साहिबान के व्यक्तिगत जीवन पर कम तथा उनके विकासवादी योगदान का अंकलन अधिक किया है, इसलिए उनकी दृष्टि में श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब को संगठनात्मक रूप से कम समय मिला। उन्होंने गुरमति सिद्धांतों का प्रचार किया और सेवा करते हुए प्राणों की आहुती दे दी। कनिंघम द्वारा लिखित सिक्ख इतिहास आध्यात्मिक दृष्टिकोण से नहीं लिखा गया इसलिए कोई आश्चर्य की बात नहीं कि उन्होंने श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब पर कम ध्यान दिया।

श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब का जीवन : गुरु साहिब का जन्म जुलाई १६५६ में श्री गुरु हरिराय साहिब के घर कीरतपुर साहिब में हुआ। वे गुरु साहिब के छोटे साहिबजादे थे। जिस समय उनका जन्म हुआ उस समय पंजाब की दशा बहुत खराब थी। कई सालों से वर्षा के कारण बड़ा भारी अकाल पड़ा हुआ था। आम लोग दाने-दाने को तरस रहे थे। अनाज और खाद्य सामग्री की भारी किल्लत हो गई थी। श्री गुरु हरिराय साहिब ऐसे विकट समय में पंजाब के गांवों में घूम-घूम कर पीड़ितों की सहायता कर रहे थे, रसद बांट रहे थे तथा पंजाब के सभी गुरुधामों में लंगर खुलवा दिए गए थे। दूसरे प्रदेशों से आने वाले सिक्ख उस समय भेंट में रसद ही लेकर आ रहे थे, जिससे पंजाब में अनाज की भारी कमी के सम्मुख कुछ राहत मिल सके। संगत की इसी भेंट से गुरु साहिब भूखों के पेट तक अन्न पहुंचाने की सेवा का सूत्रपात कर रहे थे। ऐसे ही भीषण समय में उनके घर दूसरे पुत्र का जन्म हुआ। उस बालक ने आंखें खोलते ही संसार में त्राहि-त्राहि देखी और साथ ही अपने घर से बाहर तक सिक्खों को अकाल पुरख वाहिगुरु की छत्रछाया में अपने आप को भुलाकर लोगों की सेवा करते देखा। यह कहना गलत नहीं होगा कि श्री (गुरु) हरिक्रिशन साहिब ने सेवा का गुरु-मंत्र जन्म-घुट्टी में ही पी लिया था जो हमें बाद में उनके जीवन में प्रखर रूप से दिखाई देता है।

सन् १५५९ में औरंगजेब दिल्ली के तख्त पर आसीन हुआ। उसके तुरंत बाद ही रामराय और उसकी भेंट हुई और बाद में गुरबाणी के निरादर की दुखद घटना सामने आई तथा रामराय हमेशा के लिए गुरु-घर से अलग हो गया। अपने अंत समय को निकट जानकर और हर प्रकार से उपयुक्त पाकर श्री गुरु हरिराय साहिब ने अपने छोटे साहिबजादे श्री (गुरु) हरिक्रिशन साहिब को सिक्खों के आठवें गुरु के रूप में स्थापित किया और सन् १६६१ में आप कीरतपुर साहिब में ही ज्योति-जोत समा गए। गुरतागद्दी मिलते समय श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब की सांसारिक आयु पांच वर्ष की थी। सिक्ख पंथ में सबसे छोटी आयु में गुरतागद्दी उन्हें ही प्राप्त हुई थी।

संगत के लिए यह धैर्य (निष्ठा) की परख का समय था। वैसे इससे पहले ऐसा कभी नहीं हुआ था कि संगत ने गुरता संबंधी लिए गए गुरु साहिबान के किसी भी निर्णय

पर प्रतिक्रिया की हो।

समय तेजी से बदल रहा था। सिक्ख विरोधी ताकतें अनेक प्रकार से पंथ में फूट डालकर या अविश्वास की हल्की लकीरें खड़ी कर संगत को फिर से कर्मकांडों के पुराने दुष्चक्रों में खींच लाने का प्रयास कर रही थीं। ऐसे ही लोगों ने गुरु साहिब की आयु को लेकर द्वेष फैलाना आरंभ किया। संगत को यह विश्वास दिलाने का प्रयास किया कि पांच वर्ष के बालक को अपने आप की समझ नहीं होती, तब वह नेतृत्व की जटिलताओं को कैसे समझ पाएगा? गुरु-घर के विरोधी यह बात फैला रहे थे कि सिक्ख कौम के पास अब आध्यात्मिक अगुवाई के लिए कोई नहीं बचा है। यह श्री गुरु हरिराय साहिब पर लोगों के दबाव के कारण विवशता थी कि उन्होंने इतने छोटे 'बच्चे' को 'गुरु' बना दिया इत्यादि। साथ ही रामराय के पक्ष में माहौल सुधारने का प्रयास किया। वे यह बात नहीं समझ सके कि आग में तपकर ही सोना कुंदन बनता है। संगत नाम-बाणी के अभ्यास और सेवा द्वारा अडोल अवस्था तक पहुंच चुकी थी, जहां भौतिक सुख-दुख और मान्यताओं का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। संगत ने पूरी निष्ठा से श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब को अपना गुरु स्वीकार किया। इसका एक प्रमाण यह है कि संगत उन्हें प्रेम से 'बाला प्रीतम' कहती थी। इस प्रकार से विरोधियों के मनसूबों को संगत ने नाकाम कर दिया।

गुरु-घर द्वारा आरंभ की गई मसंद-प्रथा में भी अब धीरे-धीरे गिरावट आने लगी। कुछेक मसंद गुरु साहिब को भेजी जाने वाली दसवंध की माया के साथ भी गड़बड़ करने लगे थे। जाहिर है कि ऐसे लोगों के मन में सच्ची निष्ठा नहीं हो सकती। वे केवल सत्ता के बल पर अपने पद संभालने की जोड़-तोड़ में लगे रहते हैं। ऐसे ही लोगों ने रामराय को भड़काने का प्रयास किया कि "अभी श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब बाल हैं, वे इस पद को नहीं संभाल सकेंगे। वास्तव में गुरगद्दी पर आपका ही अधिकार है। वो तो आपके पिता जी ने गुस्से में आकर आपको गुरगद्दी नहीं दी, वरना आपके अतिरिक्त ऐसा कौन है जो इस जिम्मेदारी को संभाल सके? सम्राट औरंगजेब से भी आपके अच्छे सम्बंध हैं। अगर आप इस पदवी को संभाल लेते हैं तब तो सिक्ख धर्म के प्रति चला आ रहा मुगल दरबार का विरोध भी समाप्त हो जाएगा।" रामराय इस चाल में फंस गया और उसने औरंगजेब से यह गुहार लगाई कि उनके साथ अन्याय हुआ है, अत: इस मामले में दखल देकर उन्हें न्याय दिलवाएं। औरंगजेब तो वैसे भी इस फूट का फायदा उठा ही रहा था और अब उसे अधिकारिक रूप से अगर कोई बीच में बुलाए तो भला ऐसा मौका वह कैसे छोड़ सकता था! उसने १६६४ में रामराय और श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब को दिल्ली आने के लिए बुलावा भेजा। वैसे गुरु साहिब ने इस संदेश को विशेष महत्व नहीं दिया, परंतु मिरजा राजा जय सिंह के आग्रह पर उन्होंने दिल्ली आना स्वीकार कर लिया। यहां राजा जय सिंह की विनती पर गुरु साहिब उनके महल में ठहरे जिसे 'बंगला' कहा जाता था। इस स्थान पर आज सुंदर 'गुरुद्वारा बंगला साहिब' सुशोभित है।

सतिगुरु जी दिल्ली जाते हुए उत्तर भारत में कई प्रमुख स्थानों से गुजरे जिसमें हिंदुओं के कई तीर्थ-स्थल भी थे। कुरुक्षेत्र से गुजरते हुए उन्हें एक ब्राह्मण की चुनौती का सामना करना पड़ा। सिक्ख इतिहास के अनुसार कीरतपुर साहिब में भी कई बार जाति-अभिमानी ब्राह्मणों से उनका पाला पड़ चुका था। यहां भी कुछ इसी प्रकार हुआ। पंडित लाल चंद नामक एक

ब्राह्मण गुरु साहिब से व्यक्गित रूप से द्वेष-भावना रखता था। गुरु साहिब के प्रति संगत की समर्पित भावना देखकर वह जलभुन गया। जब उसने यह सुना कि गुरु साहिब आजकल कुरुक्षेत्र के इलाके में हैं तो उसने कहना शुरू कर दिया कि "कृष्ण नाम रख लेने से कोई ज्ञानवान नहीं हो जाता। श्री कृष्ण जी ने महाभारत में 'गीता' का उच्चारण किया था। यदि वे अपने आपको 'हरिक्रिशन' कहलाते हैं तो गीता के अर्थ ही करके बतायें।" सिक्खों को यह बात बुरी लगी। वे उस पंडित को गुरु साहिब के समक्ष ले आए, पर उसने अपनी वही बात को वहां गुरु साहिब के सम्मुख भी दोहराया। गुरु साहिब जानते थे कि यह मूर्ख है, केवल पुस्तकी ज्ञान का कूपमंडूक है, जिसके लिए श्री गुरु नानक देव जी ने कहा है :

पड़ि पड़ि गडी लदीअहि पड़ि पड़ि भरीअहि साथ ॥
पड़ि पड़ि बेड़ी पाईऐ पड़ि पड़ि गडीअहि खात ॥
पड़ीअहि जेते बरस बरस पीड़अहि जेते मास ॥
पड़ीऐ जेती आरजा पड़ीअहि जेते सास ॥
नानक लेखै इक गल होरु हउमै झखणा झाख ॥
(पन्ना ४६७)

श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब ने उसे कोरे अक्षरी ज्ञान की असारता समझाने का प्रयास किया, परंतु वह अपनी बात पर अड़ा रहा। तब गुरु साहिब ने कहा, "भाई! गीता का अर्थ करना कोई बड़ी बात नहीं है, परंतु यदि मैंने ऐसा कर भी दिया तब भी तुम हम पर शंका ही करोगे। ऐसा करो, किसी ऐसे व्यक्ति को ले आओ जो तुम्हें लगता हो कि अज्ञानी है। हम प्रभु-कृपा द्वारा उससे अर्थ करवा देते हैं।" पंडित लाल चंद छज्जू नाम के एक बहुत ही साधारण व्यक्ति को ले आया जो उसको सुधबुध विहीन दिखाई दिया था। गुरु साहिब की कृपा-दृष्टि द्वारा उसने गीता के बहुत सुंदर अर्थ कर दिए, जिससे वह पंडित लज्जित होकर लौट गया और गुरु साहिब की ख्याति और बढ़ गई। आम लोगों की बात तो ठीक है, परंतु कई विद्वान लेखक भी इस घटना को एक चमत्कार दिखाने का प्रयास करते हैं, जबकि गुरमति विचारधारा में किसी भी चमत्कार को कोई स्थान नहीं दिया जाता। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने भी कहा है:

नाटक चेटक कीए कुकाजा ॥
प्रभ लोगन कह आवत लाजा ॥१४॥५॥
(बचित्र नाटक)

वैसे रूहानी जगत की हर बात अपने आप में एक चमत्कार ही है। यह मानवीय क्षमताओं की सीमा का उल्लंघन नहीं करती। सतिगुरु के ज्ञान और सामर्थ्य को समझना आम इंसान के वश की बात नहीं है, जो अनुभव करता है वही जानता है। गुरबाणी में ऐसे प्रमाण भरे पड़े हैं जो यह दर्शाते हैं कि सतिगुरु की कृपा द्वारा अज्ञानी को भी क्षण भर में ज्ञान प्राप्त हो जाता है। गुरु सर्वसमर्थ है :

--सतिगुरु पुरखु सुजाणु है वडे अजाण मुगध निसतारे। (वार २६:१९)
--सभ ते वड समरथ गुरदेव ॥
सभि सुख पाई तिस की सेव ॥ (पन्ना ११५२)
--पूरा सतिगुरु जे मिलै पाईऐ सबदु निधानु ॥
करि किरपा प्रभ आपणी जपीऐ अंम्रित नामु ॥
जनम मरण दुखु काटीऐ लागै सहजि धिआनु ॥
(पन्ना ४६)
--गुर प्रसादि ऊरध कमल बिगास ॥
अंधकार महि भइआ प्रगास ॥ (पन्ना ८६४)

जैसे गुरु-कृपा की एक दृष्टि छज्जू की दृष्टि से मिली और उसे जन्म-जन्मांतरों की निधि प्राप्त हो गई, ठीक वैसे ही जैसे कलगीधर पिता की एक दृष्टि जब माधोदास वैरागी से मिली और उसकी कायाकल्प हो गई। इतिहास गवाह है कि इस दृष्टि ने एक अहिंसात्मक

वैरागी को लासानी योद्धा और बेजोड़ शहीद बना दिया। यही दृष्टि यहां भी काम कर गई।

दिल्ली में गुरु साहिब काफी दिन ठहरे। सिक्ख इतिहास यह कहता है कि उन्होंने औरंगजेब से मिलने से इंकार कर दिया था। यह बात भी सच है कि औरंगजेब ने अपना शाही फरमान वापिस ले लिया था और गुरु साहिब पर लगाए सारे आरोपों को निराधार बताया। गुरतागद्दी पर उनके अधिकार को भी पंथ का अंदरूनी मसला कहकर छोड़ दिया। कनिंघम ने लिखा है कि औरंगजेब ने गुरतागद्दी पर श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब के अधिकार को सही ठहराया, सिक्खों ने इसे पहले ही स्वीकार कर लिया था। (Aurangzeb may have been willing to allow the Sikhs to choose their own Guru, he declared the right of Harkishan to be indisputable and he was according recognized as head of the Sikhs --*History of the Sikhs, Cunningham, page 56*).

गुरु साहिब के दिल्ली जाने से सिक्खों और मुगलों के बीच की कई गलतफहमियां दूर हो गईं और लंबे समय तक शांति बनी रही।

उस समय दिल्ली में चेचक की महामारी फैली हुई थी। लोग दवा और इलाज के अभाव में दिन-प्रतिदिन मर रहे थे। अपने आप को देश का बादशाह कहलाने वाला देशवासियों की मदद छोड़कर केवल अपने मजहब को दूसरों पर थोपने के नित्य नए मनसूबे बना रहा था। ऐसे में गुरु-घर के अतिरिक्त कहीं और आशा की कोई किरण दिखाई नहीं देती थी। गुरु साहिब उन पीड़ितों की मदद के लिए उठ खड़े हुए। अपने पिता की भांति उन्होंने तन, मन, धन से सेवा की। सिक्खों ने भी उन्हीं का अनुसरण किया। गुरु-घर द्वारा जगह-जगह लंगर चलाए गए, रोगियों की चिकित्सा के लिए शिविर लगाए गए। गुरु साहिब की आयु केवल आठ साल की थी फिर भी वे स्वयं दिल्ली की गलियों में घूम-घूम कर सेवा का संचालन कर रहे थे। चेचक की बीमारी छूत की बीमारी है जो बच्चों को बड़ी जल्दी ही अपनी चपेट में ले लेती है। कई दिनों तक इस प्रकार सेवा करने के कारण गुरु साहिब भी चेचक से संक्रमित हो गए। अपना अंत समय निकट जानकर वे गुरतागद्दी के लिए 'बाबा बकाला' के दो शब्दों का संकेत देकर ज्योति-जोत समा गए। यह घटना सन् १६६४ की है। कंनिघम ने भी इसी तिथि की पुष्टि की है। जिस स्थान पर गुरु साहिब का अंतिम संस्कार हुआ था वहां अब 'गुरुद्वारा बाला साहिब' सुशोभित है।

बेशक श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब सबसे छोटी आयु में गुरु बने और सबसे कम समय तक, केवल तीन वर्ष तक गुरतागद्दी पर विराजमान रहे फिर भी सिक्ख पंथ के लिए उनका प्रदेय कम नहीं है। उन्होंने बड़ी ही सूझ-बूझ से संवेदनशील समय में पंथ का संचालन किया। औरंगजेब से मुलाकात के लिए इंकार कर आपने बेखौफ होने का परिचय दिया और अंत में दीन-दुखियों की सेवा के लिए अपने प्राणों की आहुति तक दे दी। यही कारण है कि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने कहा है :

स्री हरिक्रिशन धिआईऐ जिस डिठे सभि दुख जाइ ॥ *(चंडी दी वार)*



"सिक्ख इतिहास" कृत प्रिं तेजा सिंघ-डॉ गंडा सिंघ में श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब

*-बीबी रजवंत कौर**

श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब का जन्म जुलाई की सात तारीख, १६५६ ई को कीरतपुर साहिब में हुआ। आपके पिता सातवें पातशाह श्री गुरु हरिराय साहिब थे। श्री गुरु हरिराय साहिब के दो सपुत्र थे। बड़े सपुत्र का नाम रामराय और छोटे श्री (गुरु) हरिक्रिशन साहिब थे। श्री गुरु हरिराय साहिब ने अपने बड़े सपुत्र रामराय को गुरगद्दी नहीं दी क्योंकि उसने औरंगजेब को खुश करने के लिए श्री गुरु नानक देव जी की बाणी की पंक्ति के एक शब्द को बदल दिया था। श्री गुरु हरिराय साहिब ने सिक्ख कौम की अगुआई के लिए उसे योग्य न समझा और गुरगद्दी की जिम्मेदारी अपने छोटे सपुत्र श्री (गुरु) हरिक्रिशन साहिब को सौंप दी। जब श्री (गुरु) हरिक्रिशन साहिब को गुरगद्दी सौंपी गई तो आपकी आयु केवल पांच वर्ष और ३ महीने के लगभग थी।

रामराय को चाहे गुरगद्दी नहीं दी गई परंतु फिर भी उसने अपने कुछ मसंदों की मदद से अपने आप को 'गुरु' कहलवाना शुरू कर दिया। कुछ सिक्ख, जो श्री गुरु हरिराय साहिब के फैसले को जानते थे, उन्होंने रामराय को 'गुरु' मानने से इंकार कर दिया। जब रामराय को इस तरह करने से भी कोई सफलता न दिखाई दी तो उसने अपने खास मसंदों के साथ सलाह-मशवरा कर यह मामला मुगल बादशाह के आगे पेश करने की तरकीब बनाई, क्योंकि औरंगजेब रामराय के प्रति काफी नर्म था। रामराय के कहने पर बादशाह औरंगजेब ने श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब को दिल्ली में बुलाया। रामराय तो दिल्ली पहुंच गया परंतु श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब बादशाह से मिलने के लिए तैयार नहीं हुए, क्योंकि आपके पिता श्री गुरु हरिराय साहिब ने कहा था कि औरंगजेब बादशाह से कोई मेल-मिलाप नहीं रखना और न ही उसके सामने जाना, इसलिए गुरु जी ने बादशाह से मिलने से मना कर दिया। बादशाह औरंगजेब ने राजा मिर्जा जय सिंह को हुक्म दिया कि श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब को दिल्ली आने के लिए प्रेरणा की जाये।

राजा मिर्जा जय सिंह ने अपने दीवान और कुछ अन्य आदमी भेजे कि गुरु जी को जाकर प्रार्थना करनी कि दिल्ली की संगत आपके दर्शन करना चाहती है। गुरु जी को आदर-सत्कार के साथ पालकी में बिठा कर ले आना।

कीरतपुर साहिब और आस-पास के सिक्खों को जब पता चला कि श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब दिल्ली औरंगजेब के बुलावे पर जा रहे हैं तो वे बहुत चिंतित हुए। सिक्खों को उस समय की सब घटनाएं याद थीं जब जहांगीर ने श्री गुरु अरजन देव जी को लाहौर बुलाया था और श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब को ग्वालियर। जब गुरु जी दिल्ली के लिए रवाना होने लगे तो सिक्ख संगत काफी बड़ी संख्या में इकट्ठी हो गई। गुरु जी ने सबको धैर्य बनाए रखने के लिए कहा। फिर भी बहुत-से सिक्ख गुरु जी के साथ दिल्ली जाने के लिए चल पड़े।

श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब को दिल्ली जाते समय रास्ते में अंबाला के पास पंजोखरा नामक नगर में एक पंडित लाल चंद मिला जो गुरु जी के

*452, Block-B, Sandhu Colony, Chheharta, Sri Amritsar-143005, Mob. : 81466-50449

सिक्खों को कहने लगा कि "द्वापर युग के अवतार श्री कृष्ण जी ने गीता उच्चारण की थी। आपके गुरु जो केवल ७-८ वर्ष की आयु के हैं और लोग इन्हें अपना 'गुरु' मानते हैं, यदि वाकई इनमें कोई आत्मिक योग्यता है तो गीता के किसी भी श्लोक के अर्थ करके दिखाएं।" जब गुरु जी को इस बात का पता चला तो गुरु जी ने पंडित को बुलाकर कहा कि "यदि हमने अर्थ कर भी दिये तो आपको फिर भी तसल्ली नहीं होगी, आप कहोगे कि आप गुरु-पुत्र हो, आप ने किसी विशेष अध्यापक से संस्कृत की पढ़ाई कर ली होगी। यदि आपने श्री गुरु नानक देव जी के घर की योग्यता की परख करनी ही है तो जाओ, अपने नगर से कोई भी व्यक्ति ले आओ, वो आपको गीता के अर्थ करके सुना देगा।" पंडित लाल चंद नगर में गया और एक सीधे से आदमी छज्जू को ले आया। गुरु जी की कृपा-नज़र से छज्जू ने एक विद्वान वक्ता की तरह गीता के श्लोकों के अर्थ कर दिये। इससे पंडित को करारी चोट लगी और गुरु जी की महिमा लोगों में और भी ज्यादा बढ़ गई।

श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब दिल्ली पहुंच गए और मिर्जा राजा जय सिंह के बंगले में उतारा किया। जिस बंगले में आप टिके थे वहां आज 'गुरुद्वारा बंगला साहिब' सुशोभित है। बादशाह औरंगजेब गुरु जी की परख करना चाहता था। बाल-गुरु जी को राजा जय सिंह के परिवार की स्त्रियों ने अपने घेरे में ले लिया। उनमें घर की नौकरानियां भी मौजूद थीं। गुरु जी को कहा गया कि इन सभी स्त्रियों में से रानी को पहचाना जाए। गुरु जी ने सभी को पारखू नजर से देखा और जाकर रानी की गोदी में बैठ गए। उन्हें रानी को पहचानने में कोई मुश्किल नहीं आई। बादशाह को इस परख से निश्चय हो गया कि गुरु जी का गुरगद्दी के योग्य होना उचित है। बादशाह ने रामराय की शिकायत को खारिज कर दिया।

औरंगजेब गुरु जी से मिलना चाहता था, पर गुरु जी ने उससे मिलने के लिए मना कर दिया। इतनी बड़ी मुगल ताकत के सामने बादशाह की बात को ठुकरा देना कोई साधारण बात नहीं थी। इससे आपकी आत्मिक उच्चता का पता चलता है। औरंगजेब पर गुरु जी के आत्मिक बल का बहुत असर हुआ और इतनी छोटी आयु में गुरु जी के निर्भय होने का पता चला।

श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब जब दिल्ली में थे तो वहां चेचक की बीमारी फैली हुई थी। गुरु जी बीमारी से पीड़ित लोगों की मदद करते रहे। गुरु जी ने दसवंध की एकत्र रकम से लोगों की सहायता की। अकबर और जहांगीर के समय भी जब काल पड़ता रहा तब भी गुरु साहिबान ने लोगों की मदद की थी। इस तरह गुरु साहिब बीमार लोगों की मदद करते रहे। आपकी आयु भी बहुत छोटी, लगभग ७ साल ८ महीने थी। इस आयु में यह बीमारी बहुत जल्दी अपना प्रभाव डाल देती है, इसलिए गुरु जी को भी बुखार होने लगा और चेचक ने भी असर कर दिया। गुरु जी को अपने अंतिम समय का पता चल गया और आप राजा मिर्जा जय सिंह के बंगले से बाहर यमुना के किनारे चले गए। कीरतपुर से आई संगत भी आपके साथ थी।

श्री गुरु नानक देव जी के समय से उत्तराधिकारी की चली आ रही मर्यादा के अनुसार गुरु जी ने कहा "बाबा बकाले"। इसका भाव था कि जो आगे आने वाले 'गुरु' हैं वे गांव 'बकाले' में रहते हैं और रिश्तेदारी में हमारे 'बाबा' (दादा) हैं। इसके बाद जल्दी ही आप ज्योति-जोत समा गए। आपकी देह का दाह-संस्कार यमुना के किनारे किया गया। वहां अब "गुरुद्वारा बाला साहिब" बना हुआ है। गुरु जी के परलोक-गमन की यह घटना ३० मार्च, १६६४ ई को हुई।



"सिक्ख इतिहास" कृत प्रो. करतार सिंघ में श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब

-स. ऊधम सिंघ*

दस गुरु साहिबान में से सबसे छोटी उम्र के और गुरगद्दी पर सबसे कम समय के लिए रहने वाले आठवें पातशाह श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब थे।

"सिक्ख इतिहास" पुस्तक में लेखक ने श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब के जीवन को बहुत ही सरलता से वर्णन किया है। श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब का जन्म ७ जुलाई, १६५६ को श्री गुरु हरिराय साहिब के घर माता किशन कौर जी की कोख से कीरतपुर साहिब में हुआ। आप श्री गुरु हरिराय साहिब के छोटे साहिबजादे थे।

लेखक श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब को गुरिआई दिए जाने के बारे में लिखता है कि रामराय श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब का बड़ा भाई था। वो बड़ा चालाक, होशियार, नीति-निपुंन और सिक्ख संगत एवं मसंदों में अच्छा असर-रसूख रखने वाला था। वो हर तरह से अपने आप को गुरगद्दी के लायक समझता था। रामराय की चालाकियों तथा गुरु-घर विरोधी गतिविधियों के कारण श्री गुरु हरिराय साहिब ने उसे त्याग दिया। गुरु साहिब ने अपने ज्योति-जोत समाने से पहले अपने छोटे साहिबजादे श्री (गुरु) हरिक्रिशन साहिब को हर तरह से योग्य समझकर गुरगद्दी की जिम्मेदारी सौंपी और संगत को हुक्म किया कि श्री (गुरु) हरिक्रिशन साहिब को ही गुरु समझना और रामराय की चालों तथा चलाकियों के जाल से बचकर रहना। ७ अक्तूबर, १६६१ को श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब के गुरगद्दी पर बैठते समय गुरु जी की उम्र लेखक ने सवा पांच साल बताई है।

लेखक लिखता है कि गुरगद्दी संभालते ही गुरु साहिब ने सभी कार्यों को अच्छे ढंग से जारी रखा। आप संगत को गुरु-आशय के बारे में उपदेश देते, उनकी शंकाओं का निवारण करते और नाम-दान बख्श कर निहाल करते। आप ने गुरसिक्खी के प्रचार को बढ़ाने के लिए दूर-दूर तक प्रचारक भेजे।

गुरगद्दी हासिल करने पर श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब को भी अपने बड़े भाई रामराय की विरोधता का सामना करना पड़ा, जैसे पांचवें गुरु श्री गुरु अरजन देव जी को उनके बड़े भाई प्रिथीचंद की विरोधता का सामना करना पड़ा था।

लेखक लिखता है कि संगत से मुंह की खाकर रामराय औरंगजेब के पास फरियादी हुआ और बादशाह के आगे अपनी सारी कहानी बताई। बादशाह बड़ा चालबाज था। पहले तो उसने रामराय को नेक सलाह से फुसलाया कि तेरे पास हमारी दी हुई जागीर है, तुझे किसी चीज की कमी नहीं है। फिर क्यों तू अपने छोटे भाई को परेशान करता है? रामराय अपनी जिद पर कायम था। फिर बादशाह ने सोचा, क्यों न गुरगद्दी रामराय को दिलाई जाए! यह मेरा वफादार है। इससे पंजाब की ओर से मुझे कोई खतरा भी नहीं रहेगा और इसलाम भी आसानी से फैल सकेगा। यह

*VPO : चविंडा देवी, श्री अमृतसर। मो. : ९८५५५-९६९२२

सोचकर बादशाह ने गुरु साहिब को दिल्ली बुलाने का फैसला किया।

उधर रामराय इस चाल पर बैठा था कि अगर श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब दिल्ली पहुंचकर औरंगजेब से मिले तो मैं जनता में उनके बारे में प्रचार करूंगा कि उन्होंने पिता-गुरु की आज्ञा का उल्लंघन किया है। इस तरह उनका जनता में सत्कार कम हो जाएगा और मैं 'गुरु' बन जाऊंगा। औरंगजेब को भी इस बात का पता चल गया कि गुरु जी अपने पिता-गुरु की आज्ञा का पालन करेंगे और बुलाने पर दिल्ली नहीं आएंगे।

औरंगजेब ने राजा मिर्जा जय सिंह को कहा कि गुरु साहिब को वे अपनी तरफ से बुलावा भेजें। दिल्ली की संगत ने अलग से विनती-पत्र लिखकर भेजा कि रामराय आपके खिलाफ कई प्रकार के षड़यंत्र रच रहा है, इसकी पोल खोलने के लिए आप दिल्ली जरूर आएं।

गुरु साहिब ने राजा जय सिंह का खत पढ़ने के बाद पहले तो जाने से इंकार कर दिया परंतु दिल्ली की संगत की विनती पर आप दिल्ली जाने के लिए तैयार हो गए।

कीरतपुर साहिब से दिल्ली और दिल्ली में ज्योति-जोत समाने तक का समय आठवें पातशाह श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब के लिए परीक्षाओं भरा रहा। लेखक लिखता है कि अगले दिन गुरु साहिब अपनी माता जी और बहुत सारी संगत के साथ, जो खुद ही गुरु साहिब के साथ चल पड़ी थी, दिल्ली की ओर रवाना हुए। रास्ते में और भी संगत साथ मिल गई। पंजोखरा गांव में पहुंचकर गुरु साहिब ने एक लकीर खींच दी कि हमारे जाने के बाद कोई भी सिक्ख इस लकीर को पार न करे और बाकी संगत को वापिस जाने का हुक्म किया। गुरु जी रात वहीं ठहरे। वहां पर एक अहंकारी पंडित आपको मिला और कहने लगा, "आप अपने आप को गुरु हरिक्रिशन साहिब कहलवाते हो। इस तरह आप श्रीकृष्ण जी से भी बड़े बनते हो। श्रीकृष्ण जी ने गीता रची थी, आप उसके अर्थ करके दिखा दें।"

अहंकारी पंडित की बात सुन सर्वकला-समर्थ गुरु जी कहने लगे, "हम परमात्मा के सेवक हैं। बड़े बनकर बैठना हम नहीं जानते। हमारे साथ शास्त्रार्थ आप फिर कभी करना, पहले आप अपनी मर्जी के किसी भी सिक्ख से अपना मुकाबला करके देख लें। जाओ! गांव में से कोई भी आदमी ले आओ वो आपको जवाब देकर आपकी संतुष्टि करेगा।"

पंडित जाकर एक महामूर्ख आदमी छज्जू को ले आया। गुरु साहिब ने पहले छज्जू की आंखों में आंखें डाल कर देखा और कहा, "भाई छज्जू! तुम पर गुरु नानक पातशाह की कृपा-दृष्टि है अब तुम धार्मिक विद्वान बन गए हो। इस पंडित के साथ शास्त्रार्थ कर इसकी संतुष्टि कराओ।" छज्जू के सिर पर अपनी छड़ी रखकर गुरु जी ने पंडित से कहा, "पूछो, जो भी पूछना है।" पंडित ने छज्जू से गीता में से कठिन से कठिन श्लोकों के अर्थ पूछे जिसके छज्जू फटाफट जवाब देता गया। पंडित लालचंद का अहंकार टूट गया और वो गुरु जी के चरणों पर गिर कर सिक्ख बना।

पंजोखरा से चलकर गुरु साहिब रास्ते में संगत को नाम-दान और सतिनाम का उपदेश देते हुए दिल्ली राजा जय सिंह के बंगले में पहुंचे। दिल्ली की संगत वहां आती और गुरु साहिब के दर्शन पाकर निहाल होती। औरंगजेब ने भी दर्शन करने चाहे लेकिन गुरु साहिब ने

उसे दर्शन देने से इंकार कर दिया। अगले दिन औरंगजेब ने अपने शहजादे को भेजा। वो भी दर्शन कर और आत्मिक उपदेश हासिल कर निहाल हुआ। जब उसने बादशाह के कहने पर गुरगद्दी की बात कही तो गुरु साहिब ने कहा कि "गुरगद्दी कोई विरासत या जद्दी मलकियत नहीं है। रामराय को गुरु-पिता जी ने त्याग दिया, इसमें कोई बुरा नहीं हुआ और न ही बेइंसाफी हुई है। रामराय का दावा झूठा है।"

गुरु साहिब के ये वचन सुनकर बादशाह को पक्का यकीन हो गया कि रामराय के साथ कोई बेइंसाफी नहीं हुई। बादशाह ने गुरु जी की समझ एवं सियानप की परख करनी चाही। उसने राजा जय सिंह से कहा कि इनकी करामाती शक्ति की परख करें। राजा गुरु साहिब को अपने महल में ले गया और कहा कि पटरानी तथा परिवार के दूसरे लोग आपके दर्शन करना चाहते हैं। जब गुरु साहिब महल में पहुंचे तो गुरु साहिब के चारों ओर महल की स्त्रियां आ जुड़ीं। उनमें पटरानी भी थी। उन सबने एक जैसे कपड़े पहने हुए थे। गुरु साहिब को कहा गया कि इन सब में से पटरानी को पहचानो। गुरु साहिब ने बारी-बारी सबको देखा और अपनी छड़ी प्रत्येक के सिर पर रखकर कहा, "यह भी पटरानी नहीं . . . यह भी नहीं . . .।" अंततः आपने पटरानी के सिर पर छड़ी रखी, चेहरे को ध्यान से देखा और कहा, "यह है पटरानी।" बादशाह को पूर्ण यकीन हो गया। उसने रामराय की अपील को खारिज किया।

अगले दिन गुरु साहिब को तीव्र बुखार हो गया, उसके बाद चेचक निकल आई। चेचक भी बहुत भयानक किस्म की थी। आपकी यह हालत देखकर संगत घबरा गई। गुरु साहिब जानते थे कि अब उनका अंत समय आ गया है, इसलिए उन्होंने सबको धैर्य दिया और वाहिगुरु का भाणा सत्य कर मानने का उपदेश दिया। संगत ने पूछा कि आपके जाने के बाद हमारी अगुआई कौन करेगा? गुरु साहिब ने हाथ ऊपर करके इशारा करते हुए कहा, "बाबा बकाले।" गुरु साहिब के कहने का मतलब था कि गुरगद्दी की अगले वारिस 'बकाला' गांव में हैं। वे दुनियावी रिश्ते के तौर पर उनके 'बाबा' लगते हैं। अगले दिन ३० मार्च, १६६४ को श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब दिल्ली में ज्योति-जोत समा गए।

अपील

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की धर्म प्रचार कमेटी की ओर से कैंसर से पीड़ित लोगों के उपचार में योगदान डालने की भावना से 'कैंसर फंड' स्थापित किया गया है। इस फंड के लिए धर्म प्रचार कमेटी की ओर से ११ लाख रुपये, शिरोमणि कमेटी के मैंबर साहिबान की ओर से अपने अधिकारिक फंड में से १०-१० हजार रुपये और शिरोमणि कमेटी के प्रबंध अधीन समस्त विभागों के कर्मचारियों की तरफ से अपना एक-एक दिन का वेतन देकर योगदान डाला गया है। समूह गुरु नानक नाम-लेवा संगत को अपील है कि आओ! कैंसर से पीड़ित लोगों के उपचार के लिए अपनी किरत-कमाई में से 'कैंसर फंड' के लिए दिल खोलकर हिस्सा डालकर परमात्मा की बख्शिशों के पात्र बनें। कैंसर फंड के लिए माया 'इंडियन बैंक' चौक फरीद, श्री अमृतसर के खाता नं: 493554272 में जमा कराई जा सकती है।

गुरु-पंथ का दास,
अवतार सिंघ
अध्यक्ष, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर।

बाला प्रीतम का जीवन-व्यक्तित्व

*-डॉ. सत्येंद्रपाल सिंघ**

गुरु नानक साहिब ने परमात्मा, जीवात्मा और जीवन के जो सिद्धांत संसार के सामने रखे वे सम्पूर्ण, संपुष्ट और स्पष्ट सिद्धांत थे। सिद्धांतों पर ही गुरु नानक साहिब के बाद नौ गुरु साहिबान चले और अंततः वे श्री गुरु ग्रंथ साहिब में आलोकित हुए। गुरु नानक साहिब ने जिस धार्मिक सत्ता की स्थापना की उसे श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी तक सभी गुरु साहिबान ने अपने-अपने ढंग से चमक प्रदान की। सामान्यतः समय और परिस्थितियों के साथ सोच बदलती जाती है किंतु सच अपरिवर्तित, अटल, शाश्वत है आदि काल से ही। गुरु नानक साहिब के दरबार का आधार सच था, इसी लिये उनके राज्य को अबिचल राज की संज्ञा दी गयी। चोला बदलता गया किंतु सच नहीं। जो सच हमें गुरु नानक साहिब में देखने को मिला वही सच बाद के सभी नौ गुरु साहिबान में दिखा। सच की विस्मय उत्पन्न करने वाली मात्रा आज भी श्री गुरु ग्रंथ साहिब के माध्यम से निरंतर जारी है और उस अटल राज्य की गवाही दे रही है जिसे एक महत्वपूर्ण पड़ाव तक पहुंचाने का कार्य श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब ने किया।

श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब का पांच वर्ष की आयु में गुरगद्दी पर विराजमान होकर गुरु-परंपरा की महान विरासत को संभालना और आठ वर्ष से भी कम आयु में अपने उत्तरदायित्वों को बाखूबी अंजाम देते हुए इहलोक की यात्रा को सम्पूर्ण करना मानव-इतिहास की एक अनोखी घटना थी। इससे भी अधिक अद्भुत बात थी उनमें परिस्थितियों के अनुकूल सटीक निर्णय लेने की क्षमता और गुरु-पद की मर्यादा को बनाये रखना। इस बात की प्रबल संभावना थी कि श्री गुरु हरिराय साहिब अपने बड़े पुत्र रामराय को गुरगद्दी सौंपते। रामराय अति आत्मविश्वास के साथ ही अति महत्वाकांक्षा का शिकार हो गया और दिल्ली प्रवास के दौरान औरंगजेब को प्रभावित करने हेतु अपने पिता श्री गुरु हरिराय साहिब के आदेशों का भी उल्लंघन कर बैठा। श्री गुरु हरिराय साहिब ने निर्णय लिया कि वे भविष्य में कभी भी रामराय को मुंह नहीं लगायेंगे। जो गुरु-दरबार की मर्यादा कायम नहीं रख सका वह पुत्र होते हुए भी पुत्र नहीं रहा। यह एक बहुत बड़ा निर्णय था जिसके साक्षी श्री (गुरु) हरिक्रिशन साहिब भी बने और यह निर्णय उनके लिये एक बड़ा मार्गदर्शक बना। छोटी-सी उम्र में उन्होंने गुरु-घर के सम्मान की सर्वोच्चता को जान लिया था जिसने उन्हें आंतरिक दृढ़ता प्रदान की :

पाइआ लालु रतनु मनि पाइआ ॥
तनु सीतलु मनु सीतलु थीआ
सतगुर सबदि समाइआ ॥१॥रहाउ॥
लाथी भूख त्रिसन सभ लाथी

**ई-१७१६, राजाजीपुरम, लखनऊ (यू. पी.)-२२६०१७, मो : ९४१५९६०५३३*

चिंता सगल बिसारी ॥
करु मसतकि गुरि पूरै धरिओ
मनु जीतो जगु सारी ॥१॥
त्रिपति अघाइ रहे रिद अंतरि
डोलन ते अब चूके ॥
अखुटु खजाना सतिगुरि दीआ
तोटि नही रे मूके ॥२॥
अचरजु एकु सुनहु रे भाई
गुरि ऐसी बूझ बुझाई ॥
लाहि परदा ठाकुरु जउ भेटिओ
तउ बिसरी ताति पराई ॥ (पन्ना २१५)

श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब के जिस स्वरूप को संसार ने अचंभित होकर देखा वह वास्तव में सतिगुरु की कृपा और सतिगुरु की लीला ही थी। श्री गुरु हरिराय साहिब जब नितनेम करते, संगत को उपदेश देते थे तो श्री (गुरु) हरिक्रिशन साहिब भी उनके पास बैठते थे और उनकी कृपा प्राप्त करते थे। श्री (गुरु) हरिक्रिशन साहिब मात्र अपनी उपस्थिति ही नहीं दर्ज कराते थे बल्कि अपनी सामर्थ्य के अनुरूप श्री गुरु हरिराय साहिब के कार्यों में योगदान भी डाला करते थे, यह बात विशेष ध्यान देने योग्य है। अंत:प्रेरणा उनमें आरंभ से ही थी और वे गुरु तथा शबद से जुड़ने का अर्थ समझते थे। ऐतिहासिक साक्ष्यों के अनुसार वे दवाखाने के कार्यों में भी श्री गुरु हरिराय साहिब की सहायता किया करते थे। श्री गुरु हरिराय साहिब ने उन पर कृपा करके उन्हें ऐसी सुमति प्रदान की कि वे परमेश्वर से एकाकार हो गये और आश्चर्यजनक रूप से उन सारी बातों से ऊपर उठ गये जो एक सामान्य बालक में पायी जाती हैं। उन्हें गुरु-दरबार की अथाह श्रेष्ठता प्राप्त हो गयी जिससे उनकी बुद्धि और मन के सारे भ्रम समाप्त हो गये और वे संसार में सर्वोत्तम हो गये। उनका तन और मन दोनों पवित्र हो गये।

गुरगद्दी पर बैठने के बाद श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब ने श्री गुरु हरिराय साहिब के काल से चली आ रही गुरु-मर्यादा को जारी रखा और उसी तरह शबद-गायन होता रहा। वे संगत को उपदेश देते थे ताकि आने वाली संगत को किसी कमी अथवा व्यवधान का अनुभव न हो। उन्होंने गुरु-शिक्षाओं के प्रचार-प्रसार की ओर भी ध्यान दिया। जिस समय श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब गुरगद्दी पर विराजमान हुए वह ऐतिहासिक दृष्टि से बड़ा ही संवेदनशील काल अंतराल था। औरंगजेब ने बस अपने पैर जमाने शुरू ही किये थे और उसकी धर्मांध कुटिल नीतियां खुलकर सामने नहीं आयी थीं। औरंगजेब की गुरु-घर के प्रति दृष्टि और नीयत में विकार आ चुका था। ऐसे समय में श्री गुरु हरिराय साहिब के बड़े पुत्र रामराय से उसकी निकटता और रामराय का गुरु-द्रोह परिस्थितियों को विषम बनाने के लिये पर्याप्त था। श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब की छोटी आयु भी गुरु-घर के विरोधियों का मनोबल बढ़ाने और कुचेष्टाएं करने के लिए उकसाने हेतु पर्याप्त थीं। गुरु साहिब के सामने ऐसे समय में तीन मुख्य चुनौतियां थीं। एक चुनौती थी सिक्ख संगत के विश्वास को बनाये रखना, दूसरी चुनौती थी गुरु-घर के विरुद्ध हो रहे षड़यंतों, विरोधों को विफल करना और तीसरी चुनौती थी गुरु-घर की प्रतिष्ठा को बनाये रखना।

श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब का पहला

निर्णय था किसी भी तरह के वाद-विवाद में न पड़ने का। उन्होंने शांतिपूर्ण और संयमित ढंग से सिक्ख संगत को जोड़े रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी जो आने वाले संघर्ष के काल में गुरु नानक साहिब के मिशन का सुदृढ़ आधार बनी। उन्होंने गुरु-घर के प्रति सिक्ख संगत की आस्था को मजबूत किया जो रामराय और पूर्व के गुरु-घर-द्रोहियों की चालों से बिखर सकती थी। गुरु साहिब इन सभी चालों से निष्प्रभावित रहे और अपने लक्ष्य की ओर ध्यान देते रहे। उनमें गुरु नानक साहिब की ज्योति प्रकाशमान थी और उस प्रकाश ने उनकी राह को आसान बना दिया था। रामराय की द्रोहपूर्ण गतिविधियों से उनके मन में पल भर को भी उत्तेजना नहीं उत्पन्न हुई और न ही वे कभी भयभीत ही हुए। वे तो परमात्मा से एकाकार होकर अडोल और निर्लिप्त अवस्था में पहुंच चुके थे।

रामराय ने औरंगजेब से निकटता का लाभ उठाते हुए उसे भावनात्मक रूप से भी प्रभावित करने का प्रयास किया कि बड़ा पुत्र होने के नाते उसका गुरगद्दी पर पहला हक है और उसके साथ अन्याय हुआ है। औरंगजेब ने जब श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब से मिलने की इच्छा व्यक्त की तो गुरु साहिब ने मिलने से इंकार कर दिया। इसके बाद वे राजा जय सिंह और दिल्ली की संगत के आग्रह पर दिल्ली गये। औरंगजेब से मिलने से इंकार करना और बाद में दिल्ली जाना, यह निर्णय सिक्ख इतिहास में मील के पत्थर की तरह है। औरंगजेब गुरु साहिब से मिलना चाहता था। इसके पीछे की मंशा शीशे की तरह साफ थी। औरंगजेब रामराय द्वारा गुरगद्दी को लेकर उठाये गये विवाद के बारे में चर्चा करना चाहता था जबकि गुरु साहिब खुद को ऐसे विवाद से पूरी तरह दूर रखना चाहते थे। वे श्री गुरु हरिराय साहिब के आदेश का भी अनुपालन करना चाहते थे कि ऐसे लोगों को दर्शन न दिया जाये। दर्शन न देने और गुरगद्दी को किसी भी तरह के विवाद से परे रखने के निर्णय के पीछे किसी भी तरह की संवेगात्मक भावना, द्वेष-विचार अथवा अहमन्यता नहीं थी वरन् एक संपुष्ट सोच थी कि गुरगद्दी पर किसी का पैतृक अधिकार नहीं, यह योग्यता का विषय है और दुर्भावना के लिये गुरु-घर में कोई जगह नहीं है। गुरु-घर इसलिये पूज्य है क्योंकि उसके गुण महान हैं और वह न्याय का स्रोत है :

वडी वडिआई जा वडा नाउ ॥
वडी वडिआई जा सचु निआउ ॥
वडी वडिआई जा निहचल थाउ ॥
वडी वडिआई जाणै आलाउ ॥
वडी वडिआई बुझै सभि भाउ ॥
वडी वडिआई जा पुछि न दाति ॥ (पन्ना ४६३)

गुरु साहिब का स्थान ऊंचा था। वे न्याय करने वाले सत्पुरुष थे और किसी भी तरह अपनी महानता से विचलित नहीं होने वाले थे। गुरु साहिब सब कुछ जानने-समझने वाले और उदारता से कृपा करने वाले थे। उनका औरंगजेब से न मिलना और फिर भी दिल्ली जाने का निर्णय इन गुणों की कसौटी पर पूरी तरह खरा उतरने वाला निर्णय था। वे दिल्ली गये, क्योंकि वे संगत की इच्छा सर्वोपरि मानते हुए उसे सम्मान देना जानते थे। राजा जय सिंह औरंगजेब का सहयोगी था। इसके बाद भी

उसका आतिथ्य उन्होंने इसलिये स्वीकार किया क्योंकि राजा जय सिंह ने उन्हें भक्ति-भाव से आमंत्रित किया था। इससे यह भी सिद्ध हुआ कि सतिगरु निरवैर हैं, निरभउ भी हैं। दिल्ली आकर रामराय, जो उनसे उम्र में कहीं ज्यादा बड़ा और चालाक था, औरंगजेब के रौब में आ गया था। गुरु साहिब ने दिल्ली आकर भी औरंगजेब से मिलने से इंकार करके यह सिद्ध कर दिया कि गुरु जी की धर्म-सत्ता सर्वोच्च है और अडोल है। दिल्ली आकर जिस तरह गुरु साहिब ने लोगों के दुख से स्वयं को जोड़ा और चेचक व हैजे से पीड़ित रोगियों की घर-घर जाकर सेवा की उससे *"वडी वडिआई जा पुछि न दाति"* को अपने आचरण से अक्षरशः प्रमाणित किया। उन्होंने एक ओर राजमद से स्वयं को अप्रभावित रखा वहीं दूसरी ओर जन की पीड़ा को अपनी पीड़ा बनाकर जन को निर्मलता प्रदान की :

संगति संत मिलाए ॥
हरि सरि निरमलि नाए ॥
निरमलि जलि नाए मैलु गवाए
भए पवितु सरीरा ॥
दुरमति मैलु गई भ्रमु भागा
हउमै बिनठी पीरा ॥
नदरि प्रभू सतसंगति पाई
निज घरि होआ वासा ॥
हरि मंगल रसि रसन रसाए
नानक नामु प्रगासा ॥ *(पन्ना ७७४)*

श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब ने दिल्ली जाकर गुरु नानक साहिब के दरबार की कीर्ति में चार चांद लगा दिये और रामराय द्वारा उत्पन्न किये गये भ्रम का अपने विवेक से, बड़ी सहजता से निवारण किया जिससे औरंगजेब को रामराय की अर्जी खारिज करनी पड़ी।

ऐसा लगता है कि नियति ने गुरु साहिब के काल को श्री (गुरु) तेग बहादर साहिब की आध्यात्मिक तैयारी के रूप में भी तय किया था। श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब ने इस बात को भली प्रकार जाना हुआ था, इसी लिये उन्होंने अगले गुरु के रूप में उनका नाम लिया जैसे, उनके पूर्ववर्ती सभी गुरु साहिबान ने अपनी गुरगद्दी विधिवत रूप से अगले गुरु को सौंपी थी। श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब ने अगले गुरु के बारे में संकेत मात्र किया। इसके तीन मुख्य कारण समझ में आते हैं। एक तो यह कि श्री गुरु तेग बहादर साहिब उस समय अंतर्ध्यान और गुप्तवास में थे। दूसरा, वे उनके दादा लगते थे तथा वरिष्ठ होने के नाते सम्मानयोग्य भी थे। तीसरा, गुरगद्दी से जुड़े विवादों पर सदा के लिये विराम लगाकर वे परिपक्व हो चुकी सिक्ख संगत को अवसर देना चाहते थे कि वो श्री गुरु तेग बहादर साहिब को स्वयं चिन्हित कर गुरगद्दी पर आसीन होने के लिये आग्रह करे। ऐसा हुआ भी, जिससे गुरु साहिब के एक और निर्णय पर परिपक्वता की मुहर लगी। आज दिल्ली में औरंगजेब और उसके राज्य का नामोनिशान नहीं है, कोई औरंगजेब का नाम लेने वाला नहीं है। उसी दिल्ली में राजा जय सिंह का वह महल जहां श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब ने निवास किया था 'गुरुद्वारा बंगला साहिब' बनकर गुरु नानक साहिब के अबिचल राज के एक महत्वपूर्ण प्रकाश-केंद्र के रूप में उभरा है, जहां रोज लाखों की संख्या में संगत शबद-गुरु से जुड़कर निहाल होती है। 

स्री हरिक्रिशन धिआईऐ जिस डिठे सभि दुखि जाइ

*-स. गुरदीप सिंघ**

भाई गुरदास जी (दूजे) ने श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब को 'असटम बल बीरा' कहा है, क्योंकि बहुत छोटी आयु में आठवें गुरु जी वास्तव में आत्मिक तौर पर बलबीर और सूझवान महापुरुष बन गए थे।

सिक्ख धर्म में गुरु-घर की मर्यादा रही है कि यहां गुरगद्दी की बख्शिश योग्यता के आधार पर होती है। दस गुरु साहिबान की ज्योति एक शरीर से दूसरे शरीर में प्रकाशित होने के समय न तो शरीर और न ही उम्र का छोटा-बड़ा होना बाधक बना। जहां पर ९५ साल की उम्र में श्री गुरु अमरदास जी श्री गुरु नानक देव जी द्वारा चलाए पंथ के प्रचार में जुटे दीखते हैं, वहीं श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब ने सवा पांच साल से लेकर लगभग आठ वर्ष की आयु में ही कई हैरानीजनक आदर्श बनाए, कई प्रकार के दिशा-निर्देश और अनेकों ही प्रकार की चेतावनियां भी दीं।

श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब का जन्म ७ जुलाई, सन् १६५६ को कीरतपुर साहिब (जिला रोपड़) में श्री गुरु हरिराय साहिब के घर हुआ। आपकी माता का नाम किशन कौर था। आपका एक भाई, जिसका नाम रामराय था, उम्र में आपसे छः साल बड़ा था। छोटी उम्र में ही आप पालथी मार कर बैठते और घंटों तक कीर्तन सुनते। आप स्वयं बड़ी लय में पाठ करते थे। आपका चेहरा बहुत कोमल और मनमोहक था, देखने वाला खुद ही आपकी तरफ खिंचा चला आता।

जब औरंगजेब तख्त पर बैठा तो उसने श्री गुरु हरिराय साहिब को दिल्ली बुलाया। गुरु जी स्वयं तो न गए पर अपनी जगह बड़े पुत्र रामराय को भेज दिया। चलते समय गुरु जी ने चेतावनी दी कि हर कार्य प्रभु-आसरे करना। औरंगजेब ने सिक्ख धर्म के बारे में कई सवाल पूछे जिनका उत्तर रामराय ने गुरु जी की सीख के अनुसार ही दिया। औरंगजेब ने काजियों की प्रेरणा पर रामराय से पूछा कि तुम्हारे ग्रंथ में लिखा है :

मिटी मुसलमान की पेड़ै पई कुम्हिआर ॥
घड़ि भांडे इटा कीआ जलदी करे पुकार ॥
(पन्ना ४६६)

इसके क्या अर्थ हैं? यह प्रकट तौर पर हमारे धर्म की निंदा नहीं?

बादशाह के पास कुछ दिन रहने के कारण बादशाह पर अपने प्रभाव और रसूख को बनाए रखने के लिए रामराय फिसल गया और उसने कह दिया कि "मिटी मुसलमान की" नहीं "मिटी बेईमान की" लिखा है। यह सुनकर बादशाह खुश हो गया। उसने रामराय को दून का इलाका जागीर के रूप में दे दिया। जब गुरु जी को रामराय की इस कमजोरी का पता चला तो उन्होंने हुक्म भेज दिया कि आगे से रामराय हमारे माथे न लगे।

हर पक्ष की तरफ से योग्य जानकार श्री गुरु हरिराय साहिब ने ७ अक्तूबर, १६६१ को गुरगद्दी अपने छोटे सपुत्र श्री (गुरु) हरिक्रिशन

**३०२, किदवई नगर, लुधियाना। मो : ९८८८१२६६९०*

साहिब को बख्श दी। उस समय श्री (गुरु) हरिक्रिशन साहिब की उम्र केवल ५ साल थी।

कई अभिमानी लोग गुरु जी से ईर्ष्या रखते थे। उनका विचार था कि इतनी छोटी उम्र होने के कारण गुरु जी से गुरु-घर की जिम्मेदारी नहीं संभाली जायेगी। उन्होंने गुरु जी की मान्यता को घटाने के लिए कई प्रकार की तरकीबें बनानी शुरू कर दीं।

एक दिन गुरु जी पालकी में सवार होकर जा रहे थे। ब्राह्मणों और गुरु-घर से द्वेष रखने वालों का सिखलाया हुआ एक कोढ़ी व्यक्ति पालकी के आगे जाकर लेट गया और अपना कोढ़ दूर करने की विनती करने लगा। उन लोगों के मन में था कि यदि गुरु साहिब उसका कोढ़ दूर न कर सके तो वे निंदा करेंगे कि बाल-गुरु में कोई शक्ति नहीं है। गुरु जी ने अपना रुमाल उसे देकर कहा कि "इस रुमाल को अपने शरीर पर फेरा करो, गुरु नानक साहिब के घर में सब कुछ है, अरदास किया करो।" कोढ़ी स्वस्थ हो गया। इससे गुरु-घर की महिमा और भी बढ़ने लगी।

रामराय श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब से बड़ा होने के नाते गुरगद्दी पर अपना हक समझता था। वह बहुत चालाक और नीतिवान था। जिस दिन से गुरगद्दी श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब को मिली थी उसी दिन से रामराय शिकायत कर रहा था कि "मैं गुरु जी का बड़ा सपुत्र हूं और गुरगद्दी पर मेरा हक है। मेरा हक मुझे दिला दिया जाए, मेरे साथ अन्याय हुआ है।" इस पर औरंगजेब ने श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब को दिल्ली आने का बुलावा भेजा।

जब गुरु जी औरंगजेब के बुलावे पर कुछ सिक्खों के साथ दिल्ली जा रहे थे तो रास्ते में अंबाला जिले के नगर पंजोखरा में रुके। वहां पर लालचंद नाम का पंडित रहता था। वह खीझकर सिक्खों को सुना-सुना कर कहने लगा कि "सिक्ख गुरु जी को 'गुरु हरिक्रिशन साहिब' कहते हैं। यदि इनमें आध्यात्मिक शक्ति है तो गीता के किसी श्लोक के अर्थ करके बताएं।" श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब ने कहा, "अगर आपने गुरु नानक पातशाह की बरकतों की ताकत देखनी है तो अपने नगर में से किसी को भी ले आओ, आपकी तसल्ली गुरु महाराज की बख्शिश द्वारा हो जायेगी।" पंडित गया और छज्जू नाम के एक अनपढ़ व्यक्ति को ले आया। सतिगुरु जी ने अपनी दया-दृष्टि की तो वह अनपढ़ व्यक्ति एक विद्वान की तरह गीता के श्लोकों का पाठ और अर्थ समझाने लगा। सतिगुरु जी की महिमा चारों तरफ फैल गई।

जब संगत सहित गुरु जी दिल्ली पहुंचे तो राजा जय सिंह ने उनको अपने बंगले में ठहराया। यही स्थान अब "गुरुद्वारा बंगला साहिब" के नाम से जाना जाता है। राजा जय सिंह की रानी के मन में गुरु जी की उम्र के बारे में ब्राह्मणों ने भ्रम पैदा कर दिया था, अतः रानी ने गुरु जी की परख करनी चाही। रानी ने कई अमीर घरानों की औरतों को अपने महल में बुलाया और सबको एक जैसा लिबास पहनाकर बिठा दिया। रानी ने मन में सोचा कि यदि गुरु जी सच्चे हैं तो सबको छोड़कर मेरी गोद में आकर बैठें। श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब सबको छोड़कर रानी की गोद में जाकर बैठ गए। रानी को विश्वास हो गया।

दिल्ली में सतिगुरु जी ने औरंगजेब को मिलने से मना कर दिया। यह कोई साधारण बात न थी। इतनी बड़ी मुगल हकूमत के बादशाह, जिसको मिलने के लिए लोग खुशामदें

करते थे, साढ़े सात वर्ष के बाल-गुरु श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब द्वारा बादशाह के इच्छा प्रकट करने पर भी मिलने से मना कर देना, आत्मिक उच्चता की अपने आप में एक बहुत बड़ी मिसाल है। दिल्ली में संगत हर रोज राजा जय सिंह के बंगले में पहुंचती, सतसंग होता और संगत गुरु साहिब के दर्शन करती। रामराय के दावे के बारे में गुरु जी ने कह दिया कि गुरगद्दी विरासत या पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलने वाला स्वामित्व नहीं है। इसमें किसी के साथ कोई अन्याय नहीं हुआ है।

दिल्ली में चेचक की बीमारी फैल गई। गुरु जी ने रोगियों की सहायता करनी शुरू कर दी। जिन इलाकों में चेचक का पूरा जोर था वहां कई पीड़ित व्यक्तियों के रिश्तेदार रोगियों को अकेला छोड़कर चले गए थे। गुरु जी उन इलाकों में गए और अपने हाथों से उनकी सेवा करने लगे। इसका नतीजा यह हुआ कि एक दिन गुरु जी को तेज बुखार हो गया। सतिगुरु जी के शरीर पर भी चेचक के लक्षण नजर आने लगे। सतिगुरु जी ने ज्योति-जोत समाने का समय निकट जानकर पास बैठी संगत को हुक्म दिया "बाबा बकाले", जिसका तात्पर्य था कि हमारे बाद गुरगद्दी की जिम्मेदारी संभालने वाले महापुरुष, जो हमारे 'बाबा' (दादा) लगते हैं, वे 'बकाला' नगर में हैं। यह कहकर आप ३० मार्च, सन् १६६४ को ज्योति-जोत समा गए। यमुना के किनारे आपका दाह-संस्कार कर दिया गया। इस स्थान पर आजकल "गुरुद्वारा बाला साहिब" है।

आपने जात-पात के कोढ़ को दूर करने और नशों से बचने का उपदेश दिया। आपके दर्शन के लिए कीरतपुर साहिब भीड़ लगी रहती थी। आपके चेहरे पर फैली मुसकान चित्त एकाग्र कर देती। जिस किसी ने भी सुना *"स्री हरिक्रिशन धिआईऐ जिस डिठे सभि दुखि जाइ"* वह लंबी दूरी तय करके भी कीरतपुर साहिब दर्शन करने के लिए पहुंचता। कुष्ठियों की कतारें ही लगी रहती थीं। *"...सभि दुखि जाइ"* से भाव है कि श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब के दीदार करने मात्र से ही आत्मिक, शारीरिक और सांसारिक रोग दूर हो गए।

"जोति बिगास" (फारसी) में भाई नंद लाल जी ने गुरु साहिब के बारे में लिखा है कि वही सर्वोच्च श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब हैं जिनसे हर हाजतमंद की मुराद पूरी होती है :

हमू हरिक्रिशन आमदा सर-बुलंद
अज़ो हासिल उमीदि हर मुसतमंद ॥२६॥

श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब ने थोड़े समय में ही जो पद-चिन्ह छोड़े, चेतावनियां दीं, आप जी के जीवन से सम्बंधित वे साखियां प्रकाश-स्तंभ का काम करती रहेंगी।

श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब से सम्बंधित गुरुद्वारा साहिबान :

१. गुरुद्वारा शीशमहल, कीरतपुर साहिब। यहां आपका जन्म हुआ।
२. गुरुद्वारा तखत साहिब, कीरतपुर साहिब। यहां पर आपको गुरिआई देने की रस्म अदा की गई।
३. गुरुद्वारा पंजोखरा साहिब, अंबाला। यहां पर आपने एक पंडित के अहंकार को तोड़ा।
४. गुरुद्वारा बंगला साहिब, दिल्ली। यहां राजा जय सिंह के बंगले में आपने निवास किया था।
५. गुरुद्वारा बाला साहिब, दिल्ली। यहां पर गुरु जी के पार्थिव शरीर का दाह-संस्कार किया गया था।



श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब का व्यक्तित्व

*-बीबी अमृत कौर**

बाला प्रीतम श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब पांच साल की छोटी उम्र में और श्री गुरु अमरदास जी ७२ साल की वृद्ध अवस्था में गुरु-पदवी पर विराजे। दोनों में एक ही ज्योति थी, एक ही पर विश्वास था। दोनों ने ही गुरु-घर की खूब सेवा की और श्री गुरु नानक देव जी के चलाये सिक्ख धर्म को बुलंदी पर पहुंचाया। दशमेश पिता के निर्मल वचन हैं : *स्री हरिक्रिशन धिआईऐ जिस डिठे सभि दुखि जाइ ॥*

सचमुच आठवें गुरु बाला प्रीतम का नाम लेने से सभी दुख दूर हो जाते हैं, शांति मिल जाती है। उनका वजूद ही अलाही बख्शिशों और रहमतों से भरा है।

श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब सातवें गुरु श्री गुरु हरिराय साहिब और माता किशन कौर के छोटे साहिबजादे थे। १६५६ ई में आपने कीरतपुर साहिब में जन्म लिया। आपका पालन-पोषण पिता श्री गुरु हरिराय साहिब की निगरानी में हुआ। गुरु-दरबार में कितनी-कितनी देर बैठ पावन गुरबाणी का पाठ, कीर्तन, कथा सुनते और हर समय प्रभु-सिमरन में लगे रहते।

गुरु-पिता श्री गुरु हरिराय साहिब के गुण, जैसे--नम्रता, धीरज, संतोष, समदृष्टता, दुखियों की सहायता करना, पशु-पक्षियों का ध्यान रखना, लंगर में अपने हाथों से सेवा करना आदि आप में स्वाभाविक ही समा गये।

आपके बड़े भ्राता रामराय पहले पड़ाव में तो धार्मिक विचारों वाले थे परंतु उन्होंने दिल्ली जाकर शाही ठाठ-बाठ को देख और औरंगज़ेब को प्रभावित करने के लिये कई चमत्कार कर दिखाये तथा श्री गुरु नानक देव जी की बाणी को बदल कर पावन बाणी का त्रिस्कार किया तो पिता श्री गुरु हरिराय साहिब यह सहन न कर सके और रामराय को बेदखल कर दिया। अपने अंतिम समय गुरगद्दी पांच साल के बेटे श्री (गुरु) हरिक्रिशन साहिब को दे संगत को कहा, "इन पर श्रद्धा रखने से सब कष्ट दूर हो जाएंगे और सभी फल प्राप्त होंगे।"

श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब गुरगद्दी पर विराजमान होकर पूरी जिम्मेदारी के साथ सच्चा ज्ञान प्रदान करने का कार्यभार निभाते। सुबह अमृत वेले गुरुद्वारे आकर कीर्तन-कथा व पाठ सुनते और करते। दरबार लगाते, दुखियों और जरूरतमंदों की सहायता करते। आपके प्यारे से मुखड़े के दर्शन करने और मीठी बाणी सुनने के लिये दूर-दूर से संगत आती। श्री गुरु ग्रंथ साहिब के बारे में आप कहते थे, "कभी भी कोई इच्छा हो, जिंदगी में कोई विघ्न या संकट आ पड़े, दुख सताये, चंचल मन भटकने लगे तो गुरु साहिब की शरण में जाकर अरदास करो, वो आप सहाई होंगे।"

तीन साल के गुरुता काल में आप जी ने इतने बड़े कार्य किये कि हर तरफ आपकी शोभा फैलने लगी। कई मुसलमान पीर, फकीर और दरवेशों ने आपको सजदा किया। भाई गुरदास

**६५८/१०, पंजाब माता नगर, लुधियाना।*

जी (दूसरे) ने आपको 'असटम बलबीरा' कहा।

गुरु जी ने सिक्ख धर्म के प्रचार के लिये दूर-दूर नगरों में विद्वान भेजे तथा शफाखाने में अच्छी से अच्छी दवा का प्रबंध किया। गुरु जी ने तंबाकू सेवन के विरुद्ध आवाज उठाई। केशों की महत्ता बता कर केश रखने का आदेश दिया। मानसिक रोग से पीड़ित जोधे नईया ने जब केश रखे तो उसका रोग दूर हो गया।

सतिगुरु जी ने अपने मुखारबिंद से श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी सुनाकर लोगों का जीवन ही बदल दिया जैसे जसवंत राय चोरी करनी छोड़ किरत करने लगा। गोंदा मल ने जुआ खेलने और शराब पीने की आदतें छोड़ दीं। पाखंडी और अभिमानी ब्राह्मणों के मन से ऊंच-नीच, जात-पात का भेद मिटाया। मखट्टू लोग जो भिक्षा मांगते थे, उन्हें अपने हाथों से किरत करने, नाम-सिमरन करने और बांट कर खाने का उपदेश देकर गुरु-घर के सेवादार बना दिया।

गुरबाणी के प्रचार और सत्कार के लिये भाई मनी सिंघ जी और भाई दिआला जी से बाणी की पोथियां लिखवाकर संगत में बांटीं। गुरु जी अखाड़े में नेजाबाजी, घुड़सवारी और दंगल करा कर, इनाम देकर फौजियों का उत्साह बढ़ाते।

रामराय और औरंगजेब की राजनीतिक चालों की परवाह किये बिना निडरता और दिलेरी से सिक्ख जत्थेबंदी को मजबूत किया। जब दिल्ली में राजा जय सिंह ने आपको दर्शन देने के लिये बुलाया तो आपने सिक्ख संगत से विचार कर दिल्ली जाना तो मान लिया पर औरंगजेब को मिलने से साफ इंकार कर दिया। अंबाला के पास पंजोखरा के स्थान पर छज्जू नाम के झीवर जाति के मनुष्य पर कृपा-दृष्टि डाल, उससे गीता के अर्थ कराये और पंडित लालचंद का अभिमान उतारा।

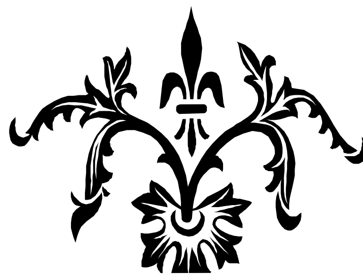
गुरु जी दिल्ली में राजा जय सिंह के बंगले पर ठहरे। औरंगजेब सुनकर दर्शन को आया, पर आपने मिलने से इंकार कर दिया। राजा जय सिंह की रानी गोली बनी बैठी थी। आपने उसे 'मां' कह कर तो पुकारा पर उसे समझाया कि इस कपट में उसे किसी का साथ नहीं देना चाहिये था।

इन दिनों दिल्ली में भयानक बीमारी का प्रकोप था। गुरु जी ने घर-घर जाकर दुखियों की सहायता की, एक चुबच्चे से अमृत-जल लेकर और आपके दर्शन कर रोगी ठीक हो जाते। अंतिम समय देख गुरु साहिब ने अपने बाद सिक्ख संगत की रूहानी अगवाई देने वाले उत्तराधिकारी को अपने समक्ष जानकर माथा टेका और कहा : 'बाबा बकाले'। दिल्ली में बंगला साहिब और बाला साहिब गुरुद्वारे आपकी याद में बने हैं।

सचमुच श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब के दर्शन करने और उनका ध्यान करने से सभी संकट दूर हो जाते हैं। कवि संतोख सिंघ चूड़ामणि के अनुसार:

दरशन ते संकट नसहि पग परसन सुख दाय।
जन हरसन सरसन सदा श्री हरिक्रिशन सुभाय।





कविताएं

गुरु की परीक्षा

(आठवें पातशाह श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब के जीवन-प्रसंग से प्रेरित)

*-स. कुलदीप सिंघ**

*गुरदेव की उम्र थी केवल पांच साल।
जब एक पंडित-विद्वान,
पूछने आया उनका हाल।
उनके चेहरे पर उसे दिखा,
जलाल और रूहानी नूर।
पर उसको था अपनी विद्वता
और ज्ञान पर गुरूर।
"गुरदेव! मैंने बड़ा सुना है आपका नाम।
लोग कहते हैं इस उम्र में भी,
आपको वेदो-शास्त्रों का है बड़ा ज्ञान।
पर, मेरे मन में एक शंका है।
उसे दूर कर दें तो बड़ा अच्छा है।"
गुरदेव ने जब उसके मन में देखा,
ज्ञान के साथ इतना अहंकार!
सम्मान से बोले, "आप ने अपने दर्शन देकर
मुझ पर किया है बड़ा उपकार।
आप यहां आसन जमाएं,
और कृप्या अपनी शंका बताएं।"
पंडित जी बोले, "महाराज!
द्वापर में हुए थे भगवान कृष्ण,
जिन्होंने किया था गीता का उच्चारण।
आपका नाम भी है उनसे मिलता-जुलता।
आप गीता के किसी श्लोक का,
अर्थ ही करके दूर कर दें मेरी शंका।"
गुरदेव बोले—"मुनिवर!
आप स्वयं को समझते हैं महान विद्वान।
पर, परीक्षा का जो उपाय आपने सुझाया,
उससे न हो पाएगा आपकी शंका का समाधान।
अपितु, नई शंकाओं को जन्म देगा श्रीमान।
क्योंकि, यह उपाय तो है बड़ा बेजान।
इससे तो बेहतर है, आप ढूंढो
अपने मन का कोई इंसान।
उससे, आप दो बात कर लें।
फिर आकर हमसे वार्तालाप कर लें।"
गुरदेव जी ने मुखारबिंद से जो बात अलाई।
पंडित जी के सुनने-मानने में आई।
वे उठे वहां से और बाहर निकले।
रास्ते में कई लोगों से मिले।
गांव के बाहर गए वे दूर।
दिखा उन्हें दूर से खेत में काम करता,
पसीने से लथ-लथ एक मजदूर।
दूर से ही उसको आवाज लगाई।
मजदूर को कुछ पड़ा न सुनाई।
पास जाकर कन्धे को हिलाया।
फिर भी वो कुछ बोल न पाया।
दरअसल था वो गूंगा और बहरा।
उसे देख उनका खिल गया चेहरा।
"न ये सुन सकता, न बोल सकता,
इससे अनुकू और कौन हो सकता?"
उसको अपने साथ ले आए।
और अपनी बुद्धि पर बड़े इतराए।
जहां उनके मन में था, फरेब-अहंकार।
वहीं गुरदेव के मन में था,
प्रेम, उपकार और उद्धार।
छज्जू झीवर ने आकर माथा टेका।
गुरु जी ने आशीर्वाद की नज़र से उसे देका।
उसके माथे पर अपनी छड़ी छुआई।
छज्जू की आंखों में चमक पड़ी दिखाई।
तन्मय होकर बैठा और किया इशारा।
प्रश्नवाचक दृष्टि से मुनिवर को निहारा।*

*डेज़ मेडिकल रोड, १०७-बी, सिंगार नगर, लखनऊ-२२६००५, मो : ९९३५५-६३२३३

मुनि ने गीता का एक श्लोक उच्चारा।
तभी हुआ एक चमत्कार।
बोल उठा छज्जू, जिसको पंडित जी समझते थे गवार।
"पहले श्लोक तो शुद्ध उच्चारो।
फिर अर्थ के लिए मुझे निहारो।"
सुन कर गूंगे के मुख से ये वाक्य,
मुनिवर को हुआ बड़ा पश्चाताप।
छज्जू ने फिर वो ही श्लोक शुद्ध और स्पष्ट दोहराया।
और श्लोक का अर्थ भी समझाया।
मुनि, अपनी भूल पर बड़ा शर्माया।
उसने गुरु-चरणों में शीश निवाया।
अपनी तरफ से तो उसने की थी चतुराई,
पर उसको नहीं था जरा भी ज्ञान।
उसकी शंका का होगा यूं समाधान।
एक, जन्म से गूंगे-बहरे को,
खोई शक्तियां मिल जाएंगी।
मुनिवर की अहं-भावनाएं
गुरु-घर में टिक न पाएंगी।
छज्जू झीवर और मुनिवर,
गुरु-दृष्टि से हुए निहाल।
गुरु की कृपा-दृष्टि सबके,
करती है हल कठिन सवाल।



नारी का घर

माता-पिता की लाडली बेटी हूं
बचपन से अब तक करती आई हेठी हूं
दादा-दादी की प्राणप्रिय पोती हूं
रोज लेती नई चीजी हूं
मामा की भानजी हूं
हरदम स्नेह की वर्षा में भीगी हूं
सखियों की सहेली हूं
उनकी तरह मैं भी एक पहेली हूं
जिस घर, आंगन और अपनों में पली हूं
बचपन से आज तक सुनती आई
पराई हूं . . . पराई हूं . . . पराई हूं।
सास-ससुर की बहू हूं, जैसे कहते, काम करती हूं
देवर जी की भाभी हूं, हुक्म पूरा करने की 'चाबी' हूं
जिस दिन से बनी ताई हूं, किसी को नहीं भायी हूं
किसी की काकी, किसी की चाची हूं
हर-पल आदेशों पे नाची हूं
सच तो यह है कि सबके लिए अब भी
काची हूं . . . काची हूं . . . काची हूं।
बेटे की मां हूं, कहती सिर्फ हां हूं
पति की अर्द्धांगिनी हूं, सात जन्मों की जीवन संगिनी हूं
सब जगह मंगल है, रिश्तों का घना जंगल है
जीवन की अजब पहेली है
न कोई संगी, न कोई सहेली है
सब अरमान परिवार-पूजा में पिस गये
काम करते-करते हाड़ घिस गिये
और सारे रिश्ते . . . रिसते-रिसते रिस गये
बड़े कहते हैं, यह तो पराई है!
पराये घर से आई है . . . पराये घर से आई है।
विकासशील देश की इक्कीसवीं सदी में
मुझे मेरा असली घर तो बता दो
कहां है? कैसा है? किधर है?
अरमानों से लाई बहू कहती है
सास मां! अब आपका युग बीत गया
किस्मत ने अब यह कैसा खेल खेला है!
दिल पर पत्थर रखकर, यह जख्म भी झेला है
बेटा कहता है, यह घर बड़ा ही छोटा है
यहां तो पग धरने का भी टोटा है
कल थोड़ा जल्दी ऑफिस जाऊंगा
मां को वृद्धाश्रम में छोड़ आऊंगा
नारी के जीवन का लेखा निराला
हंसते-हंसते पी गई जहर का प्याला
जिसके लिए हाय! मैंने किया श्रम
उसी ने पहुंचा दिया वृद्धाश्रम!



-डॉ (सुश्री) लीला मोदी, २९१, मोती स्मृति, टिपटा, कोटा (राज.)। मो : ९६३६९२२६०४

जल संरक्षण – पृथ्वीवासियों की तात्कालिक आवश्यकता

*–डॉ. प्रदीप शर्मा 'स्नेही'**

पृथ्वी हमारी मां है। पृथ्वी ने हमें जीवन दिया है, पोषित एवम् पल्लवित किया है तथा आवश्यक जीवनोपयोगी तत्व प्रचुर मात्रा में दिये हैं। दूसरी ओर मानव ने पृथ्वी के प्रति अपने दायित्व का निर्वाह नहीं किया है और पृथ्वी के जीवन-प्रदाता तत्वों का अंधाधुंध दोहन किया है। इनमें जल सबसे मुख्य है। हम सभी ने कभी भी जल संरक्षण की ओर विशेष ध्यान नहीं दिया। यही सोचते रहे कि जल का भंडार असीमित है और इसका मनचाहा उपयोग किया जा सकता है। जल स्रोतों के अंधाधुंध दोहन के चलते जल-संकट की स्थिति पैदा हो रही है।

सम्पूर्ण विश्व इस समय-जल संकट से जूझ रहा है। यूं तो यह एक विश्वव्यापी समस्या है लेकिन हमारे देश में स्थिति अधिक गंभीर है। जल-स्रोत सूख रहे हैं या विलुप्त हो रहे हैं। सदानीरा नदियों में पानी कम होने के साथ-साथ प्रदूषित भी हो रहा है। कई नदियां, झरने सूख चुके हैं। भू-जल स्तर नीचे जा रहा है। आम जन का पानी के साथ खिलवाड़ रुका नहीं है। जीवन के मूल तत्वों के प्रति उपेक्षा-भाव के चलते ही जल-संकट पैदा हुआ है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात यद्यपि कई सरकारी परियोजनायें इस दिशा में बनीं लेकिन बहुत कारगर सिद्ध नहीं हुईं। अति महत्वाकांक्षी 'नदियां-जोड़ो' परियोजना का विचार बस, कागजों में ही सीमित रह गया।

एक अध्ययन से ज्ञात हुआ है कि २०१७ तक देश में वार्षिक प्रति व्यक्ति जल उपलब्धता घट कर १६०० क्यूबिक मीटर व भूजल तथा सतह जल की औसत वार्षिक उपलब्धता ११०० बिलियन क्यूबिक मीटर रह जायेगी। २०२५ तक जल की मांग दुगुनी होने का अनुमान लगाया गया है। कृषि व उद्योगों में तो पानी की खपत बढ़ी ही है, पेय जल की समस्या भी विकराल रूप लेती जा रही है। जल-संसाधनों के अत्यधिक दोहन को रोकने, संरक्षण को बढ़ावा देने व जल-प्रबंधन को अधिक कारगर बनाने के लिए जल-संसाधन विकास मंत्रालय प्रतिवर्ष जागरूकता अभियान व प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन करता है लेकिन वे नाकाफी सिद्ध हो रहे हैं। विभिन्न राज्य सरकारें वर्ष भर में इक्का-दुक्का जल-संरक्षण अभियान ही चलाती हैं। जल-संकट की गंभीरता को शायद अभी तक पूरी तरह समझा ही नहीं गया है। विभिन्न राज्य सरकारों की प्राथमिकता सूची में यह निचले पायदानों पर है। देश की ढाई लाख से अधिक पंचायतें कुछ अपवादों को छोड़कर जल-संरक्षण की दिशा में विशेष भूमिका नहीं निभा रही हैं। देश की २० में से ९ नदियों के तटों अथवा इनसे सींची जाने वाली भूमि की आबादी जल संकट से जूझ रही हैं।

स्टाक होम में विश्व जल सप्ताह के अवसर पर जारी रिपोर्ट में चेताया गया है कि यदि जल-संकट पर शीघ्र ध्यान नहीं दिया गया तो २०५० तक भारत व एशिया के अन्य देशों में खाने तक के लाले पड़ जायेंगे। यह चेतावनी

**एस. ए जैन कॉलेज, अंबाला शहर (हरियाणा)।*

इंटरनेशनल वाटर मैनेजमेंट इंस्टीट्यूट, संयुक्त राष्ट्रसंघ के खाद्य एवम् कृषि संगठन तथा सहयोगी 'शोधकर्त्ताओं' ने 'कंप्यूटर मॉडल वाटर सिस्टम' के आधार पर किये गये अध्ययन के बाद दी है। जहां तक भारत का प्रश्न है देश की ७० प्रतिशत से अधिक आबादी कृषि पर निर्भर है। कृषि आज भी पूरी तरह बरसात पर निर्भर है। नदियों व बांधों से मात्र ३-४ प्रतिशत भूमि ही सिंचित होती है। एक लाख से अधिक गांव स्वच्छ पेय जल से वंचित हैं। पूरे विश्व की बात करें तो प्रतिवर्ष ४५०० से अधिक बच्चे दूषित पेयजल के शिकार बन जाते हैं।

जनसंख्या पर कोई नियंत्रण न होना और बिना सोचे-समझे पानी का इस्तेमाल अथवा दुरुपयोग करना भी जल संकट का मुख्य कारण है। अभी तक भू-जल दोहन से संबंधित कोई कारगर कानून नहीं बना है। कोई भी व्यक्ति या उद्योग जमीन के अंदर से जितना चाहे उतने जल का दोहन कर सकता है। देश में अनुमानत: दो करोड़ से भी अधिक ट्यूबवैल हैं। इनसे होने वाले अंधाधुंध जल दोहन से भूजल का स्तर निरंतर कम हो रहा है। जल-प्रबंधन की ठोस व्यवस्था एवम् कड़े कानून इस समस्या का कुछ हद तक निदान कर सकते हैं। हरियाणा सरकार ने २०११ को जल संरक्षण वर्ष के रूप में मनाने की घोषणा की है। धान की खेती के लिए पहले ही नियम बने हुए हैं। जल की कमी की वजह से साठी धान को पहले ही रोपण हेतु प्रतिबंधित किया जा चुका है। सरकार भूजल विकास नियमन एवम् नियंत्रण विधेयक को अंतिम रूप देने की कोशिश में है। इस कानून से जल का दोहन नियंत्रित हो सकेगा। जीरो टिलेज तथा लेजर लेवलर तकनीकों के प्रयोग से लगभग २० प्रतिशत जल की बचत की जा सकती है। हरियाणा में इस दिशा में कार्य आरंभ हो चुका है। अन्य प्रदेश भी आवश्यकता अनुसार इन तकनीकों को अपना सकते हैं।

सदियों से जनजीवन के लिए जल का मुख्य स्रोत रही जीवनदायिनी व सदानीरा नदियां दम तोड़ रही हैं, कुछ सूख रही हैं और शेष प्रदूषित हो रही हैं। विभिन्न प्रदेशों व केंद्र सरकार द्वारा बनाये गये नियमों के बावजूद, औद्योगिक व अन्य सभी तरह का कचरा नदियों की भेंट चढ़ रहा है। विगत कुछ दशकों में गंगा व यमुना सफाई अभियानों पर करोड़ों रुपये लगा दिये लेकिन नतीजा वही ढाक के तीन पात वाला।

नदियों के किनारे बसे गांवों व शहरों की जनता को जागरूक करने के साथ-साथ शहरों की सीवरेज प्रणाली दुरुस्त करने व सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांटों, औद्योगिक कचरा ट्रीटमेंट प्लांट अधिक संख्या में लगाने और उससे भी अधिक उनके रखरखाव की ओर ध्यान दिये जाने की आवश्यकता है। नदियों को बचाने के लिए जन जागरूकता अभियान चलाये जाने की आवश्यकता है। इन नदियों की दुर्दशा हम लोगों ने की है। इन्हें इनका मूल स्वरूप लौटाने व भविष्य की पीढ़ी के लिए संरक्षित करने का दायित्व भी हमारा ही है। हमें नदी-रक्षक बनना होगा।

नदियों के बाद जल-स्रोतों में तालाबों का महत्वपूर्ण स्थान है। हमारे देश में तालाबों की समृद्ध परंपरा रही है। मनुष्य एवम् जीव-जंतु दोनों ही तालाबों में संगृहीत जल से अपनी प्यास बुझाते रहे हैं। अनेक क्षेत्रों में ये सिंचाई के लिये भी इस्तेमाल होते रहे हैं। जल-संरक्षण के प्रति हमारे पूर्वज कितने सजग थे इसका अनुमान इसी तथ्य से लगाया जा सकता है कि एक-दो

शताब्दी पूर्व तक देश के विभिन्न राज्यों में कुल मिलाकर लाखों की तादाद में तालाब थे। अनेक बड़े तालाब शासकों ने बनवाये व गांवों के आसपास ग्रामीणों ने स्वयं छोटे-छोटे जोहड़ बनवाये। मध्य प्रदेश व राजस्थान में अनेक विशाल व मध्यम आकार के तालाब थे। दक्षिणी भारत भी तालाबों की दृष्टि से पीछे नहीं था। पश्चिमी बंगाल में पोखर बनवाने की परंपरा रही है। राजस्थान में अनेक स्थानों पर जल-संरक्षण के लिए कलात्मक बावड़ियां बनवायी गयी थीं। हरियाणा में भी कैथल व महम की बावड़ियां प्रसिद्ध रही हैं। विगत १००-१५० वर्षों में अनेक तालाब व जोहड़ नाजायज तरीके से पाट दिये गये व कई अनाधिकृत कब्जों के शिकार हुए। लाखों की संख्या में जो तालाब, जोहड़ व पोखर हमारे पूर्वजों की सूझबूझ, कला-कौशल व जल सहेजने की परंपरा के पावन प्रतीक थे, आज बहुत कम संख्या में रह गये हैं। इसका दुष्प्रभाव, जमीन की रिचार्जिंग प्रक्रिया पर भी पड़ा है। न केवल पानी का स्तर गिर गया है बल्कि बारिश आते ही जल-संग्रहण की भूमिका निभाने वाले तालाबों के अभाव में पानी लोगों के घरों में घुसने लगता है। तालाबों व पोखरों की उपादेयता आज भी असंदिग्ध है। वर्तमान जल संकट को इससे जोड़कर देखना होगा और तालाबों, जलाशयों, सरोवरों, जोहड़ों व पोखरों का पुनर्रुद्धार करना होगा। ये हमारी जल-संस्कृति के पावन प्रतीक हैं।

राजस्थान के कुछ क्षेत्रों में छोटे-छोटे बांध बनाकर जल-कुंडों के निर्माण की दिशा में ग्रामीणों को प्रेरित करने वाले मगसैसे अवार्ड विजेता राजेंद्र सिंह का प्रयास रंग लाया है। हरियाणा में भी कम वर्षा वाले भिवानी जिले के लोहारू, सिवानी, कैरू व बाठड़ा में पुराने ऐतिहासिक जल-कुंडों का उद्धार कर उन्हें पुन: जल संग्रहण हेतु जिला प्रशासन द्वारा 'जल संरक्षण अभियान' नामक योजना के तहत तैयार किया जा रहा है। इन कुंडों में वर्षा जल को एकत्रित किया जायेगा। यह एक महत्वाकांक्षी व उपयोगी योजना है।

जल-संकट को देखते हुए अनेक उपाय राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर किये जा रहे हैं। देश में कई राज्यों व शहरों में बड़े संस्थानों व बड़े घरों के लिए 'रेन हार्वेस्टिंग सिस्टम' लगवाना अनिवार्य कर दिया गया है। चंडीगढ़ में ५०० वर्ग गज व इससे अधिक जमीन पर बनाये जाने वाले भवनों में यह सिस्टम लगवाना अनिवार्य कर दिया गया है। वर्षा-जल के सदुपयोग का यह बेहतरीन उपाय है। चेनई व हिमाचल में भी यह तकनीक भवनों के लिए अनिवार्य है। वर्षा के अतिरिक्त जल को संयोजित करने के लिए 'रिचार्जिंग वैल' बनवाना एक अन्य महत्वपूर्ण उपाय है। अनेक संस्थानों ने इनका निर्माण कराया है और इनसे अतिरिक्त जल पुन: पृथ्वी में समा जाता है, जिससे भूजल स्तर भी बढ़ता है। ६० हज़ार से १ लाख रुपये की लागत में यह सिस्टम तैयार हो जाता है।

सरकारी प्रयासों के साथ-साथ आम जन को भी जल-संरक्षण के साथ गंभीरता से जुड़ना होगा। जल-संकट से बचने के लिए जल का न्यायोचित प्रयोग करने की आदत डालनी होगी। वाहनों को धोने, नहाने में बेतहाशा पानी बहाने, टॉयलेट में बार-बार पानी बहाने, बर्तनों को चलते नल में धोने, ब्रश करते समय या शेव करते समय नलों को खुला रखने आदि से गुरेज करना होगा। बगीचों की सिंचाई अगर 'स्प्रिंकलिंग' तकनीक से की जाये तो बहुत पानी बचाया जा सकता है।

इस्तेमाल किये गये पानी की रीसाइक्लिंग कर पुनर्प्रयोग कर पानी की बहुत बचत हो सकती है। अनेकों देशों ने इस तकनीक का प्रयोग आरंभ कर दिया है। रीसाइक्लिंग के बाद पानी का उपयोग बागबानी, खेतों व टॉयलेट में किया जा सकता है। पीने को छोड़ कर सभी कार्य इससे किये जा सकते हैं। १९७२ से अमेरिका में वाटर रिसाइक्लिंग अनिवार्य है। सिंगापुर व अन्य देशों में भी यह तकनीक काम में लायी जा रही है। भारत अभी इस क्षेत्र में थोड़ा पीछे है। चंडीगढ़ में सीवरेज के पानी को रीसाइक्लिंग के बाद पार्कों व गोल्फ के मैदानों को हरा-भरा रखने के लिए प्रयोग में लाया जा रहा है। गुजरात के सूरत शहर में 'पब्लिक प्राईवेट पार्टनरशिप' योजना के अंतर्गत प्रथम वाटर रिसाइक्लिंग संयत्र लगाया जा रहा है। इससे परिशोधित पानी उद्योगों को दिया जायेगा। देश के अन्य क्षेत्रों में भी ऐसे संयंत्र लगाये जाने की आवश्यकता है ताकि अधिक से अधिक जल का परिशोधन कर पुनर्प्रयोग किया जा सके। घर के बगीचों, उद्योगों, टॉयलेट्स, वाहन धोने आदि में ऐसे पानी के उपयोग से पानी की अधिकाधिक बचत की जा सकती है।

रीसाइक्लिंग के अतिरिक्त सीवर के पानी से ऊर्जा भी प्राप्त की जा सकती है। अमेरिका में बिजली की कुल मांग की १.५ प्रतिशत की आपूर्ति सीवर के पानी से बिजली पैदा कर पूरी की जाती है। वहां प्रतिवर्ष १२.५ ट्रिलियन बेकार पानी का प्रयोग कर ऊर्जा बनायी जाती है। बेकार पानी के कार्बनिक अणुओं को ईंधन में परिवर्तित किया जा सकता है। यह एक महत्वपूर्ण शोध है। जल-संरक्षण व पर्यावरण की दृष्टि से यह एक बेहतर विकल्प भी है।

अगर हमें पृथ्वी से लेशमात्र भी प्यार है, भावी पीढ़ियों के भविष्य के प्रति अगर हम जरा भी सचेत हैं तो हमें बिना देर किये जल-संरक्षण के प्रति समर्पित होना पड़ेगा। आओ! सब मिलकर जल बचायें। जल बचेगा तो ही कल बचेगा।



उपहार ऐसा जो जीवन भर याद रहे

यह बात हर एक आम व खास व्यक्ति के मन को कचोटती रहती है कि वो अपने मित्रों, सम्बंधियों को यदि उपहार दे तो क्या दे? किसी के जन्म-दिन आदि या किसी विशेष दिवस पर किसी को कुछ भेंट किया जाए तो ऐसा उपहार हो जिसे स्वीकार करने वाला जिंदगी भर याद रखे। इसके लिए अब ज्यादा सोचने और चिंता की जरूरत नहीं है। जीवन भर का उपहार है 'गुरमति ज्ञान'। उपहार भी ऐसा कि जब हर माह मित्र आदि के घर पर जाकर डाकिया 'गुरमति ज्ञान' की प्रति थमाएगा तो आपका मित्र हर माह आपका शुक्रिया करता नहीं थकेगा। आप अपने मित्र या किसी सम्बंधी को केवल १००/- रुपये में उपहारस्वरूप 'गुरमति ज्ञान' का आजीवन सदस्य बना दीजिए और हासिल कीजिए अपने मित्र की जीवन भर की खुशियां। यह सौदा बेहद सस्ता एवं लाभकारी रहेगा। आज ही मनीआर्डर या बैंकड्राफ्ट के जरिए चंदा भेजकर अपने मित्र या सम्बंधी को 'गुरमति ज्ञान' का आजीवन सदस्य बनाकर उसे इस बहुमूल्य 'उपहार' से निवाजें। *-संपादक।*

लघु निबंध

'चूल्हा-चौका' पिछड़ेपन का पर्याय नहीं

*-श्री प्रशांत अग्रवाल**

वर्तमान में महिलाओं की तरक्की से जुड़ी जितनी भी रिपोर्टें, विश्लेषण, आलेख आदि विभिन्न माध्यमों से दिखते हैं, उन्हें देखकर ऐसा लगता है मानों वे ही महिलायें प्रगतिशील हैं जिन्होंने परिवार नामक संस्था से बाहर कोई उपलब्धि हासिल की हो। परिवार रूपी अत्यंत महत्वपूर्ण एवं सम्पूर्ण समाज की आधारशिला पारिवारिकता का कुशलतापूर्वक निर्वहन-संचालन और संयोजन करने वाली गृहस्थ नारियां इस सारे परिदृश्य में नींव के पत्थर की भांति गुमनाम ही बनी रहती हैं।

प्रगतिशीलता के आधुनिक मापदंडों के पैरोकारों ने जीवन के मूलाधार 'चूल्हा-चौका' शब्द को पिछड़ेपन का पर्याय मान लिया है। 'घर की चारदीवारी' शब्द को 'जेल की चारदीवारी' की तरह इस्तेमाल करने वाले ये कथित प्रगतिशील लोग यदि पारिवारिकता में रचे-बसे संस्कारों का मूल्य समझते तो इसी चारदीवारी को घर रूपी मंदिर की चारदीवारी कहते।

गृहस्थ नारियां वास्तव में वे विभूतियां हैं जो नाम-शोहरत की इच्छाएं पाले बगैर अपने घर-परिवार के दायित्वों को शांतिपूर्वक निभाती रहती हैं। उनके द्वारा संरक्षित-संवर्द्धित संस्कारजनित नैतिक मूल्यों की प्रासंगिकता पारिवारिक विघटन के आधुनिक दौर में और भी अधिक बढ़ गई है।

धर्म-चिंतन

जब कोई भयभीत प्राणी किसी सहारे को ढूंढ रहा होता है तो उसको शरण देना ही 'धर्म' कहलाता है। किसी की दीन अवस्था देखकर जब आंख से करुणा के आंसू निकलते हैं, वहां 'धर्म' होता है। किसी व्यक्ति के आंतरिक या वाह्य घावों पर मरहम लगाना 'धर्म' है। केवल मानव ही नहीं, प्राणीमात्र का शुभचिंतक होना भी धार्मिक होना है। जिसकी उपस्थिति, वचन, कर्म से प्राणियों में सहृदयता, प्रेम, सद्बुद्धि आदि सात्विक भावों का उदय हो वही 'धर्म का वाहक' कहलाने योग्य है। जिसकी दृष्टि बाहरी आवरण को भेदकर अंदर का यथार्थ परख सके वही मर्मबोधक धर्म-दृष्टि है। जिसके लिए पथ की दिशा, पथ के कांटों से अधिक महत्वपूर्ण है, वही धर्म-मार्ग का सच्चा पथिक है। जिसके लिए 'सांसारिक विषय-भोग' 'मानवीय मूल्यों' की तुलना में तुच्छातितुच्छ एवं निस्सार हैं वही धर्मशास्त्रों का वास्तविक ज्ञाता एवं सच्चा धर्मानुरागी है। जीवन में प्राप्त होने वाले सुख-दुख, मान-अपमान, यश-अपयश, धन-निर्धनता के प्रति जिसकी जितनी अधिक समदृष्टि है वह उतने ही अंशों में अपनी आत्मा एवं प्रकारांतर से परमात्मा के निकट है। वास्तव में 'धर्म' नामक तत्व अत्यंत गूढ़ होते हुए भी, अत्यंत सरल तथा अत्यंत दुर्लभ दिखाई देने पर भी सच्चे जिज्ञासु के लिए सर्वसुलभ है। आवश्यकता है तीव्र ललक की।

*४०, बजरिया मोतीलाल, बरेली (उ. प्र.)-२४३००३, मो : ९४११६०७६७२

इतना तो करें

किसी भी समाज की सच्ची सुख-शांति और असली तरक्की बहुत कुछ इस बात पर निर्भर करती है कि उसके निवासी नैतिक मूल्यों, सिद्धांतों और नैतिकता पर चलने वालों का कितना सम्मान करते हैं, क्योंकि समाज हमेशा उसी दिशा में दौड़ता है जहां अंततः उसे सम्मान और उच्च मान्यता मिले। धन की दिशा में होने वाली होड़ का लक्ष्य भी अंततः यह मान-सम्मान ही होता है।

ऐसे में प्रत्येक व्यक्ति को इतना विचार तो अवश्य करना चाहिए कि ज्यादा कुछ न कर पाने पर भी वह कम से कम इतना तो अवश्य करे कि मान-सम्मान देते समय नीति-अनीति पर थोड़ा-बहुत विचार अवश्य करे। उदाहरण के लिए हम उन लोगों का गुणगान करने से यथासंभव परहेज करें जिन्होंने नैतिकता का गला घोंटकर धन-दौलत के अंबार लगाये हैं। इसके बजाय हम उन लोगों के प्रति न केवल आदर-भाव रखें बल्कि प्रकट भी करें जिन्होंने नैतिकता की रक्षा के निमित्त, भौतिकतावादियों की स्वार्थपूर्ण दौड़ का हिस्सा बनने से इंकार कर दिया और वे जीवन में सादगी तथा आचरण में उच्चता का निर्वाह कर रहे हैं।

अगर कोई व्यक्ति केवल उक्त दो बातों पर ही अमल करना शुरू कर देता है तो स्वस्थ समाज के निर्माण में उसकी भूमिका बहुत बड़ी न सही लेकिन उस गिलहरी के सदृश सार्थक तो अवश्य होगी जिसने सेतु-निर्माण के समय बालू के कण शरीर पर लपेटकर राम की सहायता की थी।

कविता

सत्य मार्ग का पथिक

-श्री प्रशांत अग्रवाल*

हां मुझे मालूम है, नाकाम हो सकता हूं मैं।
चल रहा जिस राह पर, सुख-चैन खो सकता हूं मैं।
पर मुझे दिखता नहीं है, और कोई रास्ता।
सत्य का संघर्ष से, पड़ता हमेशा वास्ता।
हूं नहीं पहला पथिक, कांटों भरी इस राह का।
हौंसला बढ़ता है इससे, ज्वर चढ़े उत्साह का।
सत्य से ऊंचा न कोई, रूप यह भगवान का।
सत्य की ही खोज करना, लक्ष्य है इंसान का।
लोग मेरा साथ न दें, गम भला मैं क्यों करूं?
सत्य मेरे साथ है तो, मैं किसी से क्यों डरूं?
न गिरा अपनी नजर में, सर इसी से है तना।
धूल में मिल जाऊं तो क्या, मैं इसी से हूं बना।
पर नहीं खुद को गंवाया, और न बेचा ज़मीर।
कुछ नहीं मैं ले के आया, पर रहा सबसे अमीर।
दौलत, शोहरत, दुनियादारी, दुनिया में रह जाना है,
फिर क्यों इनके चक्कर में, दुर्लभ जन्म गंवाना है?
सत्य खातिर पीड़ा भोगूं, शायद सफल न कहलाऊं।
निश्चित ही प्रभु की ओर यूं, कुछ कदम आगे बढ़ जाऊं।

*४०, बजरिया मोतीलाल, बरेली (उ. प्र.)-२४३००३, मो : ९४११६०७६७२



दशमेश पिता के ५२ दरबारी कवि-४२

राजाश्रय त्याग अध्यात्माश्रय लेने वाले कवि - भाई वृंद

*-डॉ. राजेंद्र सिंघ 'साहिल'**

अनंदपुर साहिब के स्वतंत्र एवं स्वाभिमान सम्पन्न वातावरण ने मुगल दरबारों में आश्रय पाये हुए अनेक कवियों को दरबारी सुख-सुविधा त्याग कर यहां प्रवाहित आध्यात्मिक सरिता में स्नात होने के लिए आकर्षित किया। कवि वृंद ऐसे ही कवियों में से एक थे।

भाई वृंद कवि के पूर्वज बीकानेर के रहने वाले ब्राह्मण थे। किन्हीं कारणों से इनके पिता श्री रूप मेड़ता में आकर बस गये। यहीं सन् १६४३ ई में भाई वृंद का जन्म हुआ। भाई वृंद का पूरा नाम वृंदावन था। भाई वृंद ने काशी में रहकर विभिन्न शास्त्रों एवं काव्य-रचना का अध्ययन किया। शिक्षा पूरी करने के बाद भाई वृंद जोधपुर नरेश महाराज जसवंत सिंह के पास आ गये। यहां इनका परिचय औरंगजेब के वजीर नवाब मुहम्मद खां से हुआ और उन्हीं के प्रयासों से भाई वृंद मुगल दरबार में पहुंच गये। औरंगजेब ने दस रुपये 'रोजीना' देना नियत किया और इन्हें अपने पुत्र मुअज्जम और पौत्र अजीमुस्सम्म का शिक्षक नियुक्त किया। बाद में किशनगढ़ के महाराज राज सिंह भाई वृंद को किशनगढ़ ले आये। भाई वृंद कुछ समय तक अजमेर के सूबेदार मिर्जा कादरी की बेटी के शिक्षक भी रहे।

राज-दरबार का आश्रय प्राप्त कवि भाई वृंद को जब अनंदपुर साहिब की साहित्यिक सरगर्मियों की खबर मिली तो वे सब कुछ छोड़छाड़ कर दशमेश पिता के पास आ गये और लंबे समय तक गुरु जी के सानिध्य में रहे।

'बारहमासा', 'भाव पंचाशिका', 'नयन पचीसी', 'पवन पचीसी', 'शृंगार शिक्षा', 'यमक सतसई' आदि भाई वृंद की प्रमुख रचनायें हैं। इनमें से 'भाव पंचाशिका' की रचना उन्होंने अनंदपुर साहिब में सन् १६८६ ई में की।

गुरमुखी लिपि में 'भाव पंचाशिका' की एक हस्तलिखित प्रति भाषा विभाग, पटियाला की लायब्रेरी में सुरक्षित है। यही नहीं, कवि भाई वृंद ने अपनी सतसई के अंत में गुरु जी और अनंदपुर साहिब का विशेष जिक्र किया है:

पुरि अनंद सतिगुर पुरी, वसत नाथ दिन रात।
जो दरसहि पातक टरहि, वसहि ताहि सुख शात।

इसी प्रकार 'भाव पंचाशिका' में भी आया है:

गुरू गोबिंद सिंघ हजूर कवि
भाई ब्रिंद और कावि रचे बहुत।

कवि वृंद का हिंदी साहित्य में भी बहुत सम्मान है। यहां इनकी सतसई को 'बिहारी-सतसई' के बराबर आदर दिया जाता है। 'बिहारी सतसई' शृंगार-रसी है, परंतु भाई वृंद के यहां नीति के दोहों की भरमार है :

करत करत अभ्यास के, जड़ मति होत सुजान।
रसरी आवन जान ते, सिल पर परत निसान।
कबहूं नाहिन बाज है, एक हाथ से तारि।
दोऊं चाहहिं मिलन को, तऊ मिलाप निरधारि।
दान दीन को दीजिए, मिटहि दरद की पीर।
औखधि ताको दीजिए, जां के रोग सरीर।
सब सौं आगे होय कै, कबहूं न करिहै बात।
सुधरे काज समान फल, बिगरहि गारी खात।

कवि भाई वृंद का देहावसान सन् १७२३ ई में किशनगढ़ में हुआ। कवि भाई वृंद का परिवार आज भी किशनगढ़ में रहता है।

**१/३३८, 'स्वप्नलोक', दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा (लुधियाना), पंजाब-१४११०१, मो: ९४१७२-७६२७१*

ख़बरनामा

सिक्ख जगत प्रो. दविंदरपाल सिंघ की फांसी की सजा माफ करा कर ही दम लेगा – जत्थेदार अवतार सिंघ

श्री अमृतसर। प्रो. दविंदरपाल सिंघ की फांसी की सजा की अपील रद्द होने के बाद श्री अकाल तख़्त साहिब की तरफ से हुए आदेशों का पालन करते हुए सिक्ख पंथ की प्रतिनिधि संस्था शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की ओर से अगले प्रोग्राम की रूप-रेखा बनाई गई है। कानूनी कारवाई हेतु शिरोमणि कमेटी के महासचिव स. सुखदेव सिंघ भौर, कार्यकारिणी सदस्य स. रजिंदर सिंघ महिता तथा स. सरजीत सिंघ गढ़ी, शिरोमणि कमेटी के सदस्यगण स. हरजिंदर सिंघ (धामी) तथा स. जसविंदर सिंघ एडवोकेट पर आधारित पांच सदस्यीय कमेटी गठित कर दी गई है। यह कमेटी सीनियर वकील स. एच. एस. फूलका तथा सुप्रीम कोर्ट के अन्य चोटी के वकीलों के पांच सदस्यीय पैनल के साथ संपर्क रखने हेतु क्रियाशील हो गई है। यह उल्लेखनीय है कि रहम की अपील में देश के राष्ट्रपति का फैसला सरकार की सिफारिश के आधार पर होता है। ८ वर्ष से पैंडिंग पड़ी यह अपील रद्द करके सरकार ने देश के अल्पसंख्यक सिक्खों के साथ एक और अन्याय किया है।

शिरोमणि गु: प्र: कमेटी के अध्यक्ष जत्थेदार अवतार सिंघ ने कहा कि भारत जो स्वयं एक सभ्यक देश कहलाता है, इसको ऐसे मामले में किसी को फांसी देना शोभा नहीं देता जिसमें न्यायधीशों की तरफ से फैसला करने के समय परस्पर मतभेद हों और जिस व्यक्ति पर हमले के दोष में केस किया गया हो, वह भी जीवित हो। उन्होंने कहा कि प्रो. दविंदरपाल सिंघ भुल्लर के केस में भुगते १३३ के लगभग गवाहों में से किसी ने भी उसके विरुद्ध गवाही नहीं दी और कुल तीन न्यायधीशों में से एक न्यायधीश एम. बी. शाह ने प्रो. भुल्लर को निर्दोष करार दिया था। प्रो. भुल्लर पर पुलिस और अन्य एजेंसियों की ओर से तीसरे दर्जे का अत्याचार करके उनसे कराये गए इकबालिया बयानों के आधार पर ही फांसी की सजा दी गई है जबकि इसके उल्ट १९८४ में हुई सिक्ख नसलकुशी के दोषियों में से किसी एक को भी फांसी नहीं दी गई। यहां तक कि एक मिशनरी ईसाई पादरी को बच्चों सहित जीवित जला देने वालों को भी किसी ने फांसी नहीं दी। गुजरात में हुए अल्पसंख्यक लोगों के सामूहिक कत्लेआम के नामजद किये दोषियों में से किसी को फांसी की सजा नहीं दी। दूसरी ओर पुलिस की ओर से दिन के उजाले में प्रो. भुल्लर के पिता को शहीद कर दिया गया था। उन दोषियों को फांसी क्यों नहीं दी गई? सिर्फ प्रो. भुल्लर को ही फांसी क्यों?

आज जबकि दुनिया के सभ्यक देश तथा कौमें फांसी को जंगल का कानून समझती हैं और सारे संसार में तो फांसी की सजा खत्म करने के बारे में विचारें हो रही हैं। देश की स्वतंत्रता के लिए लड़े गए संघर्ष में सबसे अधिक कुर्बानियां देने और देश की रक्षा-सुरक्षा में सर्वाधिक योगदान डालने वाले सिक्खों के लिए उनके अपने देश में ही दोहरे मापदंड अपनाये जा रहे हैं।

जत्थेदार अवतार सिंघ ने कहा कि १९६३ में आंध्रा प्रदेश की बस पर हमला करके २३ यात्रियों को मारने वाले चलापति राव तथा विजयावर्धन को फांसी की सजा सुनाये जाने के बाद उनकी रहम की अपील तत्कालीन राष्ट्रपति श्री शंकर दयाल शर्मा ने रद्द की थी, परंतु दोषियों के हालात के समक्ष नये राष्ट्रपति श्री आर. के. नारायनण ने उनकी फांसी की सजा रद्द कर दी थी। १९८४ में दिल्ली में हुई सिक्ख नसलकुशी के दौरान एक किशोर नामक कसाई की ओर से छुरे के साथ ३० सिक्ख कत्ल किये जाने के दोष में उसको दी फांसी की सजा भी रद्द कर दी गई थी। २००६ में राजस्थान के खैराज राम की फांसी की सजा इसलिए रद्द कर दी गई थी क्योंकि गृह मंत्रालय की तरफ से तैयार की गाईड लाइनों में से कुछ उसकी सजा की माफी के लिए लागू होती थीं। प्रो. भुल्लर का केस तो वैसे ही मजबूत है क्योंकि फैसले के दौरान न्यायधीशों के बीच इस केस को लेकर मतभेद थे और साथ ही किसी की गवाही भी नहीं थी। उन्होंने कहा कि सिक्ख जगत प्रो. दविंदरपाल सिंघ की फांसी की सजा माफ कराकर ही दम लेगा।

इस अवसर पर शिरोमणि कमेटी के कार्यकारिणी सदस्य स. रजिंदर सिंघ महिता, सदस्य शिरोमणि कमेटी स. जसविंदर सिंघ एडवोकेट, सचिव स. दलमेघ सिंघ, अपर सचिव स. तरलोचन सिंघ तथा स. मनजीत सिंघ आदि मौजूद थे।

कृपाण धारण किये जाने का निर्णय
समस्त भारत के हवाईअड्डों पर लागू किया जाए – जत्थेदार अवतार सिंघ

श्री अमृतसर। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष जत्थेदार अवतार सिंघ ने श्री गुरु रामदास अंतर्राष्ट्रीय एयरपोर्ट, श्री अमृतसर में काम करते अमृतधारी सिंघों को ऐपरन क्षेत्र में ड्यूटी दौरान कृपाण उतारने के लिए किये हुक्म को केंद्रीय सरकार की ओर से वापस लिये जाने पर संतुष्टि का प्रगटावा करते हुए 'देर आये दुरुस्त आये' के अनुसार इस निर्णय को पंथ की जीत करार दिया। जत्थेदार अवतार सिंघ ने एक प्रेस रिलीज में कहा कि यह निर्णय समस्त भारत के हवाईअड्डों पर लागू किया जाए तथा इसको सुनिश्चित बनाया जाए कि देश में किसी हवाईअड्डे पर काम करने वाले अमृतधारी सिंघ को ऐसी कठिनाई का सामना न करना पड़े, चूंकि कृपाण अमृतधारी सिक्ख के व्यक्तित्व का अभिन्न अंग है। यह ज्ञात हो कि जत्थेदार अवतार सिंघ ने कृपाण विरोधी जारी किए गए हुक्म पर तत्काल ही प्रतिक्रिया प्रकट करके भारत के गृहमंत्री श्री पी. चिंदबरम को पत्र लिखा था कि देश की एकता तथा अखंडता को सामने रखते हुए यह तानाशाही हुक्म वापस लिया जाए। यह भी वर्णनीय है कि शिरोमणि गु: प्र: कमेटी के साथ सभी सिक्ख जत्थेबंदियां कंधे से कंधे मिला कर खड़ी रहीं। इस मुद्दे पर जत्थेदार अवतार सिंघ ने इस विषय पर निर्णय को पंथ की जीत बताते हुए समूह सिक्ख जत्थेबंदियों को हार्दिक बधाई दी जिन्होंने प्रस्तावित धरने में शामिल होने के लिए भरपूर प्रतिउत्तर दिया था।

प्रिंटर व पब्लिशर स. दलमेघ सिंघ ने गोल्डन आफसेट प्रेस, गुरुद्वारा रामसर साहिब, श्री अमृतसर से छपवा कर मालिक शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के लिए कार्यालय, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर से प्रकाशित किया। प्रकाशित करने की तिथि : ०१-०७-२०११